हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

माडर्न ऐलोपैथिक ट्रीटमेन्ट	40.00
इन्जेक्शन चिकित्सा	20.00
स्त्री रोग एवं प्रसूति विज्ञान	20.00
मेडीकल व्यायाम (एक सौ से अधिक फोटोग्राफ)	15.00
पुरुषों के रोग और उनकी आधुनिक चिकित्सा	12.00
एलोपैथिक निदान और चिकित्सा	20.00
५५ चमत्कारी जड़ी बूटियां	15.00
मेडीकल सैक्स गाइड (22 वां एडीशन)	10.00
कामशक्ति वर्धक औषधियां	6.00
स्तन सौन्दर्य कैसे बढ़ाएं	6.00
शीघ्रपतन : कारण और उपचार	6.00
नपुंसकता : कारण और उपचार	6.00
यौन दुर्बलता और उसका इलाज	6.00
विवाहित जीवन में सैक्स पावर	10.00
सूर्य चिकित्सा	6.00
हिप्नाटिज्म के चमत्कार	10.00
यौगिक चिकित्सा	10.00
कद लम्बा कैसे करें	10.00
लहसुन महाराजा	6.00
भोजन द्वारा पूर्ण स्वास्थ्य	6.00
सम्पूर्ण योग शिक्षा (अष्टांग याग)	10.00
मैरिज गाइड	10.00
टेलीरेस्पान्स पावर	12.00
अलौकिक शक्तियां	12.00
चमत्कारी मंत्र-तत्र और टोटके	12.00
रत्न विज्ञान	15.00
बिना हथियारों के आत्मरक्षा	12.00
कराते कुंगफू फाइटिंग कोर्स	12.00
स्माल स्केल इन्डस्ट्रीज	25.00

आपके नगर के पुस्तक-विक्रेताओं तथा रेलवे बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं। यदि न मिलें तो 10 रु० एडवांस भेजकर वी० पी० द्वारा हमसे मंगा लें।

वर्ल्ड बुक कम्पनी

४५३१-दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

तंत्र विद्या

पं० लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी०ए०, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

वर्ल्ड बुक कं०
4531-दाई वाड़ा. नई सड़क, दिल्ली-6

© कापीराइट : सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा स्वरक्षित

●

संस्करण : 1986

●

मूल्य : 15·00

●

प्रकाशक :
वर्ल्ड बुक कम्पनी
4531-दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110006

●

मुद्रक :
राजा ऑफसैट प्रिन्टर्स
1/51, ललिता पार्क, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

प्रस्तावना

मेरी पुस्तक 'मन्त्र तन्त्र साधना' का प्रकाशन १९६८ में हुआ था। यह पुस्तक बहुत लोक प्रिय हुई और मुझे इसका द्वितीय संस्करण १९८३ में लगभग ५० पृष्ठ की सामग्री बढ़ाकर निकालना पड़ा। पुस्तक में कुछ अनुभूत मन्त्रों की पूरी विधि विस्तार से वर्णन की गई है। इस बीच मेरे पास बहुत से पत्र आये जिनमें इन मन्त्रों व तन्त्रों से बहुत से लोगों को सफलता मिलने की बात लिखी है। इसकी रोचक शैली व सरल भाषा की तो सभी ने प्रशंसा की है। यह सब मां सरस्वती और गुरुदेव श्रीमत्परमहंस ठाकुर रामकृष्ण परमहंस देव की अपने अकिंचन बालक पर अहेतुकी कृपा का फल है। यही मेरी पहली ग्रन्थ रचना थी। इस बीच ज्योतिष गणित फलित, अंक ज्योतिष, हस्तरेखा, राजयोग, स्वरोदय शास्त्रों पर मैंने छै पुस्तकें और प्रकाशित कर दीं जिनकी उपयोगिता की जनता ने बड़ी प्रशंसा की है।

अब भगवती के परम भक्त श्री कालीचरण गुप्ता जी की सहायता व सहयोग से मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र विद्याओं का ज्ञान देने वाली पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है। इन गुप्त विद्याओं और गूढ़ साधनाओं को गुरुजन बताते ही नहीं परन्तु मेरे गुरु जी की आज्ञा थी कि केवल अधिकारी और संस्कारी व्यक्तियों में इन विद्याओं का मुक्त हस्त से प्रचार किया जाए अतः यह प्रकाशन योजना बनाई गई है। यह सामग्री इतनी अधिक है कि यदि इसको एक ही पुस्तक में छापा जाये तो पुस्तक बहुत बड़ी हो जायेगी और उसी के अनुसार उसका मूल्य भी अधिक रखना पड़ेगा और जन साधारण उससे लाभ उठाने से वंचित रह जायेंगे। अतएव यह निर्णय किया गया है कि यन्त्र, मन्त्र और तन्त्र पर तीन अलग-अलग पुस्तकें प्रकाशित की जाएं। इसी निर्णय के अन्तर्गत पहले हम तन्त्र सम्बन्धी मूल्यवान सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत कर रहे हैं।

वैसे तो मन्त्र-तन्त्र विषय आपस में इतने मिले हुए हैं कि इनको अलग नहीं किया जा सकता; परन्तु जिनमें तन्त्र की प्रधानता है उन्हें ही इस पुस्तक में लिया है। तन्त्र शास्त्र बहुत प्राचीन है और वेदों के समय से चला आ रहा है।

तन्त्र शास्त्र में देवियों की साधना को प्रमुखता दी जाती है। इसका कारण यह है प्राचीन काल के ऋषियों ने सच्चिदानन्द के जिस वर्णनातीत रूप का दर्शन किया वह उन्हें मातृ रूप में दिखाई दिया था। इन ऋषियों का यह दर्शन और अनुभव इतना अधिक सत्यतापूर्ण सिद्ध हुआ कि भारतीय आद्यात्म विद्या में देवियों की अलग ही सृष्टि का जन्म हो गया। देवियों की इस सृष्टि को हमारे आध्यात्मिक जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इन देवियों में से दश महाविद्याओं को विशिष्ट स्थान दिया गया है जिसका कारण यह है कि ये दस देवियां सरलता से सिद्ध हो जाती हैं और साधक का मनोरथ शीघ्र ही पूर्ण हो जाता है। भारत में हजारों ऐसे भक्तजन हैं जिन्होंने इनमें से कोई सी देवी सिद्ध कर रखी है और उसके बल पर ये लोगों के अनेकों प्रकार के उलझे हुए कार्य सिद्ध करके देवी शक्ति के चमत्कार दिखाते रहते हैं। इन चमत्कारों के कारण ही बहुत से लोग इन विद्याओं की साधना करने की विधियां जानने के इच्छुक रहते हैं। अतः पुस्तक के प्रारम्भ में हमने इन्हीं दस महाविद्याओं को सिद्ध करने की विधियां विस्तार के साथ बताई हैं ताकि अधिक से अधिक पाठक इनकी साधना के रहस्य सीख कर अपनी मनोकामनाएं पूरी कर सकें।

इसके बाद तन्त्र ग्रन्थों में वर्णित कुछ वशीकरण, आकर्षण, उच्चाटन, विघटन आदि प्रयोग दिये हैं। तन्त्र शास्त्र में बहुत-सी घृणित वस्तुओं के प्रयोग हैं परन्तु हमने दो-चार ही लिए हैं। आप अपनी ही जिम्मेवारी उत्तरदायित्व पर इनका प्रयोग करें। वैसे लिखा तो यही है कि इन घृणित वस्तुओं के खाने से कोई स्वास्थ्य हानि नहीं होती फिर भी सोच समझ कर ही प्रयोग करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त कुछ सामग्री नवग्रह शान्ति, औषधि तन्त्र, वनस्पति तन्त्र इत्यादि के सम्बन्ध में भी हमने पाठकों के लाभार्थ पुस्तक में दे दी है। कुछ प्रचलित शावर तन्त्र मन्त्र भी हैं। संस्कृत भाषा में पाठ पूजन, स्तोत्र, पुरश्चरण आदि तो संस्कृत के ज्ञाता विद्वान लोग ही कर पाते हैं लेकिन कम पढ़े या अनपढ़ लोगों, ग्रामीणों, आदिवासी जातियों में तन्त्र के नाम पर इन शावर मन्त्रों का ही प्रयोग होता रहा है। यह बहुत जल्दी सिद्ध भी हो जाते हैं। ग्रामीण जनता के तो इन्हीं के द्वारा बहुत से कार्य सिद्ध हो जाते थे। अब तो इन मन्त्रों के गुणीजन भी बहुत कम रह गये हैं। कुछ समय पहले तक भी सांप का विष उतारने वाले

बुरी आत्माओं से पीछा छुड़ाने वाले काफी गुणी परोपकारी जन मिल जाते थे। मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि का प्रयोग अच्छे उद्देश्य से ही करना चाहिए, मारण प्रयोग तो कभी भी नहीं करें। हां ! अपने ऊपर किसीने किया हो तो उससे रक्षा हेतु करने में कोई बुराई नहीं है। यद्यपि यह सब प्रयोग तन्त्र की पुरानी पुस्तकों से लिए हैं। फिर भी आपके आस-पास कोई जानकार गुरू हो तो उसके निर्देशन में ही ये प्रयोग किये जाएं तो अच्छा रहेगा। निष्काम साधना में साधक को कभी हानि की शंका नहीं करनी चाहिए। सकाम उपासना में पूजा विधि विधान से ही हो। भूल होने पर असफलता मिलने की सम्भावना रहती है।

आशा है कि पुस्तक आप को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी और आध्यात्मिक व सांसारिक उन्नति में सहायक होगी।

—लक्ष्मीनारायण शर्मा

विषय-सूची

१. तन्त्र व्याख्या	१
२. षोडशोपचार पूजन-विधि	१५
३. दश महाविद्या सिद्धि	३७
काली साधना	४१
तारा साधना	५०
षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी साधना)	५६
भुवनेश्वरी साधना	६२
त्रिपुर भैरवी साधना	६८
छिन्नमस्ता साधना	७३
धूमावती साधना	७८
बगलामुखी साधना	८३
मातंगी साधना	९१
कमला साधना	९५
४. वशीकरण के तान्त्रिक प्रयोग	१००
५. आकर्षण के तान्त्रिक प्रयोग	१११
६. विद्वेषण के लिए तान्त्रिक प्रयोग	११६
७. स्तंभन सम्बन्धी तान्त्रिक प्रयोग	११९
८. उच्चाटन के लिए तान्त्रिक प्रयोग	१२३
९. मारण के तान्त्रिक प्रयोग	१२५
१० अन्य तान्त्रिक प्रयोग	१२८
११. औषधि तन्त्र	१४१
१२. वृक्षों के तान्त्रिक प्रयोग	१५१
१३. नवग्रह शान्ति के तान्त्रिक उपाय	१६१
१४. आथर्वण तन्त्र	१६८
१५ तन्त्र के कुछ अनुभूत प्रयोग	१७५

१ तन्त्र व्याख्या

तन्त्र शास्त्र वेदों के समय से हमारे सनातन धर्म का अभिन्न अंग रहा है। वैसे तो सभी साधनाओं में मन्त्र, तन्त्र, और यन्त्र एक-दूसरे से इतने मिले हुए हैं कि उनको अलग-अलग नहीं किया जा सकता; परन्तु जिन साधनों में तन्त्र की प्रधानता होती है उन्हें हम तन्त्र या तान्त्रिक साधना मान लेते हैं। इस अखिल ब्रह्माण्ड की रचना, पालन-पोषण और संहार जिस परब्रह्म द्वारा होता है उसकी इन सब क्रियाओं को करने की ताकत को हम शक्ति के नाम से सम्बोधित करते हैं। ब्रह्माजी को सृष्टि रचना का उत्तरदायित्व सौंपा गया, विष्णु भगवान को पालन-पोषण के प्रबन्ध कार्य पर नियुक्त किया गया और शिवजी को संहार कार्य का काम दिया गया। हमारी पृथ्वी इस ब्रह्माण्ड में एक छोटे से बिन्दु के बराबर भी नहीं है। हमारे इस ब्रह्माण्ड का केन्द्र बिन्दु सूर्य है जिसके चारों ओर सभी ग्रह, नक्षत्र, उपग्रह, आकाश गंगा के असंख्य तारागण निरन्तर चक्कर लगा रहे हैं। जैसा हमारा यह ब्रह्माण्ड है ऐसे ही अनेकों ब्रह्माण्ड हैं जो एक बहुत बड़े सूर्य (आकाश पुंज) के चारों ओर निरन्तर चक्कर लगा रहे हैं। अब अनुमान लगाइए कि वह कितनी महान् शक्ति होगी जो इस समस्त जगत का प्रबन्ध-कार्य सुचारु रूप से कर रही है। उसने अलग-अलग कार्यों के लिए छोटे-बड़े अधिकारी नियुक्त किये हुए हैं। प्रधान अधिकारी ब्रह्मा, विष्णु, महेश अपनी जिस शक्ति से अपना कर्तव्य पालन करते हैं उनको हम क्रमशः महासरस्वती, महालक्ष्मी और महाकाली कहते हैं। परब्रह्म की

आद्याशक्ति ही जगज्जननी है जिसने अखिल जगत् को जन्म दिया है। शक्ति का इ निकाल दिया जाए तो शिव शव रह जाते हैं।

'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' की उक्ति के अनुसार हमारे शरीर की रचना भी उसी आधार पर हुई है जिस पर कि पूर्ण ब्रह्माण्ड की। हमारे प्राचीन ऋषियों महर्षियों ने योग द्वारा अपने शरीर-स्थित चक्रों पर पहुंचकर इन सब तत्त्वों की जानकारी प्राप्त की और अपने उस ज्ञान को वेदों, उपनिषदों, पुराणों में सांख्य योग दर्शन वेदान्त ग्रन्थों में निगम आगम ग्रन्थों में विस्तार से वर्णन किया है। जिस प्रकार ब्रह्माण्ड में सात लोक ऊपर और सात लोक नीचे हैं वैसे ही शरीर के अन्दर भी हैं। शरीर के अन्दर निरन्तर जठराग्नि प्रज्वलित हो रही है, उसमें अन्न द्वारा (भोजन से) हवन होता है जिससे शक्ति प्राप्त होती है और शरी क्रियाशील बना रहता है। यदि इस अन्न-यज्ञ को बंद कर दिया जाए तो संहार क्रिया आरम्भ हो जायेगी और शरीर क्षीण होकर नाश को प्राप्त हो जायेगा। इसी प्रकार यज्ञ करने से वातावरण शुद्ध होता है, शक्तिवान होता है, वर्षा होती है, अन्न उत्पन्न होता है, प्रजा का पालन होता है। यज्ञ के न होने से शिव रुष्ट होते हैं और रुद्र रूप धारण कर संहार कार्य आरम्भ कर देते हैं। यज्ञ होता रहे तो शिव कल्याण करते रहते हैं। संसार की उत्पत्ति नर और मादा, स्त्री और पुरुष, शिव और शक्ति के मिलन से होती है। अति प्राचीन काल से ही मनुष्य ने अपने विकास-क्रम में इस तत्त्व को बहुत पहले ही जान लिया था और जननेन्द्रियों के प्रतीक शिवलिंग और शक्ति योनि की पूजा आरम्भ कर दी थी जो आज तक होती चली आ रही है। भारत के बाहर भी दूर-दूर तक इसके प्रमाण मिले हैं कि शिवलिंग की पूजा बहुत प्राचीन काल से होती आ रही है।

तान्त्रिक साधना का मूल उद्देश्य आत्मा का परमात्मा से मिलन, आत्मसाक्षात्कार करना है। इसके लिए अन्तर्मुखी होकर योग की

साधनायें की जाती हैं। प्रारम्भ में साधक का लक्ष्य मूलाधार चक्र के समीप सोई हुई कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करना होता है। फिर यह कुण्डलिनी जैसे-जैसे सुषुम्ना मार्ग से ऊपर चढ़ती हुई आगे के चक्रों को पार करती जाती है, योग के साधक को अनेक प्रकार की अलौकिक सिद्धियां प्राप्त होती जाती हैं। अधिकांश साधक मार्ग में मिलने वाली इन सिद्धियों को पाकर कामिनी-कांचन के मोह में पड़कर पथभ्रष्ट हो जाते हैं अथवा आगे बढ़ने के स्थान पर वहीं जमकर रह जाते हैं और परिणाम स्वरूप अधःपतन यानी नीचे की ओर गिरते जाते हैं। जितने भी प्रकार की साधनायें हैं वह सब इस कुण्डलिनी को जाग्रत करने के लिए ही की जाती हैं। यह नाड़ी सर्प की तरह कुण्डली मारे अपना मुख या फन नीचे की ओर किये सोई पड़ी है। इसको जगा कर ऊपर फन करना ही साधक का ध्येय है। इसका फन ऊपर हुआ तो फिर यह जाग्रत समझी जाती है। रीढ़ की हड्डी में तीन नाड़ी हैं। इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना। इड़ा और पिंगला से हमारे दायें और बायें स्वर नासिका से प्राण वायु चलती है। बीच की सुषुम्ना नाड़ी में खाली स्थान है। कुण्डलिनी जाग्रत होकर इस सुषुम्ना मार्ग से ऊपर की ओर चलती है। इसी के लिए जप, तप, ध्यान आदि कर्म किए जाते हैं।

तान्त्रिक साधना को साधारणतया वाममार्ग कहा जाता है। स्त्री-पुरुष का जब संगम होता है उस समय चरमोत्कर्ष की अवस्था में जो आनन्द आता है उसे विषयानन्द कहते हैं। उसे ब्रह्मानन्द से कुछ ही कम समझो; क्योंकि यह क्षणिक है। इसको करने के बाद तृप्ति नहीं होती लालसा बढ़ती है इसलिए इसे अन्य साधनाओं को करने वाले कोई महत्त्व नहीं देते। परन्तु तान्त्रिक उस चरमोत्कर्ष की अवस्था के क्षणों में यदि विशेष प्रकार की क्रिया करें तो कुण्डलिनी को जगाने में सरलता हो जाती है। यह ठीक है कि अधिकांश साधक विषयानन्द में ही लिप्त रह जाते हैं परन्तु यह भी ठीक है कि कुछ साधकों ने इस वाममार्गी

क्रिया द्वारा ही अपने इष्ट को प्राप्त कर लिया। परन्तु अधिकांश साधक मूल उद्देश्य से भटक कर केवल विषयानन्द तक ही सीमित रहते हैं या अधिक-से-अधिक कुछ सिद्धियां पाकर सन्तुष्ट हो जाते हैं। तान्त्रिक साधना में स्त्री का प्रयोग निमित्तमात्र ही होता है और जिन्होंने अपनी वासनाओं पर, कामेच्छा पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है वही इस प्रकार की साधना में सफल हो पाते हैं। इसलिए दक्षिण मार्गी तान्त्रिक साधना ही उत्तम मानी जाती है।

मन को एकाग्र करके समस्त चित्तवृत्तियों का निरोध करना ही योग है। 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः।' तभी ध्यान लगता है। ध्यान की अवधि बढ़कर धारणा बनती है और तभी समाधि तक पहुंचा जाता है। बहुत-सी जड़ी-बूटियां हैं। भांग, गांजा, चरस, सुरा आदि नशीले पदार्थ हैं। संसारी जीव तो इनको नशे के लिए प्रयोग में लाते हैं। परन्तु साधु-महात्मा, औघड़, तान्त्रिक आदि इनको इसलिए प्रयोग में लाते हैं कि इससे ध्यान लगाने में चित्तवृत्ति को एकाग्र करने में मदद मिलती है। खिलाड़ी ड्रग्स का प्रयोग इसलिए करते हैं कि यह उनकी शक्ति को बढ़ा देते हैं। गवैये इनका प्रयोग करके अधिक अच्छा गा सकते हैं। इस कारण बहुत से संगीतकारों को इस प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग करते देखा गया है।

परन्तु देखा यह गया है कि अधिकांश साधक इन व्यसनों में उलझ कर ही रह जाते हैं और अपना मूल उद्देश्य व लक्ष्य मोक्ष, आत्म साक्षात्कार या ध्यान धारणा की बात बिल्कुल भूल जाते हैं। इसलिए उत्तम कोटि के साधकों ने, गुरुओं ने इस प्रकार की वाममार्गी साधना को हेय समझा है। वाममार्गी तान्त्रिक साधना में इनका प्रवेश जिन कारणों से हुआ वह ऊपर दिये हैं परन्तु बिना इन वस्तुओं के प्रयोग किए भी तान्त्रिक साधना होती है, हो सकती है, बहुतों ने की है और सफल हुए हैं। बहुत दिन नहीं हुए अभी कुछ ही वर्ष पहले स्वामी

रामकृष्ण परमहंस जी ने इसे करके दिखा भी दिया था। लज्जा, घृणा, भय, जाति कुल का अभिमान आदि जीव के अष्टपाश हैं। इनसे छुटकारा पाने के लिए गुरुओं ने अनेकों साधन बताए हैं जिनमें श्मशान साधना भी एक है। श्मशान में बहुत-सी प्रेतात्माओं का निवास होता है। जो आत्महत्या करते हैं या जिनकी अकाल मृत्यु हो जाती है, अग्नि में जलकर, पानी में डूब कर, रेल से कट कर, कुचल कर मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार की आत्मायें जिनकी वासनायें इच्छायें अतृप्त रह जाती हैं वे या तो उसी स्थान पर मंडराती रहती हैं जहां उनके साथ दुर्घटना होती है या वहां जहां उनका शरीर जलाया या गाढ़ा जाता है। इसी कारण श्मशान तथा कब्रिस्तान में प्रेतात्माओं का निवास होता है यह निश्चित है।

कुछ लोग जिनका लक्ष्य केवल प्रेतसिद्धि होता है श्मशान में जाकर मांस-मदिरा आदि पदार्थों के द्वारा प्रेतात्माओं को सिद्ध कर लेते हैं। इसमें उनमें भूत और वर्तमान का ज्ञान, दुर्लभ वस्तुएं मंगाना, खुशबू उत्पन्न करना, दूसरों पर से अपने सिद्ध प्रेत की सहायता से कम शक्ति वाले प्रेतों को भगाना-उतारना आदि सिद्धियां मिल जाती हैं। ऐसे लोगों की अन्तिम गति खराब होती है। वे प्रेतात्माएं उन व्यक्तियों को अपनी योनि में मरने के बाद ले जाती हैं। कुछ लोग अपेक्षाकृत उत्तम देवात्माओं की साधना भी श्मशान में करते हैं। श्मशान में साधना करने वाले को साहसी और निडर होना आवश्यक है। जो निडर नहीं हैं वे दुस्साहस न करें। परन्तु भूतप्रेत सिद्धि के लिए श्मशान साधना तो किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं है। हां भैरव सिद्धि या यक्षिणी सिद्धि या नवदुर्गा अथवा दश महाविद्याओं में से किसी देवी-देवता की सिद्धि के लिए काली, तारा, रुद्र देवता की उपासना के लिए श्मशान सबसे उपयुक्त स्थान है।

भूत-प्रेतों का सूक्ष्म शरीर होता है। अन्धकार में यह थोड़ा-बहुत आभास आपको दिखा सकते हैं और भय भी उत्पन्न कर सकते हैं। परन्तु यह निश्चित है कि यदि आप भयभीत न हों तो यह आपको कोई हानि नहीं पहुंचा सकते। आप हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं, हनुमानजी की पूजा करते हैं या भैरवजी के किसी भी रूप की पूजा, जप या अराधना करते हैं या काली, दुर्गा या मां के उपासक हैं तो उनके नाम लेते ही, मंत्र जप करते ही यह आपको डराने की भी हिम्मत नहीं करेंगे। उनको प्रसन्न करने या कुत्ते को टुकड़ा डालने से जैसे वह दुम हिलाने लगता है इसी विचार से उनके लिए कुछ पदार्थ मांस, मदिरा, सिन्दूर, लौंग, इलायची, इत्र, फुलेल, सुगन्धित तेल, शृंगार-प्रसाधन आदि लेकर जाएं तो वे प्रेतात्मायें उनको पाकर प्रसन्न हो जाएंगी और आपको परेशान नहीं करेंगी। आपका ध्येय तो उनको वश में करना या उनसे कोई सेवा लेना नहीं है। आप निश्चिन्त होकर अपना काम कर सकते हैं।

श्मशान में जाने से वैराग्य भाव उत्पन्न होता है। रात के तृतीय प्रहर में जाइये। श्मशान में अपने बैठने लायक कोई स्थान निश्चित कर लीजिये। अपने चारों ओर अपने मन्त्र को पढ़ कर जल छिड़क लीजिये। अपने शरीर पर भी मन्त्र पढ़ा जल छिड़क लीजिये। सिन्दूर में घी मिला कर अपने चारों ओर एक घेरा बना लीजिये और प्रेतों के लिए जो सामान आप लाये हैं उसे अपने से कुछ दूरी पर रख कर अपने आसन पर आकर मंत्र जप आरम्भ कर दीजिये। पहले एकाध दिन तो हो सकता है कोई शैतान आत्मा दूर से ही अपने विकराल रूप, भयंकर शब्द, डरावने हाव-भाव दिखाकर डराने का प्रयत्न करे परन्तु फिर उनसे आपकी दोस्ती या जान-पहचान-सी हो जायेगी और वे आपके काम में विघ्न नहीं डालेंगे।

श्मशान में प्रवेश करने से पहले ही अपना मन्त्र जप शुरू कर दीजिये और अन्त तक करते रहिये। या जब तक आप रक्षा के घेरे में न बैठ जाएं जप बन्द न करें। सारे वस्त्र उतारकर रख दीजिये अपना यज्ञोपवीत भी उतार दीजिये। और अपना साधन, जप, ध्यान आरम्भ कर दीजिये। लज्जा, घृणा, भय, कुल जाति अभिमान आदि अष्ट पाशों से मुक्त हुए बिना साधना सफल नहीं होती।

श्मशान साधना के बारे में सोचने से पहले अपने को अच्छी तरह से तोल लीजिये कि आप में इतना आत्मबल, शक्ति, साहस और विश्वास आ गया है कि आप डरेंगे नहीं। इसके लिए पहले कुछ समय तक इष्ट देवी या देवता के मन्त्र, कवच स्तोत्र, पूजा-पाठ आदि कर्म घर पर या किसी अन्य उपयुक्त स्थान में कर लेने चाहिए। घर के किसी एकान्त भाग में भी रात्रि के तृतीय प्रहर को किया गया जप ध्यान बहुत अधिक फल देता है। पहले जिह्वा से माला के साथ मन्त्र जप करना और बोल कर शुद्ध पाठ करना, षोडशोपचार पूजा आरती करना चाहिए। कुछ समय बाद मन-मन में या गुनगुनाते हुए हर समय जब भी कोई काम न कर रहे हों फुरसत हो तो व्यर्थ की बातों में समय नष्ट न करके मन्त्र, कवच व स्तोत्र को जपते रहना चाहिए। दश महा विद्याओं के कवच स्तोत्र आदि बहुत सरल संस्कृत में हैं और ज्यादा बड़े नहीं हैं। थोड़े ही दिनों बाद आपको कंठस्थ हो जायेंगे नहीं तो मंत्र तो है ही उसका निरन्तर मानसिक जाप किया जा सकता है। मानसिक जाप का फल दस गुना होता है। कहीं पर कहा है कि गिनती नहीं करो तो जप का फल राक्षस ले जाते हैं। यह जिह्वा द्वारा किये गये जप तक ही सीमित है। मानसिक जप के अभ्यास के बाद आपको प्राणायाम यानी प्राणों पर जप करने का अभ्यास १०-१५ मिनट प्रतिदिन के अभ्यास से आरम्भ करना चाहिए। रात के समय जब सारा संसार सोता है तब योगी जागते हैं। 'या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी।' पद्मासन लगाकर

बैठें। नियम से सांस लें। कुछ दिन तक उंगली की सहायता से नथुनों को बन्द करना पड़ेगा। सीधे नथुने से धीरे-धीरे श्वास अन्दर भरें, कुछ देर उसे अन्दर रोकें, आसानी से जितनी देर रोका जा सके। उस समय दोनों नथुने (नासिका छिद्र) बन्द कर लें। उसके बाद धीरे-धीरे श्वास को बाहर कर दें। हो सके तो कुछ क्षण यहां भी सांस रोकें और फिर बायें नथुने से श्वास अन्दर लें, रोकें और छोड़ दें। इस प्रकार पूरक कुम्भक, रेचक कुम्भक, पूरक रेचक कुम्भक क्रम से एक लयबद्धता के साथ करें। पहले दिन चाहे १० प्राणायाम से आरम्भ करें और धीरे-धीरे संख्या बढ़ाते जाएं। बाद में उंगलियों का सहारा छूट जायेगा और अपने आप जो भी स्वर चल रहा हो उससे पूरक रेचक कर सकते है।

प्राणायाम यानी सांस के साथ जप करने का कुछ अभ्यास हो जाये तो आप अपनी चित्तवृत्ति को मन को आंखें बन्द करके भौंहों के बीच में नासाग्र पर केन्द्रित करके प्रकाश का ध्यान करें या अपने इष्ट देवी-देवता के स्वरूप का ध्यान करें और वहां पर ध्यान केन्द्रित करके मन्त्र जप करें। तब आपको कानों में घण्टा-ध्वनि सुनाई देने लगेगी। एकान्त-निर्जन स्थान में या रात्रि के शान्त वातावरण में पर्वत पर कन्दरा में तीर्थ स्थल शक्ति पीठ प्राचीन मन्दिरों में ध्यान लगाने से बहुत जल्दी और स्पष्ट अनाहत नाद अनहद ध्वनि सुनाई देती है। इस प्रकार क्रमशः ाधना पथ पर अग्रसर होने से शीघ्र प्रगति होती है। इसमें यम-नियमों ा पालन, सात्त्विक आहार, ब्रह्मचर्य पालन बहुत सहायक होते हैं। इस ार की वैष्णव तान्त्रिक साधना में मांस-मदिरा, स्त्री-प्रसंग किसी भी आवश्यकता नहीं होती।

कण्ठ से जप करने से जो फल मिलता है उससे १० गुना अधिक फल सेक जप से होता है। उससे भी १० गुना अधिक फल प्राणों पर पर जप करने से होता है और उससे भी १० गुना फल आज्ञाचक्र

पर त्रिकुटी पर सुरति चित्त वृत्ति द्वारा जप करने से होता है। त्रिकुटी उस तिराहे के स्थान को कहते है जहां भौंहों के बीच दोनों नेत्रों की दो धारायें नासिका के प्राणों की धारा से मिलती हैं। जब आपका ध्यान त्रिकुटी पर जमने लगे, अनहद ध्वनि सुनाई देने लगे, प्रकाश तत्त्व के दर्शन होने लगें तब आप अपने को इस योग्य समझ सकते हैं कि आप श्मशान में भी साधना करने से भयभीत नहीं होंगे। वैसे साधना पथ में अग्रसर होने के लिए जरूरी नहीं है कि श्मशान साधना की ही जाये परन्तु इससे सिद्धि जल्दी मिलती है। परन्तु कहीं भी किंचित् भी शंका है कि आप भयभीत हो जायेंगे तो कदापि दुस्साहस नहीं करना। हां गुरु के साथ या किसी अनुभवी साधक को साथ बिठा कर साधना करना भी निरापद होता है।

तान्त्रिक साधना दो प्रकार की है—एक वाममार्गी दूसरी दक्षिण मार्गी। वाममार्गी साधना कठिन है क्योंकि काजल की कोठरी में जाकर भी साफ बच कर निकल आना बहुत कठिन होता है। परन्तु यदि पथभ्रष्ट नहीं हुए तो इसमें सिद्धि जल्दी मिलती है। दक्षिण मार्गी साधना में भंग, गांजा जैसी जड़ी-बूटियों की सहायता लेना वाममार्गी नहीं माना जाता।

यों तो तान्त्रिक साधनायें सभी सम्प्रदायों में हैं। बौद्धों में हैं और तिब्बत में अब भी बहुत उच्च कोटि के बौद्ध तान्त्रिक मिल जायेंगे। जैन धर्म में भी तन्त्र है। गणपति के उपासकों में भी तन्त्र विद्या है। परन्तु सभी तन्त्रों में उपासना मां की पूजा से होती है। शक्ति उपासना ही सबसे उत्तम उपासना है। मातृभाव से उस परब्रह्म की शक्ति की उपासना करना निरापद और सर्वश्रेष्ठ है। "कलौ चण्डी विनायकी।" कलियुग में चण्डी देवी माता की और गणेश जी की उपासना से ही कल्याण होता है। पिताजी को प्रसन्न करना अपने को बालक के समान भोला-भाला निरभिमानी सरल बना लो। मां बच्चों को दूध पिलाती

है। मैला तक साफ करती है। खुद गीले में सोती है बच्चे को सूखे में सुलाती है। मां से सब कुछ मांगा जा सकता है। कोई गलती हो जाये तो क्षमा भी जल्दी मिल जाती है। संसार में रहते हुए हम गृहस्थ जनों की सभी तरह की जरूरतें पड़ती रहती हैं। मां से बिना झिझक मांग सकते हैं।

बचपन में आपने अपनी माता के अनेक रूप देखे होंगे। आपको प्यार करते समय का रूप, आपको कभी-कभी मारा-पीटा भी होगा फिर बाद में प्यार भी किया होगा। बच्चे को कोई दूसरा मारे-पीटे, कष्ट दे तो मां उस पर किस प्रकार क्रुद्ध होती है तब मां का चण्डी रूप भी देखा होगा। इसी प्रकार जगन्माता के भी अनेकों रूप हैं, अनेकों नाम हैं। उसके अच्छे बच्चों पर देवताओं पर, जब संकट आया तब शत्रुओं को मारते समय का चण्डी, काली, कालिका आदि रूप और कल्याणस्वरूप दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती का रूप है। समय और अवसर के अनुसार मां ने अनेकों रूप धारण किये हैं।

इस पुस्तक में हमने दश महाविद्याओं की संक्षिप्त पूजा विधि दी है। १ से ९ तक अंक होते हैं और शून्य को साथ लेकर १ से लेकर पूरी गिनती अरबों-खरबों तक की जा सकती है। इस प्रकार ९ अंक और १ शून्य मिलाकर दस संख्या होती है। तो हमारी नव दुर्गायें व दश महाविद्यायें इसी आधार पर हैं।

तामसिक देवता, तामसिक पूजा, तामसिक आचार सभी अधोगति की ओर ले जाने वाले होते हैं। चाहे उनसे थोड़े समय के लिए सिद्धियां आदि भले ही मिल जाएं परन्तु अन्त अच्छा नहीं होता। अतः आगे दिये गये सभी पूजन-अनुष्ठान सात्त्विक रीति से ही करना चाहिए।

तन्त्र शास्त्र सभी श्रेष्ठ साधनों में उत्तम साधन शास्त्र है। उसमें सभी बातें साधक को परम सिद्धि मोक्ष तक प्रदान कराने वाली हैं। फिर भी बगीचे में जिस प्रकार सुन्दर फूलों के पौधों के साथ कुछ झाड़-

झंकाड जहरीले पौधे भी उत्पन्न हो जाते हैं उसी प्रकार तन्त्र शास्त्र में भी कुछ अवांछनीय गन्दी बातों का समावेश हो गया है। यह कुछ विषयी, कामान्ध, मांसाहारी, मद्यलोलुप धर्मगुरुओं के षड्यन्त्र का फल है।

बौद्धधर्म के आरम्भ में हिंसा, बलिदान, नरबलि, पशुबलि, अनाचार बहुत प्रचलित था। गौतम बुद्ध ने इसे दूर करने का प्रयत्न किया परन्तु उनके निर्वाण के बाद फिर बौद्ध धर्म में ही शाखायें फूट गईं और एक मत इनको फिर से प्रचलित करने लगा—काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर का बलिदान करो। परमानन्द की दिव्य सुरा का पान करो। किसी भी महाविद्या का या देवी के स्वरूप की पूजा अनुष्ठान तामसिक रीति से नहीं करना चाहिए और किसी ऐसे अभिप्राय या उद्देश्य को लेकर भी नहीं करना चाहिए जिससे किसी को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट या हानि होती हो।

मां के सौम्य रूप भी हैं और रुद्ररूप भी हैं। रुद्ररूप अपने बच्चों साधकों को भय दायक या डरावने नहीं हैं वह तो भक्तों को हानि नहीं पहुंचाते भक्तों के शत्रुओं के लिए डरावने तथा भयकारक होते हैं।

दुर्गा सप्तशती में महाकाली महा लक्ष्मी महा सरस्वती की पूजा का सम्पूर्ण विधान कवच, अर्गला, कीलक, रात्रिसूक्त, प्रथम चरित्र, मध्यम चरित्र, उत्तम चरित्र तीनों महादेवियों को प्रसन्न करने के लिए दिये गये हैं। अन्त में देवी सूक्त का पाठ है। तीन रहस्य हैं जिनका पाठ बहुधा नहीं किया जाता। गीता प्रेस से प्रकाशित सप्तशती में शुद्ध पाठ दिया हुआ है। उसी को प्रयोग में लाना चाहिए।

आद्या शक्ति जगज्जननी माता की कृपा प्राप्त करने के लिए दुर्गा सप्तशती का पाठ सर्वोत्तम है। इससे देवी की तीनों प्रधान शक्तियों महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। संस्कृत बहुत सरल है और १००-५० पाठ करने के बाद उच्चारण भी शुद्ध हो

जाता है। किसी कामना को लेकर दुर्गा सप्तशती का पाठ करना अच्छा नहीं समझा जाता परन्तु संसार में रहते हुए गृहस्थ जनों को अनेकों विपत्तियों, बाधाओं का सामना करना पड़ता है तो सकाम उपासना करने में भी कोई हानि नहीं है। परन्तु सकाम उपासना विधिपूवक सही ढंग से होनी चाहिए। पाठ का शुद्ध उच्चारण होना चाहिए। नहीं तो देवी रुष्ट भी हो सकती है और कार्य सिद्ध होने के स्थान पर बिगड़ भी सकता है। निष्काम उपासना में अशुद्धियां क्षम्य हैं। सप्तशती में अनेकों श्लोक मंत्र हैं जो कार्य के अनुसार प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

इन महाशक्तियों को प्रसन्न करने की बजाए कुछ छोटी देवियों—नवदुर्गा, दश महाविद्याओं को प्रसन्न करना अपेक्षाकृत सरल होता है। भारत के पूर्वी भाग—बंगाल, असम, उड़ीसा आदि प्रान्तों में मां की उपासना बहुत प्रचलित है और दश महाविद्याओं में भी काली, तारा, बगलामुखी कमला, आदि की साधना अधिक की जाती है। अन्य महा विद्याओं की साधना अवसर के अनुसार अनुष्ठान रूप से की जाती है। काली और तारा देवी की सिद्धि वाममार्गी साधक अधिक करते हैं।

वैसे तान्त्रिक धर्म आदि काल से ही वैदिक धर्म का सहयोगी रहा है क्योंकि दोनों ही हरिहर द्वारा प्रगट हुए हैं। जिस तरह हरिहर में अभेद है वैसे ही वेद और तन्त्र में कोई भेद नहीं है। श्रीमद्भागवत में भगवान ने तीन प्रकार के यज्ञ बताये हैं। वैदिक, तान्त्रिक और वैदिक तान्त्रिक मिश्रित। इसलिए हमारे महर्षि लोग वैदिक और तान्त्रिक दोनों को मिश्रित करके कर्मकाण्ड व उपासना काण्ड की पद्धतियां बना गये हैं। आजकल तन्त्र शब्द से अनभिज्ञ जनता में सर्वत्र एक महान् शंका उत्पन्न हो गई है कि तन्त्र में वाम मार्ग है और वाम मार्ग में भैरवी चक्र तथा पंच मकारों की प्रधानता है। परन्तु हमको वाम शब्द से भयभीत नहीं होना चाहिए।

वाम सूक्ति के पाठ मात्र से विष्णुपद प्राप्ति रूपी मोक्ष मिलता है। निरुक्त में वाम का अर्थ प्रशस्य अथवा प्रज्ञावान बताया गया है। अर्थात् प्रज्ञावान प्रशस्य योगी को वाम कहते हैं और उसके मार्ग को वाम मार्ग।

भगवान शिव तन्त्र मार्ग के प्रवर्त्तक हैं और उन्होंने इस मार्ग को अति कठिन और योगियों तक के लिए अगम्य बताया है। शिवजी कहते हैं, लोलुप वाम मार्गी नरकगामी होता है। परद्रव्य, परदारा, परापवाद से विमुख संयमी पुरुष ही इस वाम मार्ग का अधिकारी है। सर्व सिद्धियों का देने वाला वाम मार्ग इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाले योगी को ही सुलभ होता है। तन्त्रों के अति गूढ़ होने के कारण उनका भाव भी बहुत गुप्त है। तन्त्र में एक भैरवी चक्र ही नहीं श्रीचक्र, आद्या चक्र शिव चक्र, विष्णु चक्र आदि कई प्रकार के चक्रों का वर्णन है। इनका वर्णन उपनिषदों में भी आता है। जब देवताओं ने भगवान से कहा कि महा-चक्रों के नायक का वर्णन हमें सुनाइये तो उन्होंने कहा कि वह महाचक्र नायक सब देवनाओं और ऋषियों द्वारा आराधित सर्वरूप सर्वव्यापक आदि भगवान शिव हैं तथा उनकी उपासना मोक्ष का द्वार है। उस चक्र को जो साधक जानता है वह महान् हो जाता है, वह गुरु होता है। ऋग्वेद में लिखा है कि ऐसे चक्र में जिसमें पांच कोण हैं सम्पूर्ण भुवन ठहरे हुए हैं इस तरह चक्र के प्रमाण वेदों, उपनिषदों में मिलते हैं और पंच मकार का वर्णन भी आध्यात्मिक भाव से आता है।

मद्य, मांस, मीन, मुद्रा और मैथुन यह तन्त्र के पांच मकार हैं। ब्रह्म-रन्ध्र में सहस्रदल कमल से जो रस द्रवित होता है और जिसे कुण्डलिनी सुषुम्ना नाड़ी में ऊपर चढ़कर पान करती है वही असली मद्य है जिसे योगीजन पान करते हैं। ब्रह्मरन्ध्र के सहस्रार कमल रूपी पात्र से जो ब्रह्माण्ड को तृप्त करने वाली विशुद्ध सुधा धारा प्रवाहित हो रही है वही योगीजनों के पीने योग्य मदिरा है। पाप-पुण्य रूपी पशु को ज्ञान

रूपी खड्ग से मार कर जो योगी मन को ब्रह्म में लीन कर लेते हैं वह मांसाहारी हैं।

विवेकी पुरुष काम, क्रोध, लोभ, और मोह रूपी पशुओं को विवेक रूपी तलवार से काटकर दूसरे प्राणियों को सुख देने वाले निर्विषय रूपी मांस का भक्षण करते हैं।

मन आदि सारी इन्द्रियों को वश में करके आत्मा में लगाने वाले को मनिषी कहते हैं। दूसरे तो जीव हिंसक होते हैं।

आशा, तृष्णा, जुगुप्सा, भय, विषय, घृणा, मान, लज्जा, प्रकोप रूपी अष्ट पाशों को ब्रह्मज्ञान रूपी अग्नि में अच्छी तरह पका कर दिव्य भाव का अनुरागी योगी सावधानी से भक्षण करे। पशु हिंसा से विमुख ऐसा महात्मा पुरुष संसार में रुद्र के समान होता है।

परमानन्द को प्राप्त हुई सूक्ष्मरूप वाली सुषुम्ना नाड़ी है। वही आलिंगन करने के योग्य सेवनीया कान्ता है न कि मानव सुन्दरी या वेश्या। सुषुम्ना का सहस्रसार के अन्तर्गत परब्रह्म के साथ संयोग ही संभोग है, मैथुन है स्त्री-सम्भोग नहीं। इस तरह भैरव यामल आदि तन्त्र ग्रन्थों में विस्तार से लिखा है।

पंच मकार का प्रयोग इसी आशय से करना चाहिए। उनके शाब्दिक अर्थ में नहीं।

२ षोडशोपचार पूजन-विधि

सभी देवी-देवताओं की पूजा षोडशोपचार विधि से की जाती है। संस्कृत जानने वाले विद्वान् पंडित लोग तो श्लोकों, मन्त्रों द्वारा करते हैं। परन्तु सर्व साधारण तो संस्कृत नहीं जानता। उनकी सुविधा के लिए हम हिन्दी भाषा में इस विधि को विस्तार से बताये देते हैं। परमात्मा या माता भगवती सब भाषायें समझती है। मन की भाषा जो पूर्ण विश्वास भक्ति श्रद्धा के साथ की जाय वह किसी भी भाषा में हो पूरा प्रभाव रखती हैं। इस उपचार के निम्नलिखित १६ अंग हैं इसलिए इसे सोलह यानी षोडशोपचार पूजा कहा जाता है।

(१) आह्वान

आपके यहां कोई विशिष्ट महापुरुष आता है या कोई विशेष व्यक्ति अतिथि रूप में आता है तो पहले तो आप उसे द्वार पर स्वागत करके अन्दर लिवा लाते हैं। मार्ग में उसके दोनों ओर जल छिड़कते अर्घ्य देते हुए जाते हैं। जगन्माता पराशक्ति या परमब्रह्म सामान्य रूप से सब जगह सदा सर्वदा व्याप्त रहता है, परन्तु भक्त उसे अपनी भक्ति, श्रद्धा, विश्वास व साधना के द्वारा किसी विशेष स्थान पर विशेष रूप से प्रगट होने की प्रार्थना करते हैं। काष्ठ में अग्नि है। सामान्य रूप से सब में है परन्तु उसे प्रगट करने के लिए रगड़ना होता है तभी चन्दन जैसे शीतल काष्ठ से भी अग्नि उत्पन्न हो जाती है।

आप माता भगवती या अपने इष्ट देवी-देवता के चित्र को सम्मुख रख लीजिये। स्वयं आसन पर पूर्व या उत्तर की तरफ मुख करके बैठ

जाइये। उत्तर की ओर मुख करके बैठने से देवी का मुख पूरब को रहेगा और उनसे प्रार्थना कीजिये कि वे आपके पूजास्थल पर चित्र या मूर्ति के रूप से आ जाएं, पधारें। इसे आप आवाहनम् समर्पयामि मन्त्र कह कर भी कर सकते हैं। पूजा के लिए कुछ पात्रों की जरूरत होती है, एक तांबे का छोटा गिलास जिसे पंचपात्र कहते हैं। उसमें एक छोटी चम्मच पड़ी होती है एक छोटी कटोरी भी साथ होती है। दीपक जलाने का भी एक पात्र होता है और पंच मुखी पांचबत्ती वाला भी होता है उसीसे आरती भी उतारी जा सकती है। एक घंटी होती है। इन पांच पात्रों को पंच पात्र कहते हैं। हो सके तो एक मध्यम नाप का शंख भी पूजा में रखें। तो आवाहनम् समर्पयामि कहकर पंचपात्र से जल लेकर छोटे पात्र में डाल दें। इस जल से सम्भव हो सके तो दूर्वादल दूबघास तुलसी के पत्ते, पान का पत्ता, सफेद तिल, बिना टूटे साबुत अक्षत चावल, पुष्प की पंखुड़ियां भी डाल सकते हैं।

(२) आसन

आपकी प्रार्थना मां ने सुन ली है और वे विशेष रूप से आपकी मूर्ति या चित्र में आ गई हैं। आप उनसे आसन ग्रहण करने की, बैठने की, विराजमान होने की प्रार्थना करिये। आसनम् समर्पयामि कहकर पंच पात्र से जल लेकर छोटे पात्र में डाल दीजिये। शिष्टाचार का अंग है कि जब आपका कोई अतिथि या विशिष्ट व्यक्ति आपके घर आता है तो उससे बैठने का आग्रह करते हैं।

(३) अर्घ्य

अब मां आपकी प्रार्थना पर आसन पर विराजमान हो गई हैं तो आप उन्हें अर्घ्य दीजिये। मूर्ति या चित्र के दोनों ओर पंचपात्र से जल लेकर चम्मच से या पान के पत्ते से या शंख में जल भर उससे जल को

दोनों ओर छिड़कें और कहते जाएं "अर्घ्यं समर्पयामि"। भारतीय शिष्टाचार के अनुसार अतिथि का या विशिष्ट व्यक्ति का स्वागत सत्कार उसके अन्दर प्रवेश करने पर दोनों ओर जल छिड़कते हुए किया जाता रहा है।

(४) हस्तपाद प्रक्षालन

इसके बाद जैसे आप अपने अतिथि या मित्र से प्रार्थना करते हैं कि जूते उतार लें हाथ-मुंह धो लें, ताकि यात्रा की थकान मिट जाए उसी प्रकार आप माता भगवती के चरण प्रक्षालन यानी पैर धोइये और मुख आचमन से मुख साफ कराना, कुल्ला करना मुंह धोना आदि करें। इसके लिए आप पंचपात्र से जल छोटे पात्र में डालिये और कल्पना कीजिये कि मां के आप चरण धोते हैं, हाथ धुला रहे हैं और मुख साफ करा रहे हैं संस्कृत में आप यह बोल सकते हैं—"पादयोपाद्यं हस्तयो प्रक्षालनं समर्पयामि।"

क्योंकि आपकी इष्ट देवी जगन्माता है इसलिए मधुपर्क अर्पण कराते हैं, फिर शुद्ध जल से मुख साफ कराते हैं। यह एक तरह से नाश्ता अल्पाहार समझ लो। मधुपर्क में एक भाग घी, २ भाग शहद, १ भाग दही मिलाकर मधुपर्क बनाया जाता है। इसे देवी के सामने रखकर 'मधुपर्क समर्पयामि' कहकर मधुपर्क अर्पण करें और मुखे 'आचमनम्' कह कर मुख साफ करा दें।

(५) स्नान

तदपुरान्त देवी के स्नान की व्यवस्था करें। स्नान से पहले उबटन लगाया जाता है। उबटन में पिसी हल्दी, घिसा हुआ श्वेत या लाल चन्दन, सुगन्धित इत्र की एकाध बूंद या सुगन्धित तेल मिला कर उबटन बनाया जाता है। नहीं हो तो केवल चन्दन ही अर्पण कर दो। यह

'उबटनम् समर्पयामि' कह कर किया जाता है। फिर शुद्ध जल से स्नान करायें इसी प्रकार जो पूरी पूजा करना चाहें वे क्रम से दूध से, पंचामृत से, घी से, शहद से, शर्करा (चीनी) से, चन्दन से स्नान करायें और प्रति स्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान कराते जाएं। दूध के स्नान में थोड़ा दूध पंचपात्र के छोटे पात्र में दुग्धं स्नानम् समर्पयामि कह कर, पंचामृत स्नानं समर्पयामि कह कर पचामृत में डालें फिर जल डालें, घृते स्नानम् समर्पयामि कहकर घी पात्र में डालें फिर जल डालें। मधुस्नानम् समर्पयामि कहकर शहद छोटे पात्र में डालें, फिर जल डालें, फिर शर्करा स्नानं समर्पयामि कहकर शक्कर पात्र में डालें फिर जल डालें। चन्दनं स्नानं समर्पयामि कह कर घिसा चन्दन पात्र में डालें फिर जल डालें। फिर सुगन्धित तेल इत्र आदि से भी वहुत से साधक स्नान कराते हैं। सुगन्धित दृव्यं स्नानम् समर्पयामि कह कर कुछ तेल इत्र मूर्ति या शीशा मढ़े चित्र पर लगायें या सामने रख दें। पंचामृत दूध, दही, घी, शहद, गंगा जल, तुलसीदल मिला कर बनाया जाता है। जो साधक इतना सब न कर सकें वह यथाशक्ति जितने पदार्थ हो सकें या केवल जल से ही स्नानं समर्पयामि कह कर इस उपचार को पूरा कर सकते हैं। जो कर सकते हैं उनके लिए हमने पूरी विधि लिख दी है। संक्षेप में जल से स्नानं समर्पयामि कहकर उपचार पूरा कर दीजिए। नवरात्रियों में या विशेष पर्वों अनुष्ठानों में शतचण्डी सहस्रचण्डी आदि यज्ञों में जब बड़ी पूजा करनी हो तब इस प्रकार का वृहत् आयोजन करना आवश्यक है। परन्तु नित्य पूजा में जब सीमित समय उपलब्ध हो तब केवल स्नानं समर्पयामि कह कर जल से स्नान करा देना ही पर्याप्त है।

(६) गन्ध

मस्तक पर तिलक लगाने की क्रिया इस उपचार के अन्तर्गत आती है। मूर्ति है तो उस पर सफेद घिसा चन्दन या लाल घिसा चन्दन देवी-

देवता के अनुसार लगाया जाता है। तस्वीर पर कांच मढ़ा है तो उस पर भी मस्तक स्थान पर गन्धं समर्पयामि कह कर तिलक लगा दीजिये। माता की पूजा में सिन्दूर लाल कुंकुम रोली हल्दी काजल मेंहदी गुलाल अवीर आदि वस्तुयें अलग-अलग उनका नाम लेकर समर्पित की जा सकती हैं। यथास्थान अपने हाथ से लगाई भी जा सकती हैं यथा कुंकुम समर्पयामि, हरिद्रा, गुलाल काजल (कज्जल) आदि अर्पण करें। जो वस्तु न हों उनके स्थान पर अक्षत छिड़के जा सकते हैं।

(७) अक्षत

मस्तक पर जहां चन्दन लगाया है रोली सिन्दूर कुंकुम आदि लगाया है उसके ऊपर साबुत चावल (अक्षत) लगाये जाते हैं। अक्षतान् समर्पयामि कह कर चावलों में ऐसे दाने जो टूटे न हों साबुत ही पूजा के लिए छांट कर अलग रख लेने चाहिए। बिना टूटे चावलों को अक्षत कहते हैं।

(८) वस्त्र-अलंकार

'वस्त्रं समर्पयामि' कहकर यज्ञोपवीत, धोती साड़ी दुपट्टा चुन्नी सौभाग्य सूत्र, मंगल सूत्र, चन्दन, पिसी हल्दी, अंग वस्त्र, आंगी, गुलाल, कुंकुम, सिन्दूर, काजल, दूर्वा, विल्वपत्र, इत्र, सुगन्धित तेल आदि पदार्थ प्रत्येक पदार्थ के साथ समर्पयामि लगा कर अर्पण कीजिये। नहीं तो कलावा मौली अर्पण कर दीजिये।

'अलंकारं समर्पयामि' कह कर देवी के चरणों में और मूर्ति है तो प्रत्येक मुख्य अंग मस्तक, भुंजा, कलाई आदि पर पुष्प व पुष्प मालायें अर्पित करें सामर्थ्य हो तो स्वर्ण माला रत्न माला अन्य स्वर्ण आभूषण मुकट कुण्डल करधनी हार बाजूबन्द कंगन आदि अर्पण करें। पंच पल्लव आम वड़ पीपल अशोक शमी (छौंकर) पंच रत्नों की माला इत्र आदि

अर्पित करें। देवी के प्रियपुष्प लाल रंग के होते हैं। जो वस्तु न हो उसके स्थान पर अक्षत अर्पण कर सकते हैं।

(९) पुष्प

पुष्पं पुष्प मालां समर्पयामि कह कर देवी के चरणों में पुष्प समर्पित करें। पुष्प पांच प्रकार के हों लाल रंग के हों। देवी को मन्दार (आक) चम्पक, नागकेसर केतकी पारिजात लाल कनेर कमल यह पुष्प प्रिय हैं। पुष्पों की माला गले में पहनायें। मूर्ति है तो भुजाओं में, कलाइयों में तथा अन्य अंगों पर पुष्पों को स्थापित कर पूजा करें। पंच पल्लव आम, पीपल, वट, अशोक, शमी वृक्ष के पत्ते भी हो सके तो अर्पित करें। श्रद्धा व क्षमता हो तो पुष्प माला के साथ-साथ रत्नों की माला स्वर्ण की माला तथा अन्य आभूषण भी अर्पित करें। विल्वपत्र फलों की माला भी अर्पित करें।

पूजा में उपयोग आने वाली जो वस्तुएं उपलब्ध न हों तो उनके स्थान पर अक्षत पत्र पुष्प अर्पित किये जा सकते हैं।

(१०) धूप

सुगन्धित अगरबत्ती, धूपबत्ती जला कर उसका धुआं हाथ से देवी के चित्र या मर्ति की ओर प्रवाहित करते हुए बोलते जाएं 'धूपम् आघ्रापयामि।' देवी की प्रिय धूप इन पदार्थों से बनती है और जो यथार्थ श्रद्धालु साधक होते है वे स्वयं बनाते हैं :

अगर कस्तूरी सफेद चन्दन गूगल शहद कपूर कश्मीरी केसर मुलैठी देवदार का बुरादा, लोवान, अगर तगर कपूर कचरी बालछड़ घी में मिला कर धूप बनाई जाती है सब चीजों को बारीक कूट-पीसकर घी में मिलाते हैं।

(११) दीप

घी का दीपक उसमें सफेद रंग की वाती हो तो जलाकर देवी के दाहिने हाथ की ओर रखें और तेल का दीपक हो तो उसमें लाल रंग की रुई की (रुई को सिन्दूर रोली से मिलाकर लाल वनाकर) लाल वाती से जलाकर देवी के वायें हाथ की तरफ रखें। दीपम् दर्शयामि कह कर उस पर कुछ अक्षत के दाने फेंकें। घण्टी भी वजाएं।

सांसारिक व्यवहार में भी आप विशिष्ट अतिथियों मान्य व्यक्तियों का इसी प्रकार आदर-सत्कार करते हैं। भारतीय शिष्टाचार अभी भी उसी प्रकार चल रहा है शहर में भले ही लुप्त होता जा रहा है। किसी की पूजा करते हैं तो उसको टीका लगाते हैं, अक्षत लगाते हैं, माला पहनाते हैं, इत्र लगाते हैं, भोजन कराते हैं, पान सुपारी दक्षिणा देते हैं। ग्रामीण अंचलों में वारातों में यह स्वागत, सत्कार अब भी देखा जा सकता है।

(१२) नैवेद्य

अब देवी को भोजन कराइये नेवेद्य अर्पण कीजिये मिठाई फल मेवा आदि थाली में सजा कर मां के सामने रखिये। पांच प्रकार की मिठाई पांच प्रकार के फल पांच, प्रकार की मेवा रखिये। नित्य पूजा में तो वताशे से भी काम चल सकता है, श्रद्धा सामर्थ्य अनुसार जो भी हो उत्तम प्रकार का हो षटरस भोजन ३६ व्यजनों से राजसी पूजा होती है। नैवेद्यं समर्पयामि कह कर हाथ जोड़ कर कुछ देर को नेत्र वन्द कर लीजिये।

(आचमन) फिर मानो देवी ने भोजन समाप्त कर लिया है। जल पंचपात्र से छोटे पात्र में डाल कर आचमनम् समर्पयामि कहिये।

(१३) ताम्बूल

भोजनोपरान्त पान सुपारी सौंफ आदि लीजिये। पान के पत्ते पर सुपारी, मुलैठी, सौंफ, लोंग, इलायची आदि रखकर कुछ द्रव्य रखिये

रुपया या सिक्के और 'ताम्बूलं पुंगीफिलं सुदाक्षिणाम् समर्पयामि' कह कर देवी को अर्पित कर दीजिये।

(१४) नीराजन

अब थाली में कपूर रखकर या रुई की बत्ती से पंचमुखी आरती बनाकर देवी की आरती उतारें। कपूर के द्वारा आरती में कपूर की एक टिक्की खत्म हो उससे पहले दूसरी रखते जाएं ताकि आरती बुझे नहीं। आरती अपने बायें से सीधे हाथ की तरफ ले जाते हुए करते हैं। आरती हिन्दी में करो या संस्कृत में कोई अन्तर नहीं आता। जय अम्बे गौरी वाली आरती बहुत प्रचलित है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका में बहुत सुन्दर आरती दी है वह कर सकते हैं।

जय जय जग जननि देवि सुर नर मुनि असुरसेवि
भक्ति भूति दायनि भय हरणि कालिका ॥१॥
मंगल मुद सिद्धि सदन पर्व सर्व रीषिवदन
ताप तिमिर तरुण तरणि किरण मालिका ॥२॥
वर्म चर्म कर कृपान शूल शैल धनुष वाण
धरणि दलनि दानव दल रण करालिका ॥३॥
पूतना पिशाच प्रेत डाकिनी शाकिनी समेत
भूत ग्रह वैताल खल मृगालि जालिका ॥४॥
जय महेश भामिनी अनेक रूप नामिनी
समस्त लोक स्वामिनी हिम शैल वालिका ॥५॥
रघुपति पदपरम प्रेम तुलसी चह अचल नेम
मैय्या पद परम प्रेम बालक चह अचल नेम
देउ ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणत पालिका ॥६॥

(१५) पुष्पांजलि

पुष्पांजलि का मन्त्र काफी बड़ा है। आप केवल भगवती के चरणों में आरती रख कर अञ्जलि में भर कर पुष्प चढ़ा दें। चारों ओर बिखेर दें। जो लोग उपस्थित हों उनके ऊपर पुष्प फेंक कर सामने आरती की थाली घुमा दें ताकि वे उसकी ज्योति को हाथों में भर कर अपने शरीर की रक्षा कर सकें। कोई न हो तो स्वयं ही आरती ले लें।

(१६) प्रदक्षिणा

मूर्ति या चित्र के चारों ओर स्थान खाली हो तो अपनी बांयी ओर से दायीं ओर चलते हुए प्रदक्षिणा करें। स्थान न हो तो अपने ही स्थान पर खड़े-खड़े एक चक्कर लगा लें उसके बाद भगवती माता के सामने साक्षात् दण्डवत् प्रणाम करें और अपने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अभीष्ट प्राप्ति की प्रार्थना करें।

पुष्पांजलि प्रदक्षिणा के बाद भी की जा सकती है। पहले प्रदक्षिणा करके फिर पुष्पांजलि कर सकते हैं। उसके बाद देवी देवता के सामने दण्डवत् प्रणाम करें और अपने तथा सबके कल्याण की प्रार्थना करें।

संक्षेप में षोडशोपचार इस प्रकार है :—

(१) आवाहनं समर्पयामि, (२) आसनं समर्पयामि, (३) अर्घ्यं समर्पयामि, (४) पादयोपाद्यं हस्तयो प्रक्षालनम् समर्पयामि, (५) सर्वांगे स्नानं समर्पयामि, (६) गन्धं समर्पयामि (७) अक्षतान् समर्पयामि, (८) वस्त्रं यज्ञोपवीतं समर्पयामि, (९) पुष्पं पुष्पमालां समर्पयामि, (१०) धूपम् आघ्रापयामि, (११) दीपम् दर्शयामि, (१२) नैवेद्यं समर्पयामि, (१३) ताम्बूलं पुंगी फलं सुदक्षिणां समर्पयामि, (१४) नीराजनम् (आरती), (१५) पुष्पांजलि, (१६) प्रदक्षिणा।

पंचोपचार पूजा में—(१) आवाहन, (२) आचमन, (३) गंध अक्षत, (४) पुष्प धूपदीप, (५) नैवेद्य आचमन ताम्बूलं आदि।

जप विधि

माला से जप करने की विधि यह है कि माला में एक सुमेरु होता है जहां से जप आरम्भ किया जाता है। यह और दानों से बड़ा होता है। माला को सीधे हाथ की मध्यमा के प्रथम पोरवे पर रखें और मन्त्र की एक-एक आवृत्ति के बाद एक-एक दाना सरकाते जाएं। जब एक माला पूरी हो जाये तो सुमेरु (बड़े दाने) के आने पर माला को फेर दें। वैसे माला में १०८ दाने होते हैं। कम दानों की छोटी भी होती है पर आप १०८ दाने वाली माला लें। १०७वां दाना पूरा होने पर १०८वां दाना सुमेरु आयेगा तो आप दूसरी माला के लिये आगे का दाना नं० १ नहीं लेंगे। माला को घुमाकर १०७वें दाने को पहला मनका बना कर दूसरी माला करेंगे। इसी प्रकार हर नई माला आरम्भ करते समय करना होगा।

पुरश्चरण के लिए उपयुक्त स्थान—सिद्ध पीठ, पुण्य क्षेत्र, नदी तट, पर्वत शिखर, तीर्थ संगम, एकान्त उद्यान, विल्व वृक्ष, पीपल, आंवला वृक्ष के नीचे, गौशाला, देवालय, देवी मन्दिर अपने घर का एकान्त स्थान, गुरुद्वारे या गुरु के समीप, श्मशान। यह उत्तम स्थान हैं।

भोजन—हेमन्त ऋतु में उत्पन्न होने वाले अन्न गेहूं, जौ, मक्का आदि मूंग, तिल, मटर, समुद्री नमक, गाय का दूध, दही, घी, हरड़, पीपल, जीरा, सौंठ, इमली, केला, नारियल, नारंगी, सन्तरा, आम, आंवला, गुड़, शक्कर, मिश्री, गन्ने का रस, घी की पकी वस्तु—यह सब हविष्यान्न हैं। क्षार, नमक, मांस, गाजर कांसे के बर्तन में भोजन करना उड़द, अरहर, मसूर, चना, वासी भोजन, घी रहित भोजन निषिद्ध है। मैथुन, रसिक वार्तालाप, केवल ऋतु काल में ही अपनी पत्नी से संसर्ग कर सकते हैं अन्यथा नहीं। शब्द-कुटिलता, बाल बनवाना, उबटन लगवाना, बिना भोग लगाये भोजन करना निषिद्ध व वर्जित है।

भूमि पर शयन करना कुशा या कम्बल की शैय्या, शुद्ध साफ धुले वस्त्र पहनना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, मौन रहना या कम बोलना, मिथ्या भाषण न करना, नित्य स्नान करना, जितना बन सके उचित पात्र को दान करना चाहिए।

न्यास विधि

प्रत्येक पाठ से पहले न्यास किये जाते हैं। आरम्भ में विनियोग बोला जाता है। पूजा के पात्रों में पंचपात्र होता है जो छोटे गिलास जैसा तांबे का पात्र होता है। उसमें एक छोटा चम्मच जैसा पात्र होता है। उसके साथ एक धातु की छोटी कटोरी होती है। विनियोग बोलकर पंचपात्र में से चम्मच से जल लेकर कटोरी में डाल देते हैं। षोडशोपचार पूजन में आवाहनं आचमन पाद्यं अर्घ्य स्नानं आदि के साथ समर्पयामि बोल कर भी इसी प्रकार जल बड़े पात्र से छोटे पात्र में डाला जाता है। कोई सामग्री न हो जैसे पुष्प न हों तो अक्षत छिड़क देते है। वस्त्र न हो तो कलावा मौली के सूत्र अर्पण कर देते हैं। इत्यादि।

न्यास कई प्रकार के होते हैं। परन्तु ऋष्यादिन्यास, हृदयादिन्यास, अंगन्यास, करन्यास, दिङ्गन्यास यह मुख्य न्यास हैं। दश महाविद्या पाठ में ऋष्यादिन्यास, करन्यास व हृदयादिन्यास हैं। उनमें से एक उदाहरण को समझाये देते हैं।

ऋष्यादिन्यास

जब नमः शिरसि बोला जाता है तब सीधे हाथ की पांचों उंगलियों को मस्तक से स्पर्श किया जाता है। नमः मुखे कहकर ओठों के बीच में ग्रास मुद्रा बना कर या वैसे ही उंगलियों से मुख का स्पर्श किया जाता है। इसी प्रकार नमः हृदये कहकर हृदय स्थान का स्पर्श नमः गुह्ये कहकर जननेन्द्रिय वाले स्थान की ओर संकेत करके स्पर्श, नमः पादयो कह कर दोनों घुटनों का या पंजों का, नमः नाभौ कह कर नाभि यानी पेट के बीच में टुंडी स्थल का स्पर्श किया जाता है। नमः सर्वांगे कहकर दोनों हाथों से दोनों भुजाओं व समस्त शरीर का स्पर्श कर लेते हैं।

करन्यास

पद्मासन पर बैठे हुए हाथों को घुटनों पर ही रखते हुए यह न्यास किया जाता है। अंगुष्ठाभ्यां नमः कह कर तर्जनी को मोड़ अंगूठे की जड़ से जहां मंगल का क्षेत्र है वहां लगाते हैं। तर्जनीभ्यां नमः कहकर अंगूठे की नोक से तर्जनी के छोर का स्पर्श करते हैं। मध्यामाभ्यां नमः के साथ अंगूठे से मध्यमा उंगली का अन्तिम पोरवा, अनामिकाभ्यां नमः के बाद अनामिका के साथ और कनिष्ठिकाभ्यां नमः के साथ कनिष्ठिका उंगली के अन्तिम भाग के साथ अंगूठे की नोक का स्पर्श करते हैं। करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः के बाद दोनों हाथों की दोनों हथेलियों को एक-दूसरे के ऊपर नीचे दो एक बार करके एक दूसरे के ऊपर नीचे घुमाते हैं।

हृदयादिन्यास

पद्मासन पर बैठे हुये बायां हाथ घुटनों पर रखे हुए सीधे हाथ से हृदयायनमः के बाद हृदय का स्पर्श सीधे हाथ की पांचों उंगलियों से करना होता है। शिरसे स्वाहा के बाद मस्तक का स्पर्श, शिखायै वषट् के साथ शिखा स्थान का स्पर्श, कवचाय हुं के साथ दोनों हाथों से दोनों भुजाओं का स्पर्श, नेत्रत्रयाय वौषट में सीधे हाथ से तीनों नेत्रों का स्पर्श (तीसरा नेत्र मस्तक के मध्य में होता है) करते हैं। अस्त्राय फट् में बायें हाथ पर सीधा पंजा मार कर फट् ध्वनि यानी ताली बजाई जाती है।

अङ्गन्यास

इसमें शिखायां कहकर शिखा का स्पर्श करें। दक्षिणनेत्रे कह कर दाहिनी आंख का, वाम नेत्रे कहकर बायीं आंख का, दक्षिण कर्णे कहकर दाहिने कान का, वाम कर्णे कह कर बायें कान का, दक्षिण नासापुटे कह कर सीधे नथुने का, वाम नासापुटे कह कर बायें नथुने का, नमःमुखे कह कर मुख का और गुह्ये के साथ गुह्य गुप्त इन्द्रिय का स्पर्श किया जाता है। यह न्यास पद्मासन पर बैठे हुए बायें हाथ को घुटनों पर रख कर दाहिने हाथ से किया जाता है।

दिङ्न्यास

दिङ्न्यास का अर्थ है दिशाओं को नमस्कार। इसमें पूर्व दिशा से आरंभ कर क्रमशः, आग्नेय कोण, दक्षिण, नैऋत्य कोण, पश्चिम, वायव्यकोण, उत्तर तथा ईशान कोण को नमस्कार करते हैं। फिर आकाश और भूमि को नमस्कार किया जाता है।

जिस दिशा को नमस्कार किया जाता है, आसन पर बैठे ही उधर को मुख किया जाता है और हाथ जुड़े हुए रहते हैं। एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर घूमने के लिए आसन से उठते नहीं हैं।

पूर्व के लिए प्राच्यै नमः, आग्नेय के लिए आग्नेयै नमः, दक्षिण के लिए दक्षिणायै नमः, नैऋत्य के लिए नैऋत्यै नमः, पश्चिम के लिए पश्चिमायै नमः, वायव्य के लिए वायव्यै नमः, उत्तर के लिए उदीच्यै नमः, ईशान के लिए ईशान्यै नमः, आकाश के लिए आकाशायै नमः, तथा भूमि के लिए भूम्यै नमः का उच्चारण करते हैं।

विशेष—दिङ्न्यास केवल दुर्गा सप्तशती में प्रयुक्त होता है अन्य पूजाओं में प्रायः नहीं।

विनियोग

प्रत्येक देवी-देवता की साधना में मन्त्र जप, कवच पाठ स्तोत्र न्यास आदि करने से पहले विनियोग पढ़ा जाता है। इसमें देवता का नाम उसका मन्त्र, उसके बनाने वाले ऋषि, उस स्तोत्र के छन्द का नाम, बीजाक्षर, शक्ति कीलक आदि का नाम लेकर अपने अभीष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जप करने का संकल्प लिया जाता है।

ऋष्यादिन्यास

इसके बाद न्यास किये जाते हैं। उपरोक्त विनियोग में जिन देवता ऋषि छन्द बीजाक्षर शक्ति कीलक आदि का नाम होता है उन्हीं को अपने शरीर में प्रतिष्ठित करते हैं मस्तक मुख हृदय गुह्यस्थान पैर नाभि

सर्वाङ्ग में स्थापित करते हैं ताकि शरीर में उनका वास हो जाय। यह ऋष्यदिन्यास कहलाता है।

करन्यास

मन्त्र में विभिन्न बीजाक्षरों और शब्दों को हाथ की पांचों उंगलियों में स्थापित करते हैं। हाथ से माला जपी जाती है इसलिये हाथ में मन्त्र का प्रतिष्ठित करना आवश्यक होता है।

हृदयादिन्यास

उपरोक्त की ही भांति मंत्राक्षरों को शरीर के मुख्य स्थानों में मस्तक हृदय शिखास्थान जहां आत्मा का वास है, नेत्र व समस्त शरीर की रक्षा हेतु, प्रतिष्ठित किया जाता है ताकि समस्त शरीर मन्त्र मय हो जाए। शरीर में देवी देवता का वास आविभाव हो जाय।

ध्यान

इसके वाद ध्यान मन्त्र बोला जाता है। संस्कृत में समझ में न आये तो उसका अर्थ हिन्दी में समझ कर उसी के अनुसार अन्तर में देवी-देवता के स्वरूप का ध्यान करना चाहिए। देवी के स्वरूप में मन को लगा कर चित्तवृत्तियों को सब ओर से हटा कर इष्ट देवी में लगा कर मन्त्र जप करने से शीघ्र सफलता मिलती है।

मन्त्र जप

इसके वाद देवी के स्वरूप का ध्यान करते हुए मूल मन्त्र का माला पर जिह्वा से, कण्ठ से, प्राणों से या सुरति से जाप करना चाहिए। मन्त्र देवी का नाम रूप गुण प्रदर्शित करता है। उसका अर्थ समझते हुए जप करने से शीघ्र सिद्धि होती है।

कवच

जितने माला की जप संख्या का नियम बनाया हो उतने माला जप करने के बाद कवच का पाठ कर लेना चाहिए। कवच का अर्थ है रक्षा करने वाला। कवच के पाठ से साधक की आधिभौतिक, आधिदैविक

आध्यात्मिक बाधायें दूर होती हैं और साधना निर्विघ्न समाप्त होती है।

माला की पूजा :

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणी,
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मां सिद्धिदा भव।
ॐ ऐं ह्रीं अक्ष मालिकायै नमः ॥

संस्कृत नहीं पढ़ सकें तो माला को चौकी पर रखकर उसकी पंचोपचार पूजा कर दें फिर उससे जप आरम्भ करें।

पुस्तक पूजा

इसी प्रकार पुस्तक पर भी अक्षत, पुष्प, नैवेद्य (सूखा), बताशा आदि चढ़ा कर उस पुस्तक की जिससे पाठ पूजन करते हैं पूजा करें, मस्तक से लगाएं और लाल कपड़े में बांध कर रखें।

पुरश्चरण विधि

किसी भी मन्त्र को सिद्ध करने के लिए जो प्रक्रिया की जाती है उसे पुरश्चरण कहते हैं। इसके पांच भाग होते हैं (१) जप (२) हवन (३) तर्पण (४) मार्जन (५) ब्राह्मण भोजन। प्रत्येक मन्त्र के लिए संख्या निर्धारित होती है कि यह इतनी संख्या जप करने के उपरान्त सिद्ध होगा। बड़े मन्त्रों की जिन मन्त्रों में अधिक अक्षर होते उनकी संख्या कम होती है और छोटे मंत्रों की संख्या बहुधा अधिक होती है। शावर मंत्र केवल जप से ही सिद्ध हो जाते हैं अन्य अंग हवन आदि नाम मात्र को करने होते हैं वह भी आवश्यक नहीं कि किये ही जाएं।

पुरश्चरण आरम्भ करने से पहले विधिपूर्वक दीक्षा ली जाती है। गुरु से या देवी देवता से मन्त्र दीक्षा ली जाती है। प्रथम दिन गणेश पूजन नवग्रह क्षेत्रपाल दिग्पाल ६४ योगिनी षोडश मातृका लोक देवता कुल देवता आदि का पूजन करके स्थान शुद्धि, भूमि शुद्धि, देह शुद्धि आदि

कर्म किये जाते है। यह सब पूजनविधियां संस्कृत में होने से सबको सुलभ नहीं हैं। इसलिए हम इन्हें आपको सरल करके बता रहे हैं। बिना परिश्रम या तप किये जो लोग हथेली पर सरसों उगाना चाहते हैं उनको हमारी सलाह है कि धैर्यपूर्वक सब काम विधि से स्वयं मन लगाकर श्रद्धापूर्वक करें तो सफलता अवश्य मिलेगी।

दीक्षा

गुरु से या इष्ट देवी से दीक्षा लें। गुरु आजकल मिलते नहीं, जो जानते हैं वे बताते नहीं और जो नहीं जानते वे उल्टे उस्तरे से चेलों की हजामत करके ठगने की चेष्टा करते हैं। इसलिए मन्त्र को शुद्ध भाषा में भोजपत्र पर या धातुपत्र पर या साफ कागज पर लिख कर इष्टदेव, देवी के समक्ष रख दें और प्रार्थना करें कि मां मुझे दीक्षा दो। फिर उसे उठाकर मां के समक्ष ११ बार पाठ करें। दीक्षा का तात्पर्य शुद्ध उच्चारण सीखना है। सच्चे मन से प्रार्थना करने पर मां स्वयं ही आपके उच्चारण को शुद्ध कर देगी।

पूजा स्थान पर एक काठ की चौकी रख उस लें। पर सफेद साफ धुला वस्त्र बिछा दें। गणेश जी की मूर्ति या चित्र हो तो ठीक है नहीं तो साफ मिट्टी का ढेला या साबुत सुपारी को मौली बांध कर गणेश जी मान कर रख दें। एक स्थान पर कुछ अक्षत चावलों का ढेर बना कर रख दो यह ५० क्षेत्रपाल का प्रतीक होगा। ऐसे ही एक स्थान पर दूसरी ढेरी रख दें यह ६४ योगनियों का प्रतीक होगा। एक अन्य ढेरी १६ षोडशमातृकाओं के लिए १६ खानों में बनाकर रख दें। चावल से ९ खाने का एक चित्र बनाएं उनमें साबुत मूंग के दाने, साबुत उड़द, साबुत मलका मसूर के दाने, चावल के दाने भर दें। सूर्य-मंगल का लाल, चन्द्रमा-शुक्र का सफेद, बुध का हरा, राहू-केतु-शनि का काला रंग है। गुरु बृहस्पति का पीला रंग है। नौ खाने का एक यन्त्र चावलों से बनाओ उसके दो खानों में मलका मसूर, एक में साबुत मूंग, तीन में काले

साबुत उड़द, एक में चने की दाल तथा शेष दो खानों में चावल भरकर नवग्रह यन्त्र पूरा भर दें।

कलश

एक कोरे मिट्टी के साफ घड़े में पानी भरकर उस पर आम, पीपल अशोक आदि के पत्ते और एक साबुत नारियल लाल कपड़े में लपेट कर भूमि पर थोड़ी मिट्टी बिछा कर उस पर मिट्टी के कलश को रख दें। चाहें तो उस मिट्टी में कुछ जौ के दाने मिला दें जो दिन ब दिन उग कर बड़े होते जायेंगे यह वरुण देवता का कलश है।

आपके कुल में किसी देवी-देवता की पूजा होती आ रही है तो वह आपका कुल देवता है। पहले जमाने में ग्राम देवता भी हुआ करते थे। प्रत्येक ग्राम का कोई न कोई ग्राम देवता अवश्य होता था। अब लोग उसे माने या न मानें। आप कोई बड़ा काम ब्याह-शादी करते हैं तो सबको खुश करके चलने की कोशिश करते हैं ताकि वे कोई साथ न भी दें तो कम से कम विघ्न तो न डालें।

संकल्प

पूजा आरम्भ करने के दिन सबसे पहले संकल्प लिया जाता है। जिसका अभिप्राय यह है मैं अमुक नाम का व्यक्ति अमुक गोत्र जाति में उत्पन्न आज इस दिन तारीख समय पर अमुक स्थान पर अमुक कार्य के लिए अमुक अनुष्ठान करने का संकल्प यानी पक्का इरादा करता हूं। संस्कृत में जो संकल्प है उसमें काल गणना सृष्टि के आरम्भ से की गई है। श्री श्वेत वाराह कल्पे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथम चरणे संवत् शाके मास पक्षतिथिवार योग करण का नाम लेकर नवग्रहों की राशियों का वर्णन किया जाता है। आप इसके स्थान पर तारीख, सन् समय कह सकते हैं या मास पक्ष तिथि वार संवत कह सकते हैं। स्थान के विषय में जम्बू द्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तरे इन्द्रप्रस्थ नगरे नारायण विहार अंचले इस प्रकार कहा जाता है। आप अपने मकान का नं०

मोहल्ला शहर का नाम लेकर काम चला सकते हैं हाथ में जल लेकर संकल्प करें और जल को पात्र में छोड़ दें। हिन्दी संकल्प का साधारण उदाहरण इस प्रकार हो सकता है—भारद्वाज गोत्र उत्पन्न पं० किशन लाल का सुपुत्र मैं लक्ष्मी नारायण शर्मा, ई १२८/१ नारायण विहार में आज तारीख १७ मार्च सन् १९८४ तदनुसार फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा संवत् २०४१ को धर्म अर्थ काम मोक्ष प्राप्ति की कामना से अथवा धन प्राप्ति के लिए या जो भी काम हो उसके लिए जगदम्बा के नवार्ण मन्त्र के विधिवत् पुरश्चरण करने का संकल्प करता हूं। या काली मां के मन्त्र सिद्धि पुरश्चरण का संकल्प करता हूं।

उसके बाद सबसे पहले गणेशजी का पूजन करें। गणेशजी का पूजन सभी अनुष्ठानों में सबसे पहले किया जाता है। यह सब पूजन संक्षेप में पंचोपचार विधि से कर देने चाहिए। श्री गणेशाय नमः कहकर जहां आपने गणेशजी को या उनके प्रतीक स्वरूप को रखा है वहां जल छिड़क कर आवाहनम् समर्पयामि, आवाहनान्ते पादयो पाद्यं हस्तयो अर्घ्यं सर्वांगे स्नानं समर्पयामि, स्नानान्ते गन्धं अक्षतं पुष्पं समर्पयामि, पुष्पान्ते धूपं आघ्रापयामि धूपान्ते दीपम् दर्शयामि, दीपान्ते नैवेद्यं ताम्बूलं पुंगीफल सुदक्षिणांम् समर्पयामि। इसे हिन्दी में भी कह सकते हैं। आरती सबकी बाद में इकट्ठी कर देना, स्नान के लिए जल छिड़क कर चन्दन उंगली पर लगा कर छींटे दीजिये और अक्षत पुष्प चढ़ाइये। धूप प्रवाहित करके दीपक दिखाइये। दीपक की ओर अक्षत फेंक कर घण्टी बजाकर फिर थोड़ा नैवेद्य बताशा या मिठाई चढ़ा दीजिये। पान के पत्ते के ऊपर सुपारी, कोई एक सिक्का रख कर चढ़ा दीजिये फिर आचमन करा दीजिये यह पंचोपचार पूजा हो गई।

इसी प्रकार क्रम से वरुण कलश, नवग्रह, ५० क्षेत्र पाल ६४ योगिनी षोडश मातृका, ग्राम देवता, कुल देवता आदि का पूजन कर दीजिये। पूजा का सामान घिसा हुआ चन्दन, पंचपात्र में जल, पान के पत्ते, पुष्प

धूप, दीप, मौली, रोली पास में ही तैयार रखनी चाहिए, कलश में मौली बांध कर ऊपर पल्लव रखकर लाल कपड़े में नारियल बांधकर रखा जाता है। कलश में जल भरते हैं। स्वस्तिक का चिह्न कलश पर बनाते हैं। पूजा स्थान में कौन वस्तु किधर रखी जाती है उसका विवरण इस प्रकार है।

पूर्व दिशा में मुख्य देवता की मूर्ति या चित्र, अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण के बीच) में गणेश जी, दक्षिण दिशा में दीपक, पश्चिम में साधक का आसन, वायव्य कोण में (पश्चिम उत्तर मध्य) ६४ योगिनी, ५० क्षेत्रपाल, उत्तर में चावलों से या आटे से १६ खाने बनाकर उनमें अक्षत रख कर षोडश मातृका, ईशान कोण (उत्तर पूर्व मध्य) में वरुण कलश के बराबर नौ खाने में नवग्रह स्थापित करें। साधक चाहे तो उत्तर को मुख करके दक्षिण दिशा में भी बैठ सकता है।

यह सब विधान केवल प्रथम दिन आरम्भ में ही करना होता है। अगर अलग कमरे का प्रबन्ध हो गया है तो पूजा के बाद उसमें ताला लगा कर बाहर जाएं। किसी ऐसे व्यक्ति को जो पापी, नास्तिक या विधर्मी हो अपने आसन पर न बैठने दें। कमरे में भी अच्छे संस्कार वाले व्यक्तियों को ही आने दें।

जिस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए जितनी संख्या बताई गई है उसका दसवां भाग हवन करना चाहिए। हवन करते समय मन्त्र के अन्त में स्वाहा लगाया जाता है, जैसे ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा। यदि मंत्र जप संख्या एक लाख है तो हवन संख्या १० हजार हुई। ९ व्यक्ति हवन सामग्री की आहुतियां दें और एक घी की तो १००० आहुतियों से संख्या पूरी हो जाती है। आहुति देते समय सबको मंत्र जप करते रहना चाहिए या एक व्यक्ति मंत्र जोर से बोले, अन्य उसके साथ कहते जाएं।

हवन सामग्री

तिल के आधे चावल, चावल के आधा भाग यव (जौ), चावल से तीन गुना गाय का घी और घी के बराबर ही शर्करा यानी पिसा हुआ बूरा या चीनी। श्रद्धानुसार सुगन्धित पदार्थ धूप, अगर-तगर, कपूर, केसर, कस्तूरी, चन्दन, गूगल, कपूरकचरी, बालछड़, गोरोचन मिलाकर आहुतियों के अनुसार सब मिलाकर भार का अनुमान करके हवन सामग्री बनानी चाहिए।

समिधा

हवन में जलाने के लिए जो लकड़ियां प्रयोग में लाई जाएं उनको पानी से धोकर पहले से ही साफ कर लेना चाहिए। लकड़ियों में घुन न लगा हो, कीड़ों की खाई हुई न हो और साफ स्थान पर उगे पेडों से लेनी चाहिए। आम, बड़, पीपल, गूलर, पलाश, चन्दन, शमी (छोंकर) की हो। समिधा बहुत छोटी न हो, बहुत बड़ी भी न हो, ज्यादा मोटी भी न हो, टेढ़ी-मेढ़ी गुलैल जैसी आगे दों दल वाली न हो, दस हजार आहुतियों के लिए २ हाथ लम्बा, २ हाथ चौड़ा, ४८ अंगुल गहरा कुण्ड काफी होता है। कुण्ड या तो लोहे का बना ले आवें या फर्श पर ईंटें रख कर उस पर मिट्टी बिछा कर बना लें।

तर्पण

हवन की संख्या का दसवां भाग तर्पण होता है। इसमें मंत्र के अन्त में तृप्यन्तामि या तर्पयामि लगाया जाता है। जैसे ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे तृप्यन्तामि। एक लाख मन्त्र जप का दस हजार हवन आहुतियां देकर १००० तर्पण करना होता है। किसी तांबे की परात जैसे बर्तन में पानी भर कर उसमें तिल, फूल, चीनी, दक्षिणा डाल कर उकड़ूं पंजों के बल बैठा जाता है। हाथों को पैरों के बीच में करके दोनों हथेलियों को मिला कर अंजलि बना ली जाती है। यज्ञोपवीत को भी गले में माला की तरह करके हाथों में ले लेते हैं और मन्त्र के साथ तर्पण

करते हैं। पूरब या उत्तर की तरफ मुख करके बैठते हैं। गिनती के लिए किसी को साथ बैठाना पड़ता है। पहले कुछ तर्पण गणेशजी, देवी, देवताओं, पितरों को भी कर दिए जाते हैं।

मार्जन

तर्पण का दसवां भाग मार्जन का है। इसमें मंत्र के अन्त में मार्जयामि या अभिसिञ्चयामि नमः लगाया जाता है। यथा ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मार्जयामि या अभिसिञ्चयामि नमः। इसमें किसी कमण्डल में या तांबे के बड़े लोटे या धातु के पात्र में जल लेकर उसमें पान के पत्ते डाल लेते हैं और प्रत्येक मंत्र के साथ पत्तों से अपने चारों ओर जल के छींटे देते जाते हैं। चाहे तो खड़े होकर घर में चतुर्दिश मार्जन किया जा सकता है। अपने शरीर पर भी छींटे देने चाहिए। इस उदाहरण में १००० तर्पण करना है तो १०० मार्जन किए जायेंगे।

ब्राह्मण भोजन

मार्जन का दसवां भाग ब्राह्मण भोजन कराया जाता है। देवी का मन्त्र है तो कन्याओं को भोजन करा सकते हैं। नव कुमारी वटुक व एक ब्राह्मण ले सकते हैं। उनका विधिवत् पंचोपचार से पूजन करें और दक्षिणा दें। कन्या एक वर्ष से कम तथा १० वर्ष से अधिक आयु की न हो। विवाहिता व रजस्वला न होती हो तो १० से कुछ अधिक आयु की भी हो सकती है। कानी, कुरूपा, हीनांगी, विकलांगी कुष्ठ रोगी न हो। अन्धी, लूली, लंगड़ी, शरीर पर अधिक रोम वाली न हो। ब्राह्मण कन्या सर्व कार्यों में सिद्धि दिलाने वाली हैं। राज्य कुल, उच्च क्षत्रिय वंश की कन्या भी जय-विजय दायक है। धन-सम्पदा की इच्छा रखने वाले लक्ष्मी स्वरूप वैश्य कन्या को प्राथमिकता दे सकते हैं।

पंच गव्य—गौमूत्र, गोबर, गौदुग्ध, दही, घी।

पंच पल्लव—आम, पीपल, बड़, अशोक, शमी (छौंकर)।

पंचामृत—गाय का दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल, तुलसीदल।
पंचरत्न—मोती, माणिक, लहसुनिया, गोमेद, मूंगा।

स्तोत्र पाठ के दोष

गाकर पाठ करना, जल्दी-जल्दी पाठ करना, पाठ करते समय शरीर को हिलाते रहना, अशुद्ध पाठ करना, बिना अर्थ समझे पाठ करना, आधा पढ़ना, आधा न पढ़ना, यह छः प्रकार के दोष हैं जो पाठ करते समय नहीं होने चाहिए।

३ | दश महाविद्या सिद्धि

आदि शक्ति जगज्जननी की उपासना अनन्त काल से होती चली आ रही है। देवताओं पर जब भी विपत्ति आती थी असुर उन्हें तंग करते थे तब-तब वे मां की ही शरण में जाते थे और मां असुरों का व दुष्टों का नाश करके उनका कष्ट निवारण करती थीं। ऐसे ही अवसरों पर मां ने जो अनेकों रूप धारण किए वही नवदुर्गा तथा १० महाविद्या कहलाती हैं। संसारी जीव सद्गृहस्थ जन भी अपने कष्टों के निवारण के लिए तथा सुख-समृद्धि, सन्तान, पति-पत्नी अधिकार आदि प्राप्त करने के लिए मां के इन्हीं रूपों की उपासना करते हैं।

पूजा-उपासना से स्वर्ग-अपवर्ग सुख प्राप्त होते हैं। परन्तु वे सब विधियां संस्कृत भाषा में होने के कारण सर्वजन सुलभ नहीं हैं। हमारे सभी ग्रन्थों की भांति तन्त्र शास्त्र के गूढ़ सिद्धान्त, पूजा-पद्धति सभी संस्कृत भाषा में हैं। आवश्यकता इस बात की है कि वे सभी चमत्कारी पूजा-पद्धतियां हिन्दी भाषा में सबको सुलभ की जाएं।

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर दश महाविद्याओं की पूजा प्रक्रिया को जहां तक बन सका है, सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है ताकि आर्त मनुष्य उनको स्वयं कर सके।

तन्त्र शास्त्र में साधन प्रक्रिया तो महत्त्वपूर्ण है ही, सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है मंत्र। मंत्र में जो बीजाक्षर होते हैं उनकी ध्वनियों की आवृत्ति का वैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। इसलिए मंत्रदृष्टा ऋषियों के अनुभूत मन्त्रों को तो हमने ज्यों-का-त्यों संस्कृत में ही रहने दिया है,

परन्तु अन्य सब बातों को सरल हिन्दी में कर दिया है। परमात्मा सब भाषा समझता है, वह मन की भाषा पर ध्यान देता है और इस पर कि कौन कितनी श्रद्धा भक्ति विश्वास से प्रार्थना कर रहा है। उसका उद्देश्य किसी को हानि पहुंचाने का तो नहीं है। अपने परिवार के लिए उचित जीविका की मांग, अत्याचारी के कुकृत्यों से रक्षा आदि उचित लक्ष्य को लिए पूजा कर रहा है। किसीके धर्म से अर्जित धन को कोई बेईमानी से हजम कर गया है, कानून, राज्य अधिकारी कोई सहायक नहीं हो रहे हैं, तो वह अवश्य सहायता देती है।

वैसे परवर्तीकाल में शावर मंत्रों के नाम से हिन्दी में भी शावर मन्त्रों की रचना जनसाधारण के लिए अशिक्षित अर्धशिक्षित निम्न वर्ग के लोगों के लिए हुई और यह मन्त्र भी अपना प्रभाव दिखाते हैं परन्तु यहां हमने पुराने तन्त्रोक्त मन्त्रों को ही लिया है और पूजा विधि हिन्दी में समझाई है।

प्रत्येक पूजा में आरम्भ में विनियोग होता है फिर न्यास होते हैं– ऋष्यादि न्यास, अंगन्यास, करन्यास, दिङ्न्यास आदि। फिर ध्यान मन्त्र होता है उसके बाद मूल मन्त्र। उसके पश्चात् कवच, स्तोत्र आदि होते हैं। यन्त्र निर्माण, प्रतिष्ठा, पूजा आदि होती है। यह नित्य कर्म में होता है।

मन्त्र को सिद्ध करने के लिए पुरश्चरण किया जाता है। ताकि मन्त्र में वह शक्ति उत्पन्न हो जाए जिसके लिए वह मन्त्र बनाया गया है। सिद्ध होने पर मन्त्र से इष्ट देव देवी के दर्शन होते हैं और उसका प्रयोग फल देने लगता है। पुरश्चरण के पांच अंग हैं—जप, हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन। किसी विशेष कार्य को लेकर अपने लिए या किसी के लिए संकल्प लेकर जो पूजा आदि की जाती है उसे अनुष्ठान कहते हैं।

सृष्टि, स्थिति, प्रलय यह संसार का क्रम है। परमब्रह्म परमात्मा से समस्त ब्रह्माण्ड का उद्भव होता है। ब्रह्मा जी सृष्टि की रचना करते हैं। जिस महाशक्ति की सहायता से वह इस कार्य को करते हैं उन्हें महासरस्वती देवी कहा गया है।

इस सृष्टि के पालन-पोषण का महान् कार्य विष्णु भगवान को सौंपा गया, जिसे वे अपनी शक्ति महालक्ष्मी जी की सहायता से पूरा करते हैं। संसार में रहते हुए सभी को लक्ष्मी की कृपा चाहिए। बिना लक्ष्मी के किसी का काम नहीं चलता। जिसके पास लक्ष्मी नहीं है उसे कोई नहीं पूछता। पुराणों के आख्यानों के अनुसार भी तीनों महादेवियों में महालक्ष्मी को ही सबसे बड़ी शक्ति माना गया है।

जो पैदा होता है, वह मरता है, जिसका जन्म हुआ है उसका नाश भी अवश्यम्भावी है। इस समस्त ब्रह्माण्ड का भी एक समय नाश होता है उसे महाप्रलय कहते हैं। उसके किसी एक भाग का नाश होता है अर्थात् उसी में लय होता है उसे खण्ड प्रलय कहते हैं और प्रतिक्षण जो चराचर जगत नाश की ओर अग्रसर होता जा रहा है उसे नित्य प्रलय कहते हैं। हम समस्त जीव जो नित्य मृत्यु की ओर बढ़ रहे हैं, नाश को प्राप्त हो रहे हैं उसे नित्यप्रलय कहते हैं। इस प्रलय के कार्य का भार भगवान शिव को सौंपा गया है और इस महान् कार्य का वे अपनी शक्ति महाकाली की सहायता से सम्पादन कर रहे हैं।

तन्त्र शास्त्र में शिव शक्ति को सर्वशक्ति सम्पन्न राजा समझ लीजिए। उनकी शक्तियों ने विभिन्न अवसरों पर विभिन्न रूप धारण किए हैं। उनको जो-जो कार्य सौंपे गए हैं उनके रूप, गुण, प्रकृति के अनुसार उनके नाम रखे गए हैं। उनके मुख्य दस अवतारों को, दस मुख्य अवतार स्वरूपों को दश महाविद्या कहते हैं।

हम जो भोजन करते हैं उसका प्राणों द्वारा शरीर की जठराग्नि में हवन यज्ञ होता है उससे शिव शान्त होते हैं शरीर को शक्ति प्राप्त होती

है और शरीर अपना कार्य सुचारु रूप से करता रहता है। इसी प्रकार वातावरण यदि यज्ञाहुतियों द्वारा शुद्ध रहे तो समय पर वर्षा होती है, प्रजा सुखी रहती है नहीं तो शिव रौद्र रूप धारण करके विनाश लीला प्रारम्भ कर देते हैं। अतएव शिव तथा उनकी शक्तियों की पूजा करके उनको प्रसन्न करना अपने हित के लिए, अपने कल्याण के लिए बहुत आवश्यक है। शिव अक्षर में जो शक्ति का इकार लगा है उसे हटा दिया जाए तो शव बन जाता है। तात्पर्य यह है कि शक्तिरहित शिव भी शव यानी शक्तिहीन हैं, कुछ नहीं कर पाते। शक्ति ही सर्वोपरि है। शिव को प्रसन्न रखने, उन्हें शक्तिमान रखने के लिए हमें शक्ति की ही आराधना करनी चाहिए।

दसों महाविद्याओं का परिचय, नाम, रूप, गुण, स्वरूप उनके प्रकरण में विस्तार से दिया गया है।

१. काली साधना

परात्पर नाम से प्रसिद्ध विश्वातीत महाकाल पुरुष की शक्ति का नाम महाकाली है। शक्ति शक्तिमान से अभिन्न है। जब कुछ भी नहीं था तब केवल अन्धकार था। वह अप्रज्ञात तत्त्व ही महाकाल है। आगम शास्त्रों में महाकाली को प्रथमा आद्या आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। सृष्टि से पहले इसी महाविद्या का साम्राज्य था। रात्रि अन्धकार का, प्रलय काल का स्वरूप है।

निदान (पहचान) शास्त्र से स्वरूप का ज्ञान होता है। काला रंग शोक का सूचक है। शोक प्रगट करने के लिए काले वस्त्र पहनकर जाते हैं या काली पट्टी बांधते हैं। लाल रंग खतरे का सूचक है। श्वेतवर्ण कीर्ति का, यश का, मैत्री का सूचक है। पृथ्वी का सूचक कमल है। मोह-शक्ति की सूचक सुरा है। लक्ष्मी का निदान हाथी है। विजय का निदान ध्वजा है। संहार शक्ति का कटा मस्तक, प्रकाश का रंग सफेद है और अन्धकार का काला है। हरा रंग पानी का द्योतक है। शान्ति का भी द्योतक है। देवी के स्वरूपों को भी इसी प्रकार निदान द्वारा पहचानना चाहिए।

महाकाली का प्रलय रात्रि के मध्यकाल से सम्बन्ध है। शिव उस समय शव रूप में पड़े हैं, महाकाली उन पर खड़ी है। प्रलय रात्रि रूपी संहारकारिणी शक्ति को इसी स्वरूप में बतलाने के लिए भयानक आकृति का निदान माना गया। शत्रुपक्ष की सेना का संहार करके योद्धा अट्टहास करता है। मां भी अट्टहास कर रही है। नाश करने का चिह्न खड्ग है। परन्तु साधकों को अभय पद देने वाली उनकी अभय मुद्रा है। विश्व नाश के बाद वह अपने ही स्वरूप में निर्वस्त्र है। दिशाएं ही वस्त्र हैं। सारा विश्व जब श्मशान बन जाता है तब इस महाशक्ति का विकास होता है।

वही महामाया आद्या शक्ति संतप्त संसार की रक्षा का कार्य करती है तब वही काली, तारा आदि दस रूप धारण करती है। इन्हीं दस रूपों से मां के असंख्य रूप प्रगट हुए हैं।

वह धधकती हुई अग्नि की प्रखर ज्वाला में रहती है। शरीर का गठन दृढ़ हृष्ट-पुष्ट है। शव की गर्दन पर बायां पैर और टांगों पर दाहिना पैर रखा है। सुस्थिर व मौन रूप में भक्तों के कष्ट, विपदा, चिन्ता का निवारण करती है। भक्तों के तीनों प्रकार के तापों को ज्वाला में जला देती है।

पुराण और तन्त्र ग्रन्थों में काली के आठ प्रकार के स्वरूपों का वर्णन है—दक्षिण काली, भद्रकाली, गुह्य काली, महाकाली आदि। इनमें दक्षिण काली और भद्रकाली की पूजा अधिक प्रचलित है। शुम्भ नामक दैत्य का वध करने के लिए देवताओं की प्रार्थना पर महामाया आद्याशक्ति के शरीर कोष से कृष्ण वर्ण कालिका या काली का अविर्भाव हुआ था। जो काल के ऊपर प्रतिष्ठित है वही काली है। काली का वर्ण काला क्यों है ? काले रंग में सब रंग समा जाते हैं। जहां सब रूप और अरूप समा जाते हैं वही महाकाल है और उसकी शक्ति होने के कारण काली कृष्ण वर्णा हैं।

महाशक्ति को कोई आवरण ढक नहीं सकता, छिपा नहीं सकता, इसी कारण मां काली दिगम्बरा हैं। श्मशान जिनका निवास स्थल है, शिव जिनके पति हैं उनके गले में हीरे मोती की माला थोड़े ही होगी। उनका अलंकार तो नरमुण्डों की माला ही उपयुक्त है। परन्तु कई ग्रन्थों में यह भी बताया है कि यह मुण्डमाला नहीं वर्णमाला है अक्षर पुरुष की अक्षर वर्णमाला है।

मां संहारकारिणी भी है और आनन्दमयी भी हैं। उनके दो हाथों में वर मुद्रा तथा अभय मुद्रा यही बताती है कि मां अपने भक्तों को वराभय करा हैं। दस विद्याओं में काली सर्वप्रथम है। विलोम क्रम से सबसे

श्रीकाली

अन्त में होने पर भी सबसे ऊपर है। अन्य अपेक्षाकृत छोटी साधनाओं को करने के बाद ही परम श्रेष्ठ काली तत्त्व की साधना सबसे बाद में करने के योग्य साधक बन पाता है। मां काली की पूजा उपासना चाहे सबसे पहले करो या सबके बाद में, कल्याण ही कल्याण है।

पूजा भी तीन प्रकार की होती है—षोडशोपचार, पंचोंपचार और मानसोपचार। मानसोपचार पूजा में किसी बाहरी सामान की जरूरत नहीं है सब कुछ मन के अन्दर ध्यान में मां का स्वरूप रखकर सब पूजा के अंग ध्यान में ही किए जाते हैं। यह तभी होती है जब ध्यान में मां का स्वरूप आ जाए और ध्यान जम कर धारणा बन जाये। यह पूजा सर्वोत्कृष्ट पूजा है।

महाकाली की पूजा सर्वकामनाओं की पूर्ति के लिए की जाती है विशेष रूप से अत्याचारी शत्रु से रक्षा व त्राण पाने के लिए। माया के जाल से छूटकर मोक्षप्राप्ति के लिए भी महाकाली की पूजा सर्वश्रेष्ठ है। संसारी जीव असुरों, दुष्टों से रक्षा के लिए मां की पूजा करते हैं।

वाद-विवाद, मुकदमे में जीतने के लिए, प्रतियोगिता में प्रतिद्वन्दी को परास्त करने के लिए, दौड़, कुश्ती आदि युद्ध में मल्लयुद्ध में किसी भी प्रकार के युद्ध, शास्त्रार्थ में विजय के लिए काली की उपासना तुरन्त फल देती है।

मन्त्र को पुरश्चरण विधि से सिद्ध करना होता है फिर समय पड़ने पर अवसर के अनुसार इसका कुछ देर जाप करके उसका तुरन्त प्रभाव देखा जाता है।

पुरश्चरण में इसका सवा लाख मन्त्र जप का विधान है। दशांश हवन १२५००, दशांश तर्पण १२५०, दशांश मार्जन १२५, दशांश ब्राह्मण कन्या भोजन (१०-१५) हो। कोई साधक इतना सब हवन आदि न कर सके तो उसके स्थान पर दो गुना जप करने से कार्य सिद्ध हो जाता है। मान लो १२५०० हवन के स्थान पर १००० या १२५० हवन कर

दिया और शेष १०००० का दो गुना यानी २०००० जप कर दिया। जितना जप करना हो उसको नियम से नित्य उतनी संख्या अवश्य करनी चाहिए। मान लो ४० दिन में पुरश्चरण करना है कुल जप सवा लाख या डेढ़ लाख है तो ४० दिन में पूरा करने के लिए नित्य ३५-३७ माला मन्त्र जप करने से जप की निर्दिष्ट संख्या पूरी हो जाएगी।

आरम्भ के दिन, हवन, तर्पण, मार्जन वाले दिन तथा अन्तिम दिन तो अवश्य ही न्यास, ध्यान कवच सहित पूरी षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। वैसे जो नित्य कर सकते हैं वे नित्य करें तो और भी अच्छा है।

काली साधना के लिए सबसे उपयुक्त स्थान तो श्मशान है। वहां प्रबन्ध न हो सके तो शिव मन्दिर या देवी के मन्दिर में करें। यह भी न हो सके तो प्रथम दिन की साधना श्मशान में दिन में शिव या शक्ति के मन्दिर में आरम्भ करके बाद की साधनाएं घर में भी की जा सकती हैं। घर में कोई अलग कमरे का प्रबन्ध हो जाए तो अति उत्तम है नहीं तो घर का एक कोना अलग करके वहीं पर अपनी पूजा का सामान रख लें। घर में परिवार के अन्य लोग हैं तो रात के एकान्त में पूजा करें यदि घर में अधिक कोलाहल नहीं है तो बारह बजे दिन में भी पूजा की जा सकती है। सर्वोत्तम समय तो रात्रि का तीसरा पहर १२ से ३ बजे का ही है। जो समय सुविधा से मिल जाए उसी में पूजा करें।

लाल रंग के शुद्ध आसन पर पूर्व या उत्तर को मुंह करके बैठें। मां दक्षिण काली के चित्र का मुख दक्षिण दिशा को करके रखें।

विनियोग

'अस्य श्री दक्षिण कालिका मन्त्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक छन्दः, दक्षिण कालिका देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्ति, क्रीं कीलकं, मम अभीष्ट सिद्धिअर्थे जपे विनियोगः' बोल कर पंचपात्र से जल छोटे पात्र में डालें।

किसी दूसरे व्यक्ति (यजमान) के किसी कार्य के लिए अनुष्ठान है तो उससे अपने द्वारा पूजा कराने का संकल्प करा लें और मम अभीष्ट के स्थान पर मम यजमान अभीष्ट का उच्चारण करें।

न्यास के द्वारा विनियोग के अंगों को शरीर में स्थापित किया जाता है। न्यास की विधि विस्तार से बताई जा चुकी है।

ऋष्यादि न्यास

ॐ भैरव ऋष्ये नमः शिरसि। उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे।
दक्षिण कालिका देवतायै नमः हृदि।
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। हुं शक्तये नमः पादयोः।
क्रीं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥

करन्यास

मन्त्र का जप हाथ की उंगलियों से किया जाता है। अतएव मन्त्र के मुख्य अक्षर को प्रत्येक उंगली व समस्त हाथ में प्रतिष्ठित करने के लिए उसमें सभी मात्राएं लगाकर करन्यास किया जाता है। इसकी विधि विस्तार से बताई जा चुकी है।

ॐ क्रां अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः॥

हृदयादि न्यास

मन्त्र के मुख्य अक्षर में प्रत्येक मात्रा लगाकर बने स्वरूपों द्वारा हृदय आदि शरीर के मुख्य अंगों तथा समस्त शरीर को मन्त्रमय किया जाता है। इसकी विधि विस्तार से बताई जा चुकी है।

ॐ क्रां हृदयाय नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ क्रूं शिखायै वषट्। ॐ क्रैं कवचाय हुम्।
ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्रः अस्त्राय फट्॥

उपरोक्त न्यास चाहे तो पाठ से पहले नित्य करें, अथवा प्रथम दिवस आरम्भ करने से पहले करें और न कर सकें तो न करें। मुख्य भाग श्रद्धापूर्वक मन्त्र जाप का है। अन्तिम दिन—हवन, तर्पण, मार्जन वाले दिन—कर सकें तो उत्तम है।

इसके बाद ध्यान मन्त्र बोलें। न बोल सकें तो सामने रखे चित्र का अन्तर में ध्यान करें और या तो पहले कवच का पाठ करें फिर मन्त्र जप करें या पहले मन्त्र जप करके बाद में कवच का पाठ करें।

जो व्यक्ति संस्कृत जानते हैं और पढ़ सकते हैं उनको कवच का पाठ अवश्य करना चाहिए और अर्थ को समझते हुए पाठ करना चाहिए। कवच का अर्थ है रक्षा करना। योद्धा लोग जब रण में जाते थे तो प्रतिपक्षी के अस्त्र-शस्त्रों के घातप्रतिघातों से शरीर-रक्षा के लिए कवच धारण करते थे। पूजा में भी कवच का यही प्रयोजन होता है कि इसमें देवी-देवताओं के विभिन्न नामों के लेते हुए उनसे शरीर के प्रत्येक अंग की रक्षा करने को प्रार्थना की जाती है। पूजा काल में आने वाली विघ्न-बाधाओं से रक्षा की प्रार्थना की जाती है। कवच की भाषा सरल संस्कृत है और थोड़ा-बहुत हिन्दी जानने वाला भी इसका अर्थ आसानी से समझ सकता है। नहीं तो एक बार किसी संस्कृत जानने वाले से इसका अर्थ समझ लें। विस्तार-भय से अर्थ नहीं दिया है। यदि कोई साधक कम पढ़ा-लिखा है तो वह कवच का पाठ न करे। अपनी भाषा में देवी से सब प्रकार की रक्षा की प्रार्थना कर ले यही पर्याप्त है।

ध्यान मन्त्र

शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्ग मुण्डवराभयकरां शिवाम्॥
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं संचिंतयेत् कालीं श्मशानाय वासिनीम्॥

ध्यान मन्त्र का अर्थ—मां काली शव पर सवार हैं। महा भयंकर डरावना स्वरूप है। दांत की दाढ़ें तीक्ष्ण हैं। अट्टहास कर रही हैं। उनकी चार भुजाएं हैं। एक हाथ में खड्ग है, एक में नर मुण्ड है, एक में वर मुद्रा धारण किए हैं यानी एक हाथ से वर देने की मुद्रा है दूसरे से अभय

प्रदान करने की मुद्रा है। दुष्टों के लिए खड्ग व नरमुण्ड तथा अपने भक्तों के लिए अभय प्रदान करने और वरदान देने की मुद्रायें हैं। गले में मुण्डमाला धारण किये हुए हैं। जिह्वा बाहर निकली हुई है। दिगम्बरा अर्थात् निर्वस्त्र हैं और श्मशान उनका निवास है। ऐसी श्री काली मां का मैं ध्यान करता हूं।

मूल मन्त्र

"ॐ क्रीं क्रा क्रीं हुं हुं हुं दक्षिण कालिके
क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

काली कवच

शिरो मे कालिका पातु, क्रींकारकाक्षरी परा।
क्री क्रीं क्रीं मे ललाटं च, कालिका खड्गधारिणी ॥१॥
हुं हुं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुतिं मम।
दक्षिणे कालिके पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी ॥२॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसना पातु ह्रूं ह्रूं पातु कपोलकम्।
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी ॥३॥
द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा।
खड्गं मुण्डधरा काली सर्वाङ्गमभितोऽवतु ॥४॥
क्रीं हुं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम।
ऐं हुं ॐ ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥५॥
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्त्तृका।
क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी मम ॥६॥
क्रीं नाभिमध्यदेशं च दक्षिणे कालिकेऽवतु।
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठंतु कालिका सा दशाक्षरी ॥७॥
ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके हुं ह्रीं पातुं कटिद्वयम्।
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा पातूरुयुग्मकम् ॥८॥

ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी मम ।
काली हृन्नामविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा ॥९॥
क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु गुल्फं दक्षिणे कालिकावतु ।
क्रीं हुं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम ॥१०॥
खड्गमुण्डधरा काली वरदाभयहारिणी ।
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभितोऽवंतु ॥११॥
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी ।
विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ताघनत्विषा ॥१२॥
नीला घना बालिका च माता मुद्रामित प्रभा ।
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषिताः ॥१३॥
रक्षन्तु मां दिक्षुदेवी ब्राह्मी नारायणी तथा ।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ॥१४॥
वाराही नारसिंही च सर्वाश्चामित भूषणाः ।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां विदिक्षु यथा तथा ॥१५॥

२. तारा साधना

अक्षोभ्य पुरुष और उसकी महाशक्ति तारा है। रात्रि के १२ बजे से सूर्योदय तक महाकाली की सत्ता रहती है। इसके बाद महाविद्या तारा का साम्राज्य है। जब तक अन्नाहुति होती रहती है तारा शान्त रहती है। अन्नाभाव में वही शक्ति उग्रतारा बन कर संसार का नाश कर डालती है। महाकाली महाप्रलय की अधिष्ठात्री देवी है, तारा सूर्यप्रलय की। प्रलय करना दोनों का समान धर्म है। उग्रतारा की चारों भुजाओं में सर्प लिपट रहे हैं। प्रलय काल में जहरीली गैसों से ही विश्व का संहार करती है। शव रूप विश्व केन्द्र में प्रतिष्ठित है, सौरअग्नि अन्नाहुति बन्द होने से प्रबल वेग से सांय-सांय करने लगती है यही देवी का अट्टहास है। चन्द्रमा, मनुष्य, पशु-पक्षी आदि का सब रस सूख जाता है। सबका रस भाग उग्रतारा पी जाती है। उग्रतारा या महातारा या तारा का स्वरूप 'नील विशाल पिंगल जटा जूटैक नागैयुता' कहा गया है। यह महाशक्ति इसी रूप में विश्व का संहार करती है।

विपदाओं में पड़ा मनुष्य अपने कर्त्तव्य कर्म का पालन नहीं कर सकता। ऐसे में वह अशक्त और निःसहाय हो जाता है। तब उसे अन्य देवी-देवता भी बचा नहीं पाते। उस समय मां जगदम्बा 'तारा' रूप से मनुष्यों की रक्षा करती है। मां तारा को भगवती विपदहारिणी कहते हैं। वे भक्तों को कष्टों से बचाने को सदा तैयार रहती हैं। मां की पूजा तीन प्रकार से होती है—सात्त्विक, राजस और तामस। इनमें कामना रहित सात्त्विक पूजा ही सर्वश्रेष्ठ है। विधि-विधान से सब सामग्री जुटा कर पूरे आडम्बर और ठाट बाट से रईसी ढंग से सकाम या निष्काम, निरामिष हिंसा रहित पूजा को राजसी पूजा कहते हैं और

श्री तारा

सामिष बलि सहित पूजा जो कामना पूर्ति की इच्छा से की जाती है सुख भोग सिद्धियों की प्राप्ति के लिए की जाती है, तामसिक पूजा कहलाती है। सात्विक पूजा से मां की कृपा और मोक्ष तक की प्राप्ति होती है। राजसी पूजा से सुख भोग तथा स्वर्ग आदि लोकों की प्राप्ति होती है। तामसिक पूजा से यदि पथभ्रष्ट नहीं हुआ तो साधक की मनोकामना की पूर्ति तो सम्भव है परन्तु गति कर्मानुसार होती है। यदि मारण मोहन उच्चाटन आदि भयंकर घोर उपचार कर्मों से दूसरों को हानि पहुंचाई होगी तो गति भी खराब ही होगी।

मनुष्य की कामना के अनुसार ही मां तारा को तारिणी, तरला, त्रिरूपा, तरणी, रजोरूपा, तमोरूपा, महामाया, कालस्वरूपा, परानन्दा आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

ज्ञान-विज्ञान सुख-सम्पदा की प्राप्ति के लिए इनकी पूजा उपासना मन्त्रसिद्धि अनुष्ठान आदि किये जाते हैं। शुभ मुहूर्त में पर्व कालों में कालरात्रि मोहरात्रि महारात्रि होली दिवाली शिवचतुर्दशी ग्रहण काल में पूजा का आरम्भ किया जाता है। श्मशान, शिवमन्दिर, देवी का मन्दिर अथवा एकान्त स्थान पूजा का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। घर के किसी अलग कमरे में या अलग कोने में रात के तीसरे पहर में उपयुक्त समय होता है। यह सब न हो सके तो जैसी सुविधा हो उसी के अनुसार श्रद्धा-भक्ति से जब जैसा समुचित प्रबन्ध हो जाए, मां की पूजा करें। संस्कृत आती है, पढ़ लेते हैं तो विनियोग न्यास ध्यान कवच का पाठ करें नहीं तो हिन्दी में उनका भावार्थ समझ कर अपनी भाषा में करें। मां तो मन की भाषा समझती है।

साधक को स्नान करके शुद्ध होकर स्वच्छ वस्त्र पहन कर पूजा का सामान पास में रख कर ऊनी या सूती आसन पर बैठ कर पूजा करनी चाहिए। मृग चर्म या व्याघ्र चर्म का आसन सर्वोत्तम होता है। माला, पुष्प आसन वस्त्र लाल रंग के सर्वोत्तम होते हैं।

पुरश्चरण तीन लाख मन्त्र जप का है। पुरुश्चरण ४० दिन में करना हो तो प्रतिदिन या रात में ८० माला जप करने से ३२०००० के लगभग जप हो जाएगा। दशांश हवन, ३०००० आहुति, ३००० तर्पण ३०० मार्जन, ३० ब्राह्मण व कन्या भोजन कुल ३,३३,३३० संख्या होती है, अब चाहे जैसे इनको हवन १०००० का भी कर सकते हैं अधिक का भी कर सकते हैं। जैसी सामर्थ्य हो उसी के अनुसार ब्राह्मण भोजन, कन्या भोजन भी कम ज्यादा कर सकते हैं। विधान तो दशांश का ही होता है परन्तु किसी में कमी हो जाए तो उसका दस गुना जप करने से कमी पूरी हो जाती है। ८० की बजाय ८५ माला करने से हवन की कमी पूरी हो जाएगी। ३०००० आहुतियों की बजाय ३००० तक भी कर लेंगे तो भी काम चल जाएगा। आसन पर बैठ कर देवी की षोडशोपचार पूजा करें, ध्यान करें, मन्त्र जप करें। कर सकें तो विनियोग न्यास व कवच का पाठ भी नित्य करें अथवा आरम्भ व समाप्ति पर तथा हवन तर्पण मार्जन वाले दिन करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री महोग्रतारा मन्त्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, वृहती छन्दः, श्री महोग्रतारा देवता, हुं बीजं, फट् शक्तिः, ह्रीं कीलकं, श्री तारा देवी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :

ॐ अक्षोभ्य ऋषये नमः शिरसि। वृहती छन्दसे नमः मुखे।
श्री महोग्रतारा देवतायै नमः हृदि। हुं बीजाय नमः गुह्ये।
फट् शक्तये नमः पादयोः। ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास

ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास

ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसि से स्वाहा।
ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्।
ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान मन्त्र

प्रत्यालीढपदार्पिताङ्घ्रिशवहृद् घोराट्टहासापरा।
खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्पर भुजा हुंकार बीजोद्भवा।
खर्वानील विशाल पिङ्गल जटा जूटैक नागैर्युता,
जाड्यंन्यस्य कपालके त्रिजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्॥

ध्यान मन्त्र का अर्थ—तारा मां चतुर्भुजा हैं। उनके दोनों दाहिने हाथों में खड्ग और कर्तरी (कैंची) है। वाम हस्तों (बायें हाथों) में कपाल तथा खप्पर हैं। जटायें पीले रंग की हैं। तीन नेत्र हैं। तरुण सूर्य (दोपहर १२ बजे के समय के सूर्य) के समान तेजस्वी वर्ण है। जलती हुई चिता में शव पर स्थिति है। एक पैर आगे किये वीरासन पर बैठी हुई हैं। व्याघ्र (शेर) चर्म का कोपीन धारण किये हैं। जिह्वा लपलपाती हुई चलायमान है। भयंकर डरावना स्वरूप है। घोर हुंकार करती हुई भक्तों को अभय वरदायिनी है। चारों भुजाओं में सर्प लिपटे हुए हैं। ऐसी भक्तों को अभय वरदायिनी मां तारा का मैं ध्यान चिन्तन करता हूं।

मूल मन्त्र

'ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट्'

तारा कवच

प्रणवो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी।
ह्रीं कारः पातु ललाटे बीजरूपा महेश्वरी ॥१॥
स्त्रींकारः पातुवदने लज्जारूपा महेश्वरी।
हूंकारः पातु हृदये भवानी शक्तिरूपधृक् ॥२॥
फट्कारः पातु सर्वाङ्गे सर्वसिद्धि फलप्रदा।
नीलाभां पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयावहा ॥३॥
लम्बोदरी सदा स्कन्धयुग्मे पातु महेश्वरी।
व्याघ्रचर्मावृतकटिः पातु देवी शिवप्रिया ॥४॥
पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी।
रक्तवर्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदाऽवतु ॥५॥
ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी।
करालास्या सदा पातु लिङ्गे देवी हरिप्रिया ॥६॥
पिङ्गोग्रैकजटा पातु जंघायां विघ्ननाशिनी।
खड्गहस्ता महादेवी जानुचक्रे महेश्वरी ॥७॥
नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम।
नाग कुण्डल धर्त्री च पातु पाद युगे ततः ॥८॥
नागहार धरा देवी सर्वाङ्गे पातु सर्वदा ॥
नागकंकणधरा देवी पातु प्रान्तर देशतः ॥९॥
जल स्थले चान्तरिक्षे तथा . च शत्रुमध्यतः।
सर्वतः पातु मां देवी खड्गहस्ता जयप्रदा ॥१०॥

३. षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी) साधना

दश महाविद्याओं के क्रम में तीसरी महाविद्या षोडशी हैं, जिन्हें तन्त्र में त्रिपुर सुन्दरी भी कहा गया है। प्रातःकाल सूर्य का उदय हुआ। उसमें पारमेष्ठय, सोम यानी चन्द्रमा की आहुति हो गई। रुद्र, शिव शान्त होकर शिव हो गये, इसी शिव भाव से पूर्ण सूर्य से संसार का पालन-पोषण रक्षण होता है। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौलोक रूपी त्रैलोक्य का, उसमें रहने वाली प्रजा का निर्माण होता है। सूर्य पांचों दिशाओं में व्याप्त है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऊर्ध्व दिशा। इसी कारण सूर्य रूपी शिव पंचमुखी हैं। पंचमुखी शिव क्रमशः चतुष्कल, अष्टकल, त्रयोदशकल, अष्टकल एवं पंचकल हैं। प्रातः से लेकर सायंकाल तक शिव सूर्य की कला व दिशाओं के आधार पर पांच प्रकार की अवस्थायें हैं। प्रातःकाल चार कला, मध्याह्न तेरह कला, सायंकाल पांच कला रह जाती हैं। पंचवक्त्र शिव के १० हाथ हैं और उनमें क्रमशः अभय मुद्रा, टंक, शूल, वज्र, पाश, खड्ग, अंकुश, घण्टा, नाग और अग्नि १० आयुध हैं। टंक से आग्नेय ताप, शूल से वायव्य ताप, वज्र से ऐन्द्र (इन्द्र का) ताप, पाश से वारुण ताप (वरुण का), खड्ग से चन्द शक्ति का, अंकुश से दिश्याहेति का (देशहित) नाग से संचार नाड़ी (वायु) विषैली वायु का, अग्नि से प्रकाश रूपा दृष्टि का संकेत है।

इन्हीं पंचवक्त्र शिव की शक्ति का नाम षोडशी है। पंच कला, पंच अक्षर, पंच आत्म-अक्षर और परात्पर शिव की अभष्टि १६ होने से ही षोडशी नाम पड़ा है। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, अग्नि, सोम इन पांचों में इन्द्र रूप सूर्य में ही षोडशी का प्रधान निवास है। भूः भुवः स्वः तीनों लोक

श्री षोडशी

इसी शक्ति से उत्पन्न हुये हैं। शरीर में मन, प्राण, वाक्शक्ति तीनों की स्वामिनी हैं इसीलिए त्रिपुर सुन्दरी नाम पड़ा है। सूर्य के प्रकाश, चन्द्रमा के प्रकाश और अग्नि के प्रकाश तीनों प्रकाशों को प्रकाशित करने वाले तीन नेत्र हैं। सौर शक्ति समस्त खगोल में व्याप्त है। खगोल चतुर्भुज है। इसी आधार पर चार भुजायें हैं। प्रातःकाल का बालार्क (बाल सूर्य) इसकी साक्षात् प्रतिकृति है। सौर शक्ति, आकर्षण शक्ति, गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पाश से सारी पृथ्वी आबद्ध है। इसी कारण अपने क्रान्तिवृत्त में रहती हैं। हाथों में पाश का होना यही सूचित करता है। समस्त ग्रह नक्षत्र चराचर जगत पर अंकुश रखती हैं यही बताने को हाथ में अंकुश है। तीनों लोकों में व्याप्त, रुद्र के अन्न वायु वर्षा तीन वाण हैं। शर इन्हीं का सूचक है। सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा, पालक विष्णु, संहारक रुद्र, खण्ड प्रलय के कर्त्ता यम चारों इनके अधीन हैं अतएव 'चतुर्वाहा' हैं।

ब्रह्माण्ड पुराण में षोडशी देवी को ब्रह्मविद्या ब्रह्ममयी मोक्ष देने वाली देवी कहा गया है। इन्हीं का दूसरा नाम श्री विद्या है। इनकी साधना से शिव लोक की प्राप्ति होती है। अनेक जन्मों की उपासना तपस्या के फलस्वरूप इनकी उपासना का सौभाग्य प्राप्त होता है भगवती षोडशी की उपासना से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है।

मन्त्र का पुरश्चरण केवल सवा लाख १,२५,००० मन्त्र जप का है १२५०० हवन, १२५० तर्पण, १२५ मार्जन, १०-१५ ब्राह्मण बालक-बालिकाओं का भोजन पूजन इस प्रकार पूरा पुरश्चरण लगभग १,४०,००० जप का है। हवन १२५०० आहुतियों का न कर सकें तो जितना कम करें उसके शेषांश का दस गुना जप करें। ४० दिन का पुरश्चरण करने का संकल्प करें तो प्रति दिन ३५ या ४० माला नित्य करें। २१ दिन का संकल्प करें तो ८० माला नित्य और ८० दिन का

संकल्प करें तो २० माला नित्य का हिसाब बैठता है। जो भी संकल्प करें उसे हर हालत में नित्य दिन या रात में पूरा करना चाहिये।

षोडशोपचार, पूजा, विनियोग, न्यास, ध्यान, मन्त्र, कवच पाठ के साथ मन्त्र जप करना सर्वश्रेष्ठ होता है। .जो साधक संस्कृत नहीं पढ़ सकते वे अपनी भाषा में भावार्थ का पठन करें। नित्य सब नहीं कर सकें तो प्रारम्भ, अन्त, हवन, मार्जन, तर्पण वाले दिन तो अवश्य पूरा पाठ करें। अन्य दिनों में षोडषोचार पंचोपचार या मानसोपचार पूजा व मन्त्र जप करें।

प्रातःकाल स्नान करके सफेद रंग के साफ नये धुले वस्त्र पहनें। मौसम के अनुसार सूती, ऊनी वस्त्र धारण करें। इस पूजा में सभी वस्तुयें श्वेत (सफेद) रंग की प्रयोग की जाती हैं। सफेद रंग का आसन, सफेद पुष्प, सफेद रंग का ही नैवेद्य फल, मिठाई, बरफी, लड्डू, बताशे आदि सफेद रंग की बाती का घी का दीपक, माला मोती की, चन्दन की, तुलसी की सफेद रंग की हो। भगवती षोडशी का चित्र पूर्वाभिमुख करके रखें स्वयं उत्तर की ओर मुख करके बैठें। षोडषोपचार पूजा, विनियोग, न्यास, ध्यान, कवच पाठ के अनन्तर मन्त्र जप करें। षोडशोपचार पूजन "ॐ ह्रीं षोडश्यैनमः" मन्त्र के साथ करें। प्रत्येक उपचार से पहले इस मन्त्र को पढ़ें। जैसे "ॐ ह्रीं षोडश्यै नमः आवाहनं समर्पयामि" आदि।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, धन सम्पदा के साथ वशीकरण की शक्ति प्राप्त करने के लिए षोडशी महाविद्या का पूजन सर्वश्रेष्ठ है।

विनियोग

अस्य त्रिपुर सुन्दरी मन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्री महात्रिपुर सुन्दरी देवता, ऐं बीजम्, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषयेनमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे।
श्री महात्रिपुर सुन्दरी देवतायै नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये।
सौः शक्तये नमः पादयोः। क्रीं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥

करन्यास

ह्रीं श्रीं अं अगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं आं तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रीं श्रीं सौः मध्यामभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं अं अनामिकाभ्यां नमः।
ह्रीं श्रीं आं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ह्रीं श्रीं सौः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास

ह्रीं श्रीं अं हृदयाय नमः। ह्री श्रीं आं शिरसि स्वाहा।
ह्रीं श्रीं सौः शिखायै वषट्। ह्रीं श्रीं अं कवचाय हुम्।
ह्रीं श्रीं आं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रीं श्रीं सौः अस्त्राय फट्॥

ध्यान मन्त्र

बालार्क युत तैजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं।
नानालङ्कृति राज मानवपुषं बालेन्दु युक शेखराम्॥
हस्तैरिक्षु धनुः सृणि सुमशरं पाशं मुदा विभ्रतीं।
श्रीचक्र स्थित सुन्दरीं त्रिजगता माधार भूतां भजे॥

ध्यान मन्त्र का अर्थ—प्रातःकाल के सूर्य के समान जिनका तेज है। मां के तीन नेत्र हैं। नाना प्रकार के अलङ्कारों से सज्जित हैं। चारों भुजाओं में धनुषबाण चापपाश सुशोभित हैं। श्रीचक्र पर आसीन सौन्दर्य की देवी त्रैलोक्य की आधार जगन्माता षोडशी देवी को नमस्कार करता हूं। ध्यान करता हूं, तेरा भजन करता हूं।

मूल मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं केइल ह्रीं सकल ह्रीं सौः
ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः।

षोडशी कवच

बालार्क मण्डल भासां चतुर्वाहा त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुश शरांश्चापान धारयन्तीम् शिवां भजे ॥१॥
ॐ पूर्वे मां भैरवी पातु बाला मां पातु दक्षिणे ।
मालिनी पश्चिमे पातु त्रासिनी उत्तरेऽवतु ॥२॥
उर्ध्वं पातु महादेवी महात्रिपुरसुन्दरी ।
अद्यस्तात पातु देवेशी पाताल तल वासिनी ॥३॥
आधारे वाग्भवः पातु कामराजस्तथा हृदि ।
डामरः पातु माम् नित्यं मस्तके सर्वकामदः ॥४॥
ब्रह्मरन्ध्रे सर्वगात्रे छिद्रस्थाने च सर्वदा ।
महाविद्या भगवती पातु मां परमेश्वरि ॥४॥
ऐं ह्रीं ललाटे मां पातु क्लीं क्लूं सश्चनेत्रयोः ।
नासायां मे कर्णयोश्च द्रीं द्रैं द्रां चिबुके तथा ॥६॥
सौः पातु गले हृदये सह ह्रीं नाभिदेशके ।
कलह्रीं क्लीं स्त्रीं गुह्यदेशे स ह्रीं पादयोस्तथा ॥७॥
सह्रीं मां सर्वतः पातु सकली पातु सन्धिषु ।
जले स्थले तथाऽकाशे दिक्षुराजगृहे तथा ॥८॥
हुं क्षेमा त्वरिता पातु सह्रीं सकली मनोभवा ।
हंसः पायान्महादेवी परं निष्छल देवता ॥९॥
विजया मङ्गला दूती कल्याणी भगमालिनी ।
ज्वाला च मालिनी नित्या सर्वदा पातु मां शिवा ॥१०॥

४. भुवनेश्वरी साधना

सूर्य उत्पन्न हुआ। पारमेष्ठ सोम की आहुति हुई। इससे यज्ञ हुआ। यज्ञ से त्रैलोक्य का निर्माण हुआ। तीनों भुवनों की उत्पत्ति में षोडशी की सत्ता थी। उनका संचालन करती हुई वही शक्ति भुवनेश्वरी बन गई। यदि सूर्य में सोम की, चन्द्रमा की आहुति न होती तो यज्ञ सम्पन्न नहीं होता और बिना यज्ञ के भुवनों की रचना नहीं होती। भुवनों को रचना से भुवनेश्वरी क्रियाशील है। सूर्य के मस्तक पर विराजमान चन्द्रमा की आहुति से भुवन क्रियाशील है, गतिमान है। इन्दु किरीटा इसी अवस्था का स्वरूप है। देवी के मस्तक पर द्वितीया का चन्द्रमा शोभायमान है। तीनों नेत्रों का निदान बताया जा चुका है (षोडशी प्रकरण)। ८४ लाख योनियों में जितनी भी प्रजा है सबका भरण-पोषण भुवनेश्वरी करती है। 'वरदां' से यही अभिप्राय है। अपने तेज के पूर्ण विकासकाल पूर्ण यौवन का द्योतक है 'तुङ्गकुचां'। देवी अपने सम्पूर्ण तेज से देदीप्यमान हो रही हैं। प्रलय काल में जो भुवन जलमग्न हो गये हैं वही आज देवी की कृपा से विकासशील हो रहे हैं मानो देवी की कृपा दृष्टि हो रही है 'स्मेर मुखीं' से यही तात्पर्य है। अंकुश और पाश का अर्थ पिछले प्रकरण में बताया जा चुका है।

मन्त्र में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती तीनों ही महादेवियों के बीज मन्त्र हैं। इसका जप करने से (कवच स्तोत्र न्यास सहित जप करने से) शक्ति, बल, सामर्थ्य, लक्ष्मी सम्पदा, वैभव और सब प्रकार की उत्तम विद्यायें, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य प्राप्त होता है। किसी शुभ और उचित कामना को लेकर अनुष्ठान करने से या केवल मन्त्र सिद्धि करने पर भी सफलता और इष्ट की प्राप्ति होती है।

श्री भुवनेश्वरी

साक्षात् दर्शन खुली आंखों से बाहर दर्शन तो विरले ही भाग्यवान सिद्ध पुरुषों को होते हैं परन्तु अन्तर में ध्यान में या स्वप्न में भी दर्शन हो जायें तो जीवन सफल हो जाता है। कोई वैरी-दुश्मन अकारण अत्याचार कर रहा हो तो देवी की प्रार्थना करनी चाहिये। आर्त मनुष्य की पुकार दयामयी शीघ्र सुनती है।

सभी मन्त्रों की भांति मन्त्र की पहले दीक्षा लें गुरु से या इष्ट देवी से, फिर पुरश्चरण विधि से मन्त्र को सिद्ध करें। इसके जप करने से साधक के या जिसके लिए अनुष्ठान किया जाए उसकी सभी विघ्न बाधायें दूर हो जाती हैं कार्यों में सफलता मिलती है।

निष्काम भाव से साधना करने पर साधक को स्वयमेव मां की कृपा से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ऋद्धि-सिद्धि, सुख-सम्पत्ति, सभी वैभव प्राप्त होते हैं। साधक को शुभमुहुर्त, पर्वकाल, कालरात्रि, मोहरात्रि, महारात्रि ग्रहणकाल, होली, दिवाली, कृष्ण पक्ष की अष्टमी चतुर्दशी से साधना का आरम्भ करना चाहिये। उपयुक्त स्थान व समय के विषय में पहले ही बताया जा चुका है। स्नान करके पवित्र होकर स्वच्छआसन पर बैठ कर पूजा करें। लाल रंग के पदार्थ पूजा में विशेष रूप से प्रयोग में लायें। लाल रंग के पुष्प, लाल रंग की गन्ध, लाल चन्दन, लाल कुंकुम, लाल रंग की धूप, लाल बत्ती का दीपक, रुद्राक्ष की माला, लाल रंग का नैवेद्य, फल, सेव, गुलाब जामुन आदि लाल रंग के ही हों। आसन पहनने के वस्त्र भी लाल हों, दीपक घी का हो।

किसी लाल रंग की काठ की चौकी पर देवी के चित्र की स्थापना करें, षोडशोपचार, पंचोपचार या मानसोपचार से देवी की पूजा करें। विनियोग, न्यास, ध्यान, कवच पाठ के बाद मन्त्र जप करें। जप से पहले माला की पूजा की जाती है। विनियोग आदि नहीं कर सकें तो केवल पूजा व जप करें और मां का अन्तर में ध्यान करते हुए उपासना करें।

इस मन्त्र का पुरश्चरण ३ लाख जप संख्या का है। नियमानुसार दशांश हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन सब मिलाकर ३,३३,३३३ संख्या होती है। जिनकी सामर्थ्य ३०००० आहुतियों के हवन की न होवे यथा शक्ति हवन करें। शेष का दस गुना जप कर लें। ब्राह्मण भोजन में भी १० से १५ ब्राह्मण, कन्या तथा बालकों को भोजन, पूजन, दक्षिणा आदि न कर सकें तो दस गुना जप करें। इस प्रकार पुरश्चरण किया जाए तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद किसी भी कार्य के लिए, अपने लिए या दूसरे के लिए अनुष्ठान किया जा सकता है। अनुष्ठान में कार्य की गम्भीरता को देखते हुए ११ हजार, २१ हजार आदि जप संख्या निश्चित की जाती है।

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी, महामन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री भुवनेश्वरी देवता, ह्रीं बीजं, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं मम अभीष्ट सिद्धयर्थे, श्री भुवनेश्वरी देवी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

सदा शिव ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे।
श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
ऐं शक्तये नमः पादयोः। श्रीं कीलकं नमः नाभौ।
ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥

करन्यास

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास

ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्।
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान मन्त्र

ॐ बाल रवि द्युति मिन्दु किरीटां,
तुङ्ग कुचां नयन त्रय युक्ताम् ॥
स्मेर मुखीं वरदांकुश पाशाः ।
भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

ध्यान मन्त्र का अर्थ—माता भुवनेश्वरी देवी के शरीर के अंगों की आभा प्रभात काल के सूर्य के समान लालिमा लिये हुए है, मस्तक पर मुकट स्वरूप चन्द्रमा शोभायमान है। उभरे हुए स्तनों वाली मां के तीन नेत्र हैं। मन्द-मन्द मुस्करा रही है। चारों भुजाओं में वरद मुद्रा (वरदान वाली मुद्रा) अंकुश, पाश व अभय मुद्रा हैं। ऐसी भक्तों को अभय प्रदान करने वाली भुवनेश्वरी देवी का मैं भजन करता हूं, ध्यान करता हूं तथा नमस्कार करता हूं।

मूल मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमः ॥

भुवनेश्वरी कवच

ह्रीं बीजं मे पातु भुवनेशी ललाटकम्।
ऐं पातु दक्षनेत्रं मे ह्रीं पातु वाम लोचनम् ॥१॥
श्रीं पातु दक्ष कर्णे मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी।
वाम कर्णे सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा ॥२॥
ह्रीं पातु वदनं देवी ऐं पातु रसनां मम।
वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कण्ठे पातु परात्मिका ॥३॥
श्रीं स्कन्धौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा।
क्लीं करौ त्रिपुरा पातु त्रिपुरैश्वर्यदायिनी ॥४॥
ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्य देशं सदाऽवतु।
क्रीं पातु नाभिदेशं सा त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ॥५॥

सर्व बीजप्रदा पृष्ठं पातु सर्व वशंकरी।
ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम् ॥६॥
माहेश्वरी सदा पातु शंखिनी जानुयुग्मकम्।
अन्नपूर्णा सदा पातु स्वाहा पातु पदद्वयम् ॥७॥
सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णात्मिका परा।
तारं माया रमा कामः षोडशाणी ततः परम् ॥८॥
शिरस्थां सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा।
तारंदुर्गे युगं रक्षिणी स्वाहेति दशाक्षरी ॥९॥
जय दुर्गा घनश्यामा पातु मां पूर्वतो मुदा।
मायाबीजादिका चैषा दशार्णा च ततः परा ॥१०॥
उत्तप्तकाञ्चना भाषा जय दुर्गाननेऽवतु।
तारं ह्रीं दुं दुर्गायं नमोऽष्टार्णात्मिका परा ॥११॥
शंख चक्र धनुर्बाणधरा मां दक्षिणेऽवतु।
महिषामर्दिनी स्वाहा वसुवर्णात्मिका परा ॥१२॥
नैऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुर नाशिनी।
माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णा परिकीर्तिता ॥१३॥
पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु।
पाशांकुशपुटा माये हि परमेश्वरि स्वाहा ॥१४॥
त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वरूढाननेऽवतु।
सरस्वती पञ्चशरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ॥१५॥
स्वाहा रण्येक्षरी विद्या मामुत्तरे सदाऽवतु।
तारं माया तु कवचं सं रक्षेत सदा वधुः ॥१६॥
हूं क्षें फट् महाविद्या द्वादशार्णाखिलप्रदा।
त्वरिताष्टाहिभिः पायाच्छिवकोणे सदा च माम् ॥१७॥
ऐं क्लीं सौः सततो बाला मूर्द्धदेशतोऽवतु।
बिंद्वन्ता भैरवी बाला भूमौ च मां सदाऽवतु ॥१८॥

५. त्रिपुरभैरवी साधना

दांक्षणा मूर्ति महाशिव कालभैरव की शक्ति भैरवी हैं। छिन्नमस्ता देवी महाप्रलय से सम्बन्धित है तो भैरवी नित्य प्रलय से। प्रतिक्षण प्रलय हो रही है। पदार्थों का नाश हो रहा है। हमारी इन्द्रियां, बल आयु क्षीण हो रही है। नष्ट करना रुद्र का काम है। यही यम कहलाते हैं। यम व अग्नि की सत्ता दक्षिण दिशा में है। दक्षिण में वास होने से दक्षिणामूर्ति भैरव कालभैरव आदि नामों से पुकारे जाते हैं। राजराजेश्वरी भुवनेश्वरी देवी जिन तीनों भुवनों की रक्षा करती है, त्रिपुर भैरवी नाम से भैरवी उनका नाश करती है। छिन्नमस्ता परा डाकिनी है यह अपरा डाकिनी है।

साधक स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर पूजासामग्री पास रख कर आसन पर बैठे। आत्मशुद्धि आसन-शुद्धि करें। सामने भैरवी माता का चित्र किसी काठ की चौकी पर स्थापित करें और षोडशोपचार, पंचोपचार या मानसोपचार से देवी की पूजा करें। पश्चात् विनियोग न्यास ध्यान कवच पाठ के बाद मन्त्र जप करें। जप से पहले माला की पूजा की जाती है। जो साधक संस्कृत नहीं जानते वे अपनी भाषा में ही पूजा न्यास आदि कर सकते हैं। मन्त्र व कवच का पाठ मूल रूप में ही होता है। मां भैरवी की पूजा में भी लाल रंग के ही पदार्थों की पूजा सामग्री माला पुष्प धूप दीप नेवैद्य का आसन व लाल वस्त्रों का ही प्रयोग होता है। पुष्पों में कमल के पुष्प मिल जाएं तो उत्तम होते हैं, हवन में भी कुछ कमल पुष्पों की आहुति दें तो उत्तम है। पुरश्चरण १० लाख मन्त्रों का है, मन्त्र सिद्ध होने पर सब प्रकार के शुभ मनोरथ पूर्ण होते हैं।

श्री त्रिपुरभैरवी

पुरश्चरण

इस मन्त्र का पुरश्चरण दस लाख मन्त्र का है। मन्त्र छोटा है इससे माला कम समय में हो जाती है। एक लाख का हवन न करा सकें तो दस लाख जप करना होगा। इस प्रकार कुल जप संख्या २०-२१ लाख तक हो जाएगी। जिसको ४१ दिन में पूरा करने के लिए ५०० माला नित्य करनी होंगी। ८१ दिन का करोगे तो २५० माला नित्य का हिसाब बनेगा। अपनी सुविधा के अनुसार हिसाब लगा कर उसी प्रकार ४१, ८१, १२१ दिन का पुरश्चरण कर सकते हैं। स्थान समय आदि के बारे में बताया जा चुका है। पुरश्चरण काल में सभी मन्त्रों में सात्विक भोजन, जमीन पर सोना, एक समय भोजन, ब्रह्मचर्य पालन आदि नियम सात्विक पूजा में अनिवार्य हैं। राजसी पूजा में भी कुछ छूट मिलती है' भोजन राजसी कर सकते हैं परन्तु ब्रह्मचर्य पालन जरूरी होता है।

माता त्रिपुर भैरवी की पूजा-पद्धति

विनियोग

अस्य श्री त्रिपुरभैरवी मन्त्रस्य, दक्षिणमूर्ति ऋषिः, पंक्तित्छन्दः, त्रिपुरभैरवी देवता, वाग्भोम बीजं, शक्ति बीजं शक्ति, कामराज कीलकं, श्री त्रिपुर भैरवी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

ॐ दक्षिण मूर्तये ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे। श्री त्रिपुरभैरवी देवतायै नमः हृदि। वाग्भोम बीजाय नमः गुह्ये। शक्ति बीजं शक्तये नमः पादयोः। कामराज कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास

ह्स्रां अंगुष्ठाय नमः। ह्स्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

हस्रूं मध्यमाभ्यां नमः । हस्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
हस्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। हस्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास

हस्रां हृदयाय नमः। हस्रीं शिरसे स्वाहा।
हस्रूं शिखायै वषट्। हस्रैं कवचाय हुम्।
हस्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । हस्रः अस्त्राय फट् ।

ध्यान मंत्र

उद्यद् भानु सहस्र कान्ति मरुण क्षौमाँ शिरोमालिकां
रक्तालिप्त पयोधरां जप वटीं विद्यामभीतिं वरां।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटां वन्देसुमन्दस्मिताम् ॥

ध्यान मन्त्र का अर्थ—मां के श्री अङ्गों की आभा उदय काल के सहस्रों सूर्यों के समान है। वे लाल रंग की रेशम की साड़ी पहने हुए हैं। उनके गले में मुण्डमाला शोभा पा रही है। दोनों स्तनों पर रक्त चन्दन का लेप लगा है। वे अपने करकमलों में जप मालिका विद्या और अभय तथा वर मुद्राएं धारण किये हुए हैं। मुद्रा का अर्थ अंगूठी या मोहर न समझें। पूरी हथेली को खोलकर सामने करने को अभय मुद्रा, आशीर्वाद देने के लिए पूरे पंजे को वरद हस्त रखना वर मुद्रा होती है। तीन नेत्रों से मुखारविन्द की शोभा अनुपम है। उनके मस्तक पर चन्द्रमा के साथ रत्न जडित मुकट भी है। कमल के आसन पर विराजमान भैरवी देवी को मैं नमस्कार करता हूं।

मूल मन्त्र

ॐ हस्रीं त्रिपुर भैरव्यै नमः ।

त्रिपुर भैरवी कवच

हस्त्रैं मे शिरः पातु भैरवी भयनाशिनी।
हसकलरीं नेत्रे च हस्त्रौश्च ललाटकम् ॥१॥
कुमारी सर्व गात्रे च वाराही उत्तरे तथा।
पूर्वे च वैष्णवी देवी इन्द्राणी मम दक्षिणे ॥२॥
दिग्विदिक्षु सर्वत्रैव भैरवी सर्वदावतु।
त्राहि माँ देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनी ॥३॥
आयु रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्ति च लक्ष्मीं च धनं च विद्यां चक्रिणी ॥४॥
पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मी विजया त्रिपुर भैरवी ॥५॥

६. छिन्नमस्ता साधना

कबन्ध शिव की महाशक्ति छिन्नमस्ता है। सृष्टि का मूल यज्ञ—पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ, महायज्ञ, अतियज्ञ, शिरोयज्ञ पांच भागों में विभक्त है। स्मार्तयज्ञ पाक यज्ञ है। इसी को गृह्य यज्ञ एकाग्नि यज्ञ भी कहते हैं। अग्निहोत्र, दर्श पौर्णमास्य, चातुर्मास्य, पशुबन्ध आदि हविर्यज्ञ होते हैं भूत यज्ञ, मनुष्य यज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ यह पांच महायज्ञ हैं। अग्निचयन राजसूय अश्वमेध वाजपेय यह अतियज्ञ है। प्रत्येक यज्ञ के अन्त में शिर: सन्धान के लिए शिरोयज्ञ किया जाता है। बिना इसके यज्ञ छिन्न शीर्ष यानी बिना सिर का कबन्ध मात्र रहता है। इन्हीं कबन्ध शिव की शक्ति छिन्नमस्ता है। जो महामाया षोडशी बन कर संसार की सृष्टि करती है, भुवनेश्वरी बन कर पालन करती है वे ही शिरोयज्ञ के अभाव में छिन्नमस्ता बन कर अन्त समय में संहार करती हैं।

उनके वाम हस्त में अपना ही शिर यानी मस्तक है। जिह्वा निकली हुई है, भयंकर स्वरूप है। रुधिर की धारा पी रही है। केश बिखरे खुले हुए हैं। दाहिने हाथ में कर्त्री (कैंची) है। मुण्डमाला धारण किए हुए है, दिगम्बर (निर्वस्त्र) वेश है। नाग का यज्ञोपवीत पड़ा हुआ है दाहिने वाहिने डाकिनी वर्णिनी है। महाविकराल रूप से रणभूमि में रक्तबीज के रक्त का पान कर रही है ताकि यह भयानक राक्षस फिर से उत्पन्न न हो सके। प्रलय काल में भी यह महादेवी संहार कार्य में सहायक रहती है।

शुंभ निशुम्भ नामक दैत्यों से देवी का युद्ध हुआ था यह कथा दुर्गा सप्तशती के उत्तम चरित में विस्तार से दी हुई है। शुंभ निशुम्भ दैत्यों का सेनापति रक्तबीज नाम का राक्षस था—उसे यह वर प्राप्त था कि

उसका एक बूंद रक्त भी जहां गिरेगा वहीं पर एक और रक्तबीज पैदा हो जाएगा। उस युद्ध में देवी ने अपने शरीर से अनेकों रूपों में अन्य नवदुर्गाओं को उत्पन्न किया था। रक्तबीज के रुधिर को पृथ्वी पर पड़ते ही पान करने के लिए चामुण्डा देवी को उत्पन्न किया। उन्होंने उसके समस्त रक्त को पी लिया ताकि और रक्तबीज उत्पन्न न हो सके। इन्हीं देवी को छिन्नमस्ता महाविद्या कहते हैं।

छिन्नमस्ता देवी की उपासना विशेष रूप से सन्तान प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति के लिए, दरिद्रता का नाश करने के लिए, कवित्व शक्ति, लेखन शक्ति, वाचन शक्ति की प्राप्ति के लिए, वाक् सिद्धि, लेखनी सिद्धि के लिए, आर्ष कवि बनने के लिए की जाती है।

इनके मंत्र का पुरश्चरण सवा लाख मन्त्र का है। २१ या ४१ दिन में पूरा पुरश्चरण नियोजित किया जा सकता है। पुरश्चरण विधि पहले ही बताई जा चुकी है उसी भांति अपनी सुविधा शक्ति सामर्थ्य के अनुसार नियम बनाकर जप करना चाहिए। देवी को पायस खीर लाल रंग के सूखे मेवे किशमिश खजूर बादाम आदि का नेवैद्य विशेष प्रिय है। पूजा में लाल रंग का आसन माला लाल चन्दन कुंकुम लाल बत्ती का घी या तेल का दीपक, लाल रंग के पुष्प कनेर या कमल के हों तो उत्तम होते हैं। हवन में अन्य वस्तुओं के साथ लाल चन्दन का विशिष्ट प्रयोग करें। घी से हवन करें। मिष्टान्न फल आदि भी लाल रंग के ही प्रयुक्त करें। पहनने के वस्त्र भी लाल रंग के होने चाहिए। सूखे नारियल के गोले में लाल चन्दन मिला घी भरकर बलि पूर्णाहुति के समय देनी चाहिए।

२१ दिन के पुरश्चरण में कुल संख्या १,४०,००० के लगभग होती है। १२-१३ हजार आहुतियों में यदि हजार बारह सौ का हवन करें तो शेष १० हजार का दस गुना एक लाख जप होता है। इस प्रकार कुल संख्या ढाई लाख के लगभग हो जाती है (२,४०,०००) तो प्रति दिन

श्री छिन्नमस्ता

१०० या ११० माला और ४१ दिन के पुरश्चरण में ५०-५५ माला का नित्य नियम बनता है। जितना समय सरलता से सुविधापूर्वक उपलब्ध हो उसी के अनुसार दिनों की संख्या निश्चित की जा सकती है। ४१ से अधिक दिनों का पुरश्चरण किया तो जा सकता है परन्तु जहां तक बने ४१ से अधिक दिन नहीं लगाने चाहिए।

विनियोग

अस्य शिरच्छिन्नमन्त्रस्य, भैरव ऋषिः, सम्राट् छन्दः, छिन्नमस्ता देवता, हुं हुं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, क्लीं कीलकं, मम अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि। सम्राटछन्दसे नमः मुखे।
छिन्नमस्ता देवतायै नमः हृदि। हुं हुं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥

करन्यास

ॐ छ्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ छ्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ छ्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ छ्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ छ्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ छ्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ छ्रां हृदयाय नमः। ॐ छ्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ छ्रूं शिखायै वषट्। ॐ छ्रैं कवचाय हुम्।
ॐ छ्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ छ्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान मन्त्र

अनोग्र स्वशरीरस्य नाभिनीरज सङ्गताम्।
निर्लेपां निगुणां सूक्ष्मां बाल चन्द्र सम प्रभाम्॥

समाधि मात्र गम्यां तु गुण त्रितय वेष्टिताम्।
कालातीतां गुणातीतां मुक्ति भुक्ति प्रदायिनीम्॥
प्रत्यालीढ पदां दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्रिका।
छिन्न मस्तां भजे देवीं सर्व सौख्य प्रदायिनीम्॥

अर्थ—देवी अपने एक पैर को आगे बढ़ाए हुए हैं। उनके वाम हस्त में अपना ही कटा हुआ छिन्न मस्तक है। इसी कारण नाम छिन्नमस्ता है। जिह्वा बाहर निकली हुई है। कबन्ध से निकली हुई रुधिर की धारा को स्वयं पी रही हैं। बिखरे हुए खुले केश हैं। दाहिने हाथ में कैंची (कर्तरी) है। मुण्डमाला धारण किए हुए हैं। निर्वस्त्र दिगम्बर वेश है। नाग का यज्ञोपवीत धारण किए हुए हैं। बाल चन्द्र के समान शरीर का वर्ण व आभा है। त्रिगुणों से परे काल चक्र से परे मुक्ति भुक्ति देने वाली हैं। सर्वसुख सम्पदा देने वाली हैं। योगीजनों को समाधि अवस्था में दर्शन देती हैं। ऐसी भगवती छिन्नमस्ता देवी का मैं ध्यान करता हूं, भक्ति व नमस्कार करता हूं।

मूल मन्त्र

ॐ क्लीं ह्रीं ऐं वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट स्वाहा।

छिन्नमस्ता कवच

हुं बीजात्मिका देवी मुण्डकर्तृधरापरा।
हृदयं पातु सा देवी वर्णिनी डाकिनीयुता॥१॥
श्रीं ह्रीं हुं ऐं चैवदेवीं पूर्वस्यां पातु सर्वदा।
सर्वांगं मे सदा पातु छिन्नमस्ता महाबला॥२॥
वज्रवैरोचनीये हुं फट् बीजसमन्विता।
उत्तरस्यां तथाग्नौ च वारुणे नैऋतेऽवतु॥३॥
इन्द्राक्षी भैरवी चैवासितांगी च संहारिणी।
सर्वदा पातु माम् देवी चान्यान्यासु हि दिक्षु वै॥४॥

७. धूमावती साधना

धूमावती देवी की साधना रात्रि में ही की जाती है। धूमावती देवी का विचित्र स्वरूप है। शरीर का आकार स्थूल है। रूखे सूखे केश हैं। मलिन वेश है। दोनों स्तन नीचे की ओर लटके हुए हैं झुके हुए हैं जैसे वृद्धा स्त्री के हो जाते है। इनका स्वरूप विधवा जैसा है।

स्नान करके पवित्र होकर शुद्ध वस्त्र पहन कर भगवती धूमावती का चित्र सामने स्थापित करे। भगवती की षोडशोपचार पंचोपचार से पूजा करें। विनियोग न्यास ध्यान कवच पाठ करके मन्त्र का जप करें। ध्यान मंत्र के अर्थ केअनुसार भगवती का अन्तर में ध्यान करें और जप करते जाएं। वैसे तो साधारणतया सभी प्रकार की मनोकामनायें लेकर धूमावती देवी की पूजा की जाती है परन्तु दरिद्रता को दूर करने, कर्ज से छुटकारा पाने, किसी को कर्ज दिया हो और वह पैसा नहीं दे रहा हो तो उससे पैसा वसूल कराने के लिए, कोई अकारण सता रहा हो, तुम्हारी जमीन मकान पर कब्जा किए बैठा हो अनधिकृत रूप से तुम्हारा हक मार रहा हो तो धूमावती देवी की पूजा आराधना करनी चाहिए। किसी ने तुम्हारी दुकान बांध दी हो तुम्हारी कोख बांध दी हो रोजगार आमदनी बांध दी हो, मित्र से, अधिकारो से, घर के लोगों से उच्चाटन करा दिया हो तो उसके लिए मां की पूजा करनी चाहिए।

इस मन्त्र का पुरश्चरण ८ लाख का है। ८० हजार हवन की सामर्थ्य नहीं हो तो ८ लाख जप और करना पड़ेगा। मन्त्र छोटा है इससे ४१ दिन के पुरश्चरण के लिए ४२५ माला प्रतिदिन करनी होगी। विनियोग, न्यास, ध्यान व कवच पाठ भी पूरा करना होगा। हवन में आक की लकड़ी का प्रयोग विशेष रूप से करें। वस्त्र आसन पूजा का

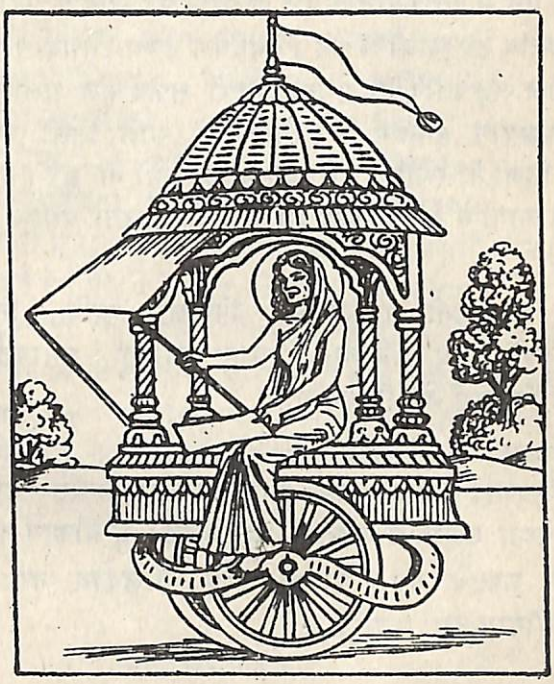

श्री धूमावती

अन्य सामान पत्र पुष्प गन्ध (सफेद रंग की चन्दन पिसी हुई) धूपदीप नेवैद्य आदि सभी सफेद रंग के हों। माला तुलसी की मोती की या आक की लकड़ी की होनी चाहिए। कौवे के परों का प्रयोग भी मार्जन में पूजन में हवन में करें। पान के पत्ते के स्थान पर कौवे के परों का प्रयोग विद्वेषण आदि उग्र कार्यों में करें। विद्वेषण उच्चाटनादि कर्मों में धतूरे के फल बीज जड़ आदि का अथवा कटेरी सफेद फूल वाली के पत्ते जड़ लकड़ी का प्रयोग हवन में करें। हवन में काले तिलों का शाकल्य में सफेद तिलों के स्थान पर उच्चाटनादि कर्मों में करें। दरिद्रता दूर करने जैसे कार्यों में सफेद तिलों का ही प्रयोग करना चाहिए।

विनियोग

अस्य धूमावती महामन्त्रस्य, पिप्पलाद ऋषिः, निवृत्छन्दः, ज्येष्ठा देवता, धूं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ पिप्पलाद ऋषये नमः शिरसि। निवृच्छन्दसे नमः मुखे। श्री ज्येष्ठा धूमावती देवतायै नमः हृदि। धूं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। धूं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास

ॐ धां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ धीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ धूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ धैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ धौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ धः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

ॐ धां हृदयाय नमः। ॐ धीं शिरसे स्वाहा।

ॐ धूं शिखायै वषट् । ॐ धैं कवचाय हुम् ।
ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ धः अस्त्राय फट् ।

ध्यान मन्त्र

विवर्णा चंचला कृष्णा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विमुक्त कुन्तला रूक्षा विधवा विरल द्विजा ।।
काकध्वजरथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा ।
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षी धूमहस्ता वरान्विता ।।
प्रवद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा ।।

अर्थ—भगवती धूमावती का स्वरूप विवर्ण है, चंचल है और दीर्घ काया है, कृष्ण वर्ण है । मैले फटे वस्त्र, विधवाओं जैसा वेश है खुले हुए रूखे केश हैं । काकपक्षी (कौआ) की ध्वजा वाले रथ में बैठी है । ढीले ढाले लटके हुए स्तन विरल दंतावली है, सूप जैसे हाथ रूखे नेत्र हैं । दरिद्रता की देवी भक्तों को वर तथा अभय मुद्रा में बैठी हैं । रोग शोक कलह गरीबी के नाश के लिए मां धूमावती का ध्यान व नमस्कार करता हूं ।

मूल मन्त्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः ।

धूमावती कवच

ॐ धूं बीजम् मे शिरः पातु धूं ललाटं सदाऽवतु ।
धूमा नेत्रयुग्मं पातु वती कर्णौ सदाऽवतु ।।१।।
दीर्घा तूदरमध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा ।
शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी ।।२।।

मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम् ।
सर्वविधाऽवतु कण्ठं विवर्णा बाहु युग्मकम् ॥३॥
चञ्चला हृदयं पातु धृष्टा पार्श्वे सदाऽवतु ।
धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा ॥४॥
प्रबद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता देवीं भयदा कलह प्रिया ॥५॥
सर्वांगे पातु मे देवी सर्वशत्रु विनाशनी ।

८. बगलामुखी साधना

दस महाविद्याओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध प्रचलित प्रभावी साधना बगलामुखी देवी की है। एक वक्त्र महारुद्र की शक्ति बगलामुखी देवी है।

वेदों में इनका नाम बल्गा मुखी दिया है परन्तु निरुक्त क्रमानुसार जैसे हिंस का सिंह बन जाता है मतलब को मतबल कह देते हैं वैसे ही बल्गा का बगला हो गया है। यह बगला जैसे मुख वाली देवी नहीं है। इस शक्ति की आराधना करने वाला मनुष्य अपने शत्रु को मनमाना कष्ट पहुंचा सकता है और अपने ऊपर आये कष्टों का निवारण भी कर सकता है। यों तो बगलामुखी देवी की उपासना सभी कार्यों में सफलता प्रदान करती है परन्तु विशेष रूप में, युद्ध में वाद-विवाद में शास्त्रार्थ में मुकदमे में प्रतियोगिता में विजय प्राप्त करने के लिए, शत्रु को वश में करके विजय प्राप्त करने के लिए अधिकारी को अनुकूल करने के लिए कोई आप पर अकारण अत्याचार कर रहा हो तो उसको रोकने, सबक सिखाने के लिए, बगलामुखी का अनुष्ठान सबसे उपयुक्त समझा जाता है। असाध्य रोगों से छुटकारा पाने के लिए, बन्धन मुक्त होने के लिए संकट से उद्धार पाने के लिए, नवग्रहों की शान्ति के लिए भी यह मन्त्र-राज महान् शक्तिशाली है।

निजाम हैदराबाद मुसलमान होते हुए भी भगवती बगलामुखी में पूर्ण श्रद्धा रखते थे। उनके यहां भगवती का पाठ पूजन करने के लिए कई पीढ़ियों तक ब्राह्मण परिवार नियुक्त रहा।

मन्त्र महार्णव के अनुसार इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लाख मन्त्र का है। अन्य तन्त्र ग्रन्थों में सवा लाख बताया है। मेरुतन्त्र के अनुसार यह मन्त्र दस हजार जप करने पर ही सिद्ध हो जाता है। नित्य नियमित संख्या में ही मन्त्र का जप करना चाहिए। दशांश हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण कन्या भोजन कराके पूरा पुरश्चरण २१ दिन में सरलता से हो सकता है।

मन्त्र प्रयोग

बगला मन्त्र का सवा लाख जप करके उसका दशांश हवन करें। हवन में दूधमिश्रित तिल व चावल से हवन करने से धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

मंत्र का ४ लाख जप करके दशांश हवन अशोक तथा करवीर (कनेर) के पत्तों द्वारा करें तो सन्तान सुख अवश्य प्राप्त होता है।

मंत्र का सवा लाख जप करने के बाद कुम्हार के चाक की मिट्टी चार-चार अंगुल अरण्ड (रेंडी या अण्डी) की लकड़ी और मीठा लाजा (शहद चीनी से मीठा बनाया भुने चावल का लाजा) द्वारा हवन करने से सब रोग दूर हो जाते हैं।

मन्त्र का चार लाख जप करके दशांश हवन गुग्गुल और तिल द्वारा करने से जेल के बन्धन से भी मुक्त हो जाता है।

मंत्र का दस हजार या सवा लाख जप करके शहद घी शक्कर मिला तिल या सरसों से हवन करने से अभीष्ट व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

तेल में भिगोकर नीम की पत्तियों के हवन से विद्वेषण, तेल नमक हल्दी के हवन से स्तम्भन होता है।

साधक को चाहिए कि वह देवी के चित्र को एक चौकी पर पूर्व की ओर मुख करके स्थापित करें। षोडशोपचार विधि से पूजन करें। शुद्ध

श्री पीताम्बरा (बगला)

पवित्र स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करें। वस्त्र, आसन, माला, गन्ध अक्षत, पुष्प, फल आदि सभी पीले रंग के होने चाहिए।

पूजा में बगला यन्त्र की स्थापना भी अवश्य करनी चाहिए। केसर, चन्दन या हल्दी से तिलक करें। शान्ति कर्मों के लिए ईशान कोण की ओर बैठकर मन्त्र जप करें, वशीकरण के लिए उत्तर की ओर, स्तम्भन के लिए पूर्व दिशा, विद्वेषण के लिए नैऋत्य कोण, उच्चाटन में वायव्य कोण, मारण में अग्नि कोण, धन-प्राप्ति के लिए पश्चिम दिशा की ओर मुख करके जप करना चाहिए। पुरश्चरण काल में भोजन भी पीले रंग का ही करना होता है। केसर मिला दूध, पीले रंग के फल, बेसन के लड्डू, केसर मिली खीर, बूंदी, पूड़ी, हल्दी वाले शाक सब्जी ग्रहण करें। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन, भूमि पर शयन करें, कम बोलें या मौन व्रत रखें। आरम्भ शुभ मुहूर्त पर्वकाल में करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री बगलामुखी महा मन्त्रस्य, नारद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री बगलामुखी महाविद्या देवता, ह्रीं बीजम्, स्वाहा शक्ति, हिलरीं कीलकं, ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप छन्दसे नमः मुखे।
बगलामुखी देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। हिलरीं कीलकाय नमः नाभौ।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास

ॐ ह्रीं अगुष्ठाभ्यां नमः। बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः।
सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः।

श्री बगलामुखी यन्त्रम्

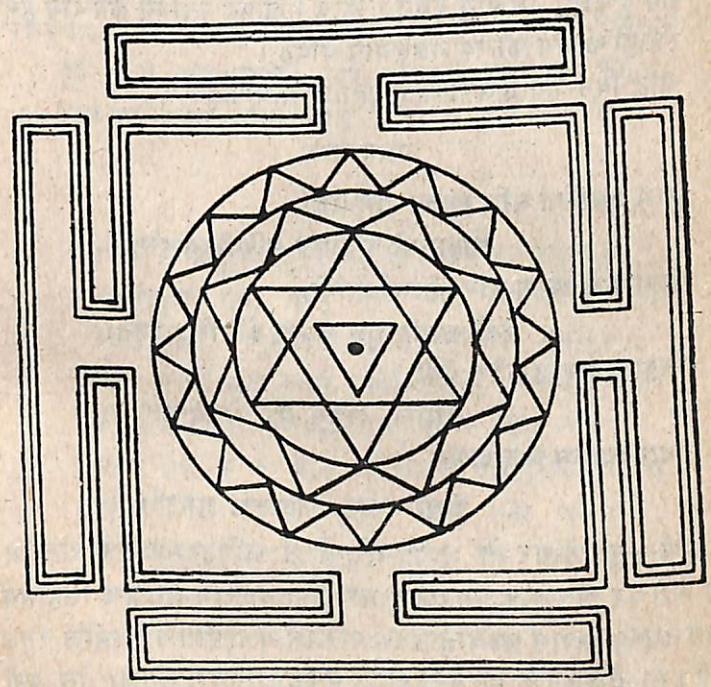

वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः।
जिव्हां कीलय कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
बुद्धि विनाशय हिलरीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास

ॐ हिलरीं हृदयाय नमः। बगलामुखी शिरसे स्वाहा।
सर्व दुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तम्भ्य कवचाय हुम्।
जिह्वां कीलय कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्।
बुद्धि विनाशय हिलरीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान मन्त्र

मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेद्यां,
सिंहासनो परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बरा भरण माल्य विभूषितांगीं,
देवीं नमामि धृत मुद्गर वैरिजिह्वाम्॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं,
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥

अर्थ—सुधासागर के मध्य मणियों से जड़ित मण्डप में रत्नों से बनी वेदी पर सुवर्ण के सिंहासन पर देवी विराजमान हैं। सिंहासन मण्डप तथा आसपास का वातावरण परिवेश सभी पीत वर्ण (पीले रंग) का है। मां पीले रंग के ही वस्त्र साड़ी मुकुट आभूषण माला पीत वर्ण के ही रत्नों से जड़े सुवर्ण के आभूषण पहने हुए हैं। वैरी दुश्मन दानव राक्षस की जिह्वा को बायें हाथ से पकड़ कर खींच रही हैं और दाहिने हाथ से राक्षस वैरी को मुद्गर जैसे शस्त्र से मार रही हैं, पीट रही हैं,

आघात कर रही हैं। ऐसी दो भुजा वालीदेवी भगवती बगलामुखी को नमस्कार है। (भगवती बगला मुखी का ही दूसरा नाम पीताम्बरा है क्योंकि उन्हें पीली वस्तुयें ही प्रिय हैं।)

मूल मन्त्र

३६ अक्षर का मन्त्र है और उसके स्वरूप का वर्णन तन्त्र शास्त्र में जिस प्रकार किया गया है उससे शुद्ध मन्त्र निम्न प्रकार से बनता है—

ॐ ह्लरीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं
स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लरीं ॐ स्वाहा

बगलामुखी कवच

शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम्।
सम्बोधन पदं पातु नेत्रे श्री बगलानने ॥१॥
श्रुतौ मम रिपूम्यात् नासिकान्नाशय इमम्।
पातु गण्डौ सदा मामै श्वर्याण्यन्तन्तु मस्तकम् ॥२॥
देहिद्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम।
कण्ठ देशं स नः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम् ॥३॥
कार्य साध्य द्वन्द्वन्तु करौ पातु सदा मम।
मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ॥४॥
अष्टाधिक चत्वारिंशद्दण्डाढ्या बगलामुखी।
रक्षा करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ॥५॥
ब्रह्मास्त्रारण्यो मनुः पातु सर्वांग सर्व सन्धिषु।
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ॥६॥
ॐ ह्लरीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु।
मुखीवर्णद्वयं पातु लिंगं मे मुष्कयुग्मकम् ॥७॥

जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम्।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णा परमेश्वरी ॥८॥
जंघायुग्मे सदा पातु बगला रिपु मोहिनी।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ॥९॥
जिह्वा वर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च।
पादोर्ध्वे सर्वदा पातु बुद्धि पादतले मम ॥१०॥
विनाशय पदं पातु पादांगुल्योर्नखानि मे।
ह्लरीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धीन्द्रियवंचासि मे ॥११॥
सर्वांगं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु।
ब्राह्मी पूर्व दले पातु चाग्नेयां विष्णुवल्लभा ॥१२॥
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ॥१३॥
वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु।
ऊर्ध्वम्पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ॥१४॥
इत्यष्टौ शक्तयः पातु सायुधाश्च सवाहनाः।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ॥१५॥
श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु।
द्विभुजा रक्तवसना सर्वाभरण भूषिता ॥१६॥

९. मातंगी साधना

शिव की महाशक्ति भगवती मातंगी देवी है। भगवती मातंगी देवी की उपासना किसी भी शुभ कार्य के लिए की जा सकती है। विशेष रूप से यह विद्या की देवी है। इसकी पूजा से वाक् सिद्धि तक प्राप्त हो जाती है। सिद्ध होने पर साधक किसी से शास्त्रार्थ में, वाद विवाद में नहीं हार सकता, सच्चे मुकदमे लेने वाले वकील को, संगीत सीखने वाले विद्यार्थी को देवी की उपासना अजेय वकील तथा प्रवीण संगीतज्ञ बना देती है। शास्त्र ज्ञान वेद वेदांग ज्योतिष निरुक्त वैद्यक भैषज शास्त्र कथा वाचक प्रवचन कर्ता ग्रन्थकार काव्य रचना करने की उत्तम शक्ति प्राप्त होती है। जड़मति को भी विद्वान बना देती है। परीक्षा में प्रथम आने के लिए प्रतियोगिता साक्षात्कार में सफल होने के लिए देवी का सिद्ध मन्त्र काम आता है।

किसी शुभ मुहुर्त में पर्वकाल में ग्रहण काल में कृष्ण पक्ष की अष्टमी, अमावस्या होली दिवाली शिव चौदश की रात्रि को साधना का आरम्भ करना चाहिए। काठ की चौकी पर देवी के चित्र को पूर्वाभिमुख रख स्वयं पवित्र होकर शुद्ध वस्त्र पहन कर उत्तराभिमुख बैठें। विनियोग न्यास ध्यान कवच आदि का पाठ कर मां के स्वरूप का अन्तर में ध्यान करते हुए मन्त्र का जप करें। न्यास कवच आदि नित्य न पढ़ सकें तो आरम्भ में अन्त में हवन तर्पण मार्जन वाले दिन मूल या अर्थ अपनी भाषा में पढ़ लेना चाहिए।

इस मन्त्र का पुरश्चरण सवा लाख जप का है। दशांश हवन पूरा न कर सकें तो उसके स्थान पर दस गुना जप करें। इस प्रकार यदि ११०

माला नित्य करें तो २१ दिन में और ५५ माला से ४१ दिन में पुरश्चरण हो जाता है। ब्राह्मण कन्याओं का पूजन करें, भोजन दक्षिणा दें। तर्पण मार्जन विधि बताई जा चुकी है। पूजा में सफेद रंग की वस्तुओं का प्रयोग अधिक करें। घी का दीपक सफेद बाती सहित हो। श्वेत पुष्प, श्वेत या पीले फल, आम, पीपल, अशोक, वट वृक्षों की समिधा शक्कर तिल चावल घी धूप हवन सामग्री में प्रयोग करना शुभ होता है।

विनियोग

ॐ अस्य श्री मातंगी महामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, विराट् छन्दः, श्री मातंगी देवता, ह्रीं बीजम्, हूं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्री मातंगी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमःशिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। श्री मातंगी देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। हूं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास

ॐ ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनाभिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास

ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

श्री मातंगी

ध्यान मन्त्र

श्यामां शुभ्रांशु भालां त्रिनयन कमलां रत्न सिहासनस्थां।
भक्ताभीष्ट प्रदात्रीं सुरनिकर करा सेव्य कञ्जाङ्घ्रि युग्माम्।
नीलाम्भोजांश कान्ति निशिचर निकरारण्य दावाग्नि रूपां।
पाशं खड्गं चतुर्भिर्वर कमल करैः खेटकाञ्चांकुशञ्च।
मातङ्गी मावहन्तो मभिमत फलदां मोदिनीं चिन्तयामि ॥

अर्थ—मातंगी देवी का श्याम वर्ण है। तीन नेत्र हैं। मस्तक पर अर्द्ध चन्द्र धारण किये हुए हैं। चार भुजायें हैं जिनमें खड्ग (तलवार) खेटक, पाश तथा अंकुश धारण किए हुए हैं। रत्न जड़ित सिंहासन पर विराजमान हैं। भक्तों की मनोकामना पूर्ण करती हैं। सुर-असुर सभी पूजा करते है। अग्नि के समान तेजस्वी स्वरूप है। ऐसी श्री मातंगी देवी भगवती का मैं श्रद्धापूर्वक चिन्तन ध्यान पूजन नमस्कार करता हूं।

मूल मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।

मातंगी कवच

शिरो मातंगिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी।
तोडला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम ॥१॥
पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा।
त्रिपुरा पार्श्वयोः पातु गुह्ये कामेश्वरी मम ॥२
ऊरुद्वये तथा चण्डी जङ्घयोश्च हरिप्रिया।
महामाया पादयुग्मे सर्वांगेषु कुलेश्वरी ॥३॥
अंग प्रत्यंगकं चैव सदा रक्षतु वैष्णवी।
ब्रह्मरन्ध्रे सदारक्षेन्मातंगी नाम सास्थिता ॥४॥

१०. कमला साधना

श्री भगवान विष्णु की शक्ति महालक्ष्मी है परन्तु दस महाविद्याओं में जो कमला नाम की महाविद्या है वह सदाशिव पुरुष की शक्ति है। इनकी पूजा-उपासना से वैभव सम्पत्ति धन धान्य, यश कीर्ति की प्राप्ति होती है। इसलिए कमला नाम की दसवीं महाविद्या की साधना अवश्य करनी चाहिए।

धूमावती व कमला में प्रतिस्पर्धा है। धूमावती दरिद्रता की देवी है कमला लक्ष्मी की, धूमावती अवरोहिणी है कमला रोहिणी। धूमावती ज्येष्ठा है कमला कनिष्ठा है। वह आसुरी है यह दिव्या है।

कमला देवी की उपासना आरम्भ करने के लिए कमलादेवी का चित्र सामने रख लें। घर के एक कोने में पूजा स्थान बनाया जा सकता है। पूजा का आरम्भ किसी शुभ मुहूर्त पर्व समय शुभयोग में आरम्भ करें। चित्र की मानस उपचार षोडशोपचार या पंचोपचार से पूजा करें। विनियोग व न्यास संस्कृत या हिन्दी में कर लें। नित्य पूजा में भगवती के चित्र का ध्यान करें और मंत्र जप आरम्भ करें। गिनती के लिए माला से जप करें और जितनी संख्या का नियम बनावें वह नियम अवश्य करें। पुरश्चरण में असली प्रभाव मन्त्र जप का होता है। इस देवी के मन्त्र की संख्या सात लाख की है तो सात लाख जप ७० हजार हवन, ७ हजार तर्पण, ७०० मार्जन, ७० ब्राह्मण भोजन कराने से पूरा पुरश्चरण होता है। जो इतनी सामर्थ्य नहीं रखते वे सात लाख जप करके १०००-२००० हवन ७०० तर्पण ७०० मार्जन १ या ३ ब्राह्मण कन्याओं का भोजन पूजन करा सकते हैं। वैश्य कन्याओं का

भोजन उत्तम रहता है। जितनी संख्या में हवन कम हो उसका दो गुना जप करके कमी पूरी की जा सकती है।

माला, आसन, वस्त्र व पूजा की सभी सामग्री लाल रंग की होनी चाहिए। पहनने के वस्त्र भी लाल होने चाहिए।

कवच में देवी से अपने शरीर के सभी अंगों की रक्षा करने की प्राथना की जाती है और मां के विभिन्न नामों को गुणों व कर्म के अनुसार प्रणाम करके अनुष्ठान को बाधारहित पूरा करने की याचना की जाती है।

जितना जप अभीष्ट है उस संख्या को अनुष्ठान के दिनों से विभाजित करके जो उपलब्धि हो उतना जप नित्य करना चाहिए।

भगवती का चित्र चौकी पर रखकर ध्यान करें। देवी के चित्र का मुख पूर्व या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए, स्वयं भी उत्तर की ओर मुख करके बैठें। घी का दीपक जलावें ! कमल पुष्प या लाल पुष्पों से पूजा करें नेवेद्य मिष्ठान का हो। स्वयं के वस्त्र लाल हों तो उत्तम है। पूजा में बिना सिले वस्त्र पहनने का विधान है जैसे धोती चादर गमछा आदि। लाल रंग के ऊनी सूंती आसन पर बैठें। पद्मासन सिद्धासन उत्तम आसन है। माला रुद्राक्ष की, तुलसी की, लाल चन्दन की लाल मनकों की उत्तम रहती है। पूजा अनुष्ठान काल में यम नियम से ब्रह्मचर्य से रहें। मांस मदिरा का सेवन न करें। जमीन पर सोयें। जहां तक हो सके मौन व्रत रखें या कम से कम बात करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री महालक्ष्मी मन्त्रस्य भृगुऋषिः, निवृच्छन्दः, श्री महा लक्ष्मीर्देवता, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, श्री लक्ष्मी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

श्री कमला

ऋष्यादिन्यास :

ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ श्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ श्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास :

ॐ श्रां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ श्रूं शिखायै वषट्। ॐ श्रैं कवचाय हुम्।
ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मया मृतघटै रासिच्यमानां श्रियम्॥
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम।
क्षौमा बद्ध नितम्ब बिम्ब ललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

ध्यान मन्त्र का अर्थ—महालक्ष्मी कमला देवी की आभा काञ्चन यानी स्वर्ण जैसी है। मां की चार भुजायें हैं। हिमालय की उपत्यका में बैठी हुई है। दोनों ओर दो हाथी अपनी सूढ़ों में स्वर्णकलशों के अमृत जैसा जल भरे हुये माता का अभिषेक कर रहे हैं। देवी स्वर्ण के आभूषण पहने हुये है। कुण्डल, किरीट, करधनी, मुकट, रत्न जड़ित हैं और स्वर्ण के हैं। कमल पुष्पों का आसंन है। वर अभय मुद्रा है। ऐसी देवी स्वरूपा महाविद्या कमला की मैं वन्दना करता हूं।

मूल मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसौः जगत्प्रसूत्यै नमः।

कमला कवच

ऐंकारो मस्तके पातु वाग्भवां सर्वसिद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुयुग्मे च शांकरी॥१॥

जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि।
ओष्ठाधरे दन्तपङ्क्तौ तालुमूले हनौ पुनः ॥२॥
पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्री विष्णुरूपिणी।
कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती ॥३॥
हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः।
पृष्ठ देशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा ॥४॥
उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघाद्वये पुनः।
जानुचक्रे पदद्वन्द्वे घुटिकेऽङ्गुलिमूलके ॥५॥
स्वधातु प्राणशक्त्यात्मसीमन्ते मस्तके तथा।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः ॥६॥
पुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु।
ऋद्धिः पातु सदादेवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा ॥७॥
वाग्भवा सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी।
रमा पातु महादेवी पातु माया स्वराड् स्वयम् ॥८॥
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ॥९॥
शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा।
भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदाऽवतु ॥१०॥
त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु।
पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु ॥११॥
नवदुर्गाः सदा पातु कामाक्षी सर्वदाऽवतु।
योगिन्यः सर्वदा पातु मुद्राः पातु सदा मम ॥१२॥
मात्रा पातु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः।
सर्वत्र सर्व कार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा ॥१३॥
पातु मां देव देवदेवी च लक्ष्मीः सर्व समृद्धिदा।

४ | वशीकरण के तान्त्रिक प्रयोग

वशीकरण का सीधा अर्थ होता है वश में करना। केवल काम-वासना के वशीभूत होकर ही वशीकरण की आवश्यकता नहीं होती, दूसरी परिस्थितियों में भी इसकी आवश्यकता रहा करती है। कुछ एक परिवारों में ऐसे हालात बन जाते हैं कि पति-पत्नी के बीच वैमनस्य उत्पन्न होकर उनका गृहस्थ-जीवन नरक तुल्य बन जाता है। कई बार पारस्परिक वैमनस्य को लेकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाली शत्रुता के बीज बो दिये जाते हैं। कई बार किसी सरकारी अधिकारी के एकांगी और रूढ़िवादी दृष्टिकोण के कारण उसके अधीनस्थ कर्मचारी भयातुर रहते हैं। ऐसी अनेक समस्याओं के कारण हम अनावश्यक तनाव, कुण्ठा, द्वेष आदि से पीड़ित रहा करते हैं।

वशीकरण इन परिस्थितियों से हमें त्राण देकर, हमारे जीवन को अनावश्यक विषमताओं से बचाता है। वशीकरण यद्यपि अभिचार कर्म है, किन्तु उपयोग की दृष्टि से ही। स्व-स्वार्थपूर्ति, वह भी कामवासना से प्रेरित होकर किया गया वशीकरण, निन्दित कर्म माना जाता है। वात्स्यायन ने परस्त्री के वशीकरण को घोर अपराध कहा है क्योंकि इससे सामाजिक विशृंखलता तो फैलती ही है, साथ-ही-साथ जिस स्त्री पर यह प्रयोग किया जाता है वह भी मार्गच्युत होती है और प्रयोगकर्त्ता भी पाप का भागी होता है।

इतने पर भी काम कुण्ठा इतनी भयावह स्थिति है कि इससे अनेक दैहिक और मानसिक रोग पैदा हो जाते हैं। काम कुण्ठाग्रस्त व्यक्ति

की रातों की नींद और दिन का चैन हराम हो जाता है। शास्त्रकारों ने कामोन्माद की दस अवस्थाएं बतलाई हैं जिनमें नवीं अवस्था पागलपन और दशवीं मृत्यु है। जीवन अमूल्य है। ऐसी अवस्था में जब व्यक्ति स्वयं पर अंकुश न रख सके, जीवन-मरण का प्रश्न उठ खड़ा हुआ हो तो वशीकरण का प्रयोग कर लेना ही जीवन-रक्षा का एकमात्र उपयोग होता है।

हम समाज में स्नेह और अपनेपन का प्रसार करने के लिए या द्वेष के पंक को धोने के लिए वशीकरण करते हैं तो यह पाप नहीं पुण्य ही कहा जायेगा। निग्रह और अनुग्रह नाम की सिद्धियां वशीकरण के स्तर हैं। निग्रह का अर्थ है सामने वाले व्यक्ति की विपरीतगामी विचार-तरंगों को रोकना तथा अपने नियंत्रण में लेना। अनुग्रह का अर्थ होता है प्रसन्नता, कृपा, आभार।

तन्त्र शास्त्रों में वशीकरण क प्रयोग विभिन्न शीर्षक लगा कर विविधता का दृष्टिकोण रख कर रचे गये हैं। जैसे राज वशीकरण (राज्याधिकारी को वश में करना), स्वामी वशीकरण, नौकर वश करण, पति वशीकरण, पत्नी वशीकरण। नारी वशीकरण प्रयोगों बहुलता तन्त्र शास्त्र में नारी वर्ग के विस्तृत वर्गीकरण के कारण मिलती है। कन्या, राजदारा, स्त्री, वेश्या जैसे वर्गीकरण करके इनके भिन्न भिन्न वशीकरण प्रयोग दिये हैं।

सर्वजन वशीकरण प्रयोग

मन्त्र—ॐ क्लीं नमो नारायणाय सर्वलोकान्मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र को किसी पर्व काल या ग्रहण के समय पुरश्चरण पद्धति से सिद्ध कर लें तथा नीचे लिखे किसी प्रयोग को उपरोक्त मंत्र पढ़ कर काम में लाएं तो सबका वशीकरण होता है। मन्त्रों को सिद्ध करने की पुरश्चरण पद्धति अत्यन्त विस्तार से दी गई है। होली, दिवाली, शिवरात्रि, ग्रहण काल, अमावस्या, रात्रि का तृतीय प्रहर, १२ से ३ बजे, का समय, मन्त्र सिद्धि के लिए अधिक उपयुक्त होता है। मन्त्र पढ़कर फूंक मारने से वह वस्तु अभिमन्त्रित हो जाती है।

१. पुष्य नक्षत्र में लाई गई बड़ वृक्ष की जड़ को उपरोक्त मन्त्र से हवन करके जो यज्ञ भस्मी प्राप्त हो उसे पानी में सान कर उससे तिलक करके जिसके सम्मुख जायें वह वशीभूत होगा।

२. पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा (सांठी) की जड़ लेकर उपरोक्त मन्त्र से २१ बार अभिमान्त्रित करके भुजा में बांध ली जाये तो वह सर्वत्र पूजनीय हो जाता है।

३. अपामार्ग (इसे औंघा, चिरचिटा, अजाझारा भी कहते हैं) की जड़ को काली गाय के दूध में पीसकर जो व्यक्ति तिलक लगाता है वह सबको वश में कर सकता है।

४. रविवार पुष्य नक्षत्र में सहदेवी की जड़ लाकर छाया में सुखा लें। इसका चूर्ण कर पान में जिसे खाने को दिया जायेगा वह वश में होगा। खिलाने से पहले चूर्ण को उस व्यक्ति का नाम लगा कर मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये। नाम मालूम न हो तो उसको ध्यान में रखकर ही मन्त्र पढ़ लेना चाहिये।

५. गोरोचन और सहदेवी की जड़ को पानी में घिस कर मस्तक पर तिलक करने से वशीकरण होता है।

६. पुष्यार्क में गूलर वृक्ष की जड़ को लेकर पानी में घिस कर तिलक लगाने वाला सबका प्यारा होता है। सूर्य पुष्य नक्षत्र में हो तब ही जड़ लेकर आवें।

७. सफेद चिरमिटी (घूंघची) को लेकर छाया में सुखा कर कपिला (काले रंग की) गाय के दूध में पीस कर तिलक लगाने से वशीकरण होता है।

८. सफेद आक की जड़ लेकर छाया में सुखाकर काली गाय के दूध में घिस कर तिलक लगाना भी वशीकरण करता है।

९. बेलपत्र, बिजौरा नींबू को, बकरी के दूध में पीस कर यदि तिलक किया जाये तो सर्वजन वशीभूत होते हैं।

१०. घी ग्वार (ग्वारपाठा) की जड़ और भांग के बीज को पीस कर तिलक लगाना भी सबका वशीशरण करता है। उपरोक्त सभी प्रयोगों में वस्तुओं को लाते समय कोई टोक दे, प्रश्न कर दे तो दौबारा बिना टोके लाना चाहिए। पुष्य नक्षत्र सर्वोत्तम होता है।

स्त्री वशीकरण के प्रयोग

मन्त्र—ॐ क्लीं नमः कामाक्ष्यै देव्यै अमुकी मे
मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र की सिद्धि सवा लाख जप की मानी गई है। प्रयोग करते समय जहां अमुकी लिखा है वहां साध्य स्त्री का नाम लिया जाना चाहिये। यदि किसी अन्य व्यक्ति के लिए करना है तो मम के स्थान पर उसका नाम लिया जाना चाहिये। नीचे लिखे प्रयोग मन्त्र सहित करने से इच्छित फल मिलते हैं।

१. रविवार को काले धतूरे के फूल, डाल, पत्ते एवं जड़ को लेकर पीसकर उसमें समान भाग केसर और गोरोचन मिलाकर तिलक करके जिस साध्य स्त्री के सम्मुख जाया जायेगा वह वशीभूत होगी। उपरोक्त

मन्त्र उस स्त्री के नाम से सिद्ध करने के बाद तिलक प्रक्रिया में बराबर मन्त्र जाप चलता रहना चाहिये।

२. काकलहर (कौआ गौंडी—काकजङ्घा बूटी) वच, कूट, इन तीनों को समभाग लेकर अपना वीर्य तथा अनामिका उंगली का रक्त मिला कर जिस किसी को खाने में दिया जायेगा वह स्त्री वश में होकर दासवत् व्यवहार करेगी।

तन्त्र में किसी वस्तु को घृणा से नहीं देखा जाता। तान्त्रिक प्रयोग जो वशीकरण के निमित्त किये जाते हैं उनमें उन वस्तुओं का प्रयोग प्रायः किया जाता है जिन्हें हम गन्दा मानते हैं जैसे—थूक, पसीना, वीर्य आदि। तन्त्र मार्ग की श्रेष्ठतम अवस्था है घृणा रहितता। किसी अघोरी को देखो। उसके लिए श्मशान और महल एक जैसे हैं। वह जैसे स्वाद से हलवा खाता है वैसे ही सड़े-गले मांस को। उसके लिए इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

३. चिताभस्म, वच, कूठ, केसर और गोरोचन का चूर्ण करके सिद्ध मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके उस स्त्री पर डाला जाये जिसके नाम से मन्त्र सिद्ध किया है वह तत्काल वशीभूत होगी। चूर्ण का उसके शरीर से स्पर्श हो जाना आवश्यक है।

४. शुक्रवार की रात को लघुशंका से निवृत्त होकर एक छोटी इलायची का मुख खोल कर अपने लिंग के छिद्र के ऊपर रख कर बांध-कर रात्रि भर रखें। रात में १२ से ३ तक मन्त्र का जाप करें। प्रातः खोल कर निकाल लें। स्त्री को खिलाने से पहले २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। नाम लगाकर या नाम मालूम न हो तो उसके स्वरूप का ध्यान करके मन्त्र पढ़ें।

५. किसी मंगलवार को अपने हाथों और पैरों के बीसों नख लें। रविवार को उन्हें जलाकर भस्म बना लें। फिर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को खिला दें वह यावत् जीवन वशीभूत रहती है।

६. शनिवार को स्त्री के बायें पैर के नीचे की मिट्टी लेकर उसकी पुतली बनावें तथा उस पुतली के केश स्थान पर स्त्री के बाल लगायें पुंतली के भग स्थान पर अपना वीर्य लगायें। इस पुतली को नीले वस्त्र में लपेट कर, सिन्दूर लगा कर साध्य स्त्री के आने-जाने के रास्ते में दबा दें। इसको लांघते ही साध्य स्त्री साधक पुरुष पर तन-मन से आसक्त होकर दास बन जायेगी। परन्तु उस स्थान पर साधक का साध्य स्त्री को दिखाई देना जरूरी है।

७. मंगलवार को पान के रस में तालमखाना और मैनसिल मिला कर तिलक लगावें और साध्य स्त्री को दर्शन दें तो उसे वशीभूत कर सकते हैं। उस समय मन्त्र जाप करें और किसी प्रकार अपनी ओर ध्यान आकर्षित करें ताकि वह आपका मुख व तिलक देख सके।

८. गोरोचन से कमल के पत्ते पर साध्य स्त्री का नाम लिखने तथा इसे पीस कर तिलक लगाने से वह स्त्री वशीभूत होती है। उपरोक्त विधि के समान मन्त्र जप व ध्यानाकर्षण दर्शन होना जरूरी है।

अन्य मन्त्र—ॐ क्लीं नमो भगवती मङ्गलेश्वरी सर्वसुखरंजिनी सर्वधर्म मातङ्गी अमुक कुमारी भे लघु लघु वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र पर्वकाल में जप कर सिद्ध कर लें। फिर नीचे लिखे सहदेवी के प्रयोग काम में लावें। (जप संख्या सवा लाख, पुरश्चरण अलग विधि अनुसार)

१. रविवार को पुष्य नक्षत्र आने पर शनिवार के दिन सहदेवी को निमन्त्रण दे आयें कि मैं कल तुम्हें लेने आऊंगा। फिर दूसरे दिन रविवार को सहदेवी की जड़ उखाड़ लायें। कोई टोके नहीं (तान्त्रिक औषधि लाने के लिए विधि अनुसार कार्य करना चाहिये)। क्वांरी कन्या के काते सूत में उस जड़ को बांध कर जिस औरत के कटि प्रदेश पर

बांध दिया जायेगा वह वशीभूत होगी। कटि प्रदेश पर बंधवाने का प्रबन्ध न हो सके तो शरीर के किसी अंग से स्पर्श कराने पर भी फल होगा।

२. पूर्वोक्त विधि से सहदेवी की जड़ लाकर उसे मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करें। इस जड़ को मुख में रख कर जिस स्त्री से बात की जायेगी वह वशीभूत होगी।

३. कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को व्रत रखें तथा सहदेवी की जड़ को विधान पूर्वक उखाड़ लायें यानी एक दिन पहले निमन्त्रण दें। उखाड़ते समय कोई टोके नहीं। जड़ को छाया में सुखाकर चूर्ण करें, इस चूर्ण को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस साध्य स्त्री को खिला दिया जायेगा वह साधक के वशीभूत होगी।

स्त्री वशीकरण के साबर मन्त्र

"ॐ नमो काला भैरूं, काली रात, काला चाल्या आधी रात, काला रेत मेरा वीर, पर नारी के राखे सीर, बेगी जा छाती धर ला, सूती हो तो जगाय ला, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

होली, दिवाली, ग्रहण या पर्वकाल में इस मन्त्र को पुरश्चरण पद्धति से सिद्ध कर लें। होली, दिवाली, ग्रहण या रविवार को पुष्य नक्षत्र में अरण्ड की लकड़ी को एक ही झटके में तोड़ लावें। उसका काजल बनावें। इस काजल पर मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री के शरीर पर कहीं भी लगा दिया जायेगा वह वशीभत होगी। यह काजल स्त्री के शरीर, कपड़े कहीं पर भी लगाया जा सकता है।

"जल मोहूं, थल मोहूं, जंगल की हिरणी मोहूं, बाट चलंता बटोही मोहूं, कचहरी बैठा राजा मोहूं, पीढ़ा बैठी रानी मोहूं मोहनी मेरा नाम,

मोहूं जग संसार, तरा तरीला तोतला तीनों बसैं कपाल, मस्तक बैठी मात के दुश्मन करूं पामाल, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए किसी शनिवार से प्रारम्भ करके इक्कीस दिन पर्यन्त एक सौ चवालिस मन्त्र आधी रात के समय नित्य जपें, हर मन्त्र के साथ अग्नि पर गूगल की आहुति देते जायं। घी का दीपक जला कर फूल बताशे हवन में अर्पित करने चाहिये। जब प्रयोग करना हो तो किसी मिठाई को इस मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके खिला देने से वशीकरण होता है।

"सत्त नाम आदेश गुरु को, लौंग लौंग तू मेरा भाई, चार लौंग ने शक्ति चलाई, पहली लौंग राती माती, दूजी लौंग जोबन जाती, तीजी लौंग अङ्ग मरोड़े, चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े, चारों लौंग जो मेरी लाये अमुकी अमुक के पास चली आये, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

रविवार से प्रारम्भ करके नित्य इकतालीस बार आधी रात के समय मन्त्र जप कर इक्कीस दिन पर्यन्त जपना चाहिये। यह मन्त्र रात्रि काल में ही जपना कारगर रहता है। काली कुतिया के दूध में चार लौंगें भिगोकर अपने वीर्य को इन लौंगों पर लगा कर मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके जिस औरत को ये चारों लौंगें खिला दी जायेंगी वह जीवन पर्यन्त वश में रहेगी।

पुरुष (पति) वशीकरण के प्रयोग

मन्त्र—ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पतिं मे मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

किसी पर्वकाल में मन्त्र को सिद्ध कर लेने के पश्चात् नीचे लिखे

प्रयोग करने से पति वश में रहता है अर्थात् अन्य स्त्री की ओर आकर्षित नहीं होता। कोई अन्य व्यक्ति किसी के लिए करे तो मन्त्र इस प्रकार बनेगा। **ॐ क्लीं महायक्षिण्यै (स्त्री का नाम) पति मे निज पत्नी वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।**

१. अनार का पंचांग (फल, फूल, पत्ते, लकड़ी एवं जड़) तथा सफेद सरसों लेकर जल में पीस कर योनि पर लेप करे तो दुर्भगा स्त्री भी पति को वश में कर सकती है।

२. गोरोचन और मासिक धर्म के रक्त को लेकर केले के स्वरस में मिलाकर जो स्त्री तिलक लगाती है वह पति को वश में कर लेती है।

३. चमेली के फूलों को तिल के तेल में पका कर उस तेल का लेप जो स्त्री अपने काम मन्दिर पर करके पति से सम्भोग कराती है वह पति की अतिशय प्यारी बन जाती है।

४. गोरोचन, मछली का पित्त, मोरशिखा, शहद और घी मिला कर जो स्त्री अपनी योनि पर लेप करके सम्भोग कराती है तो पति सदैव उसका दास बना रहता है। फिर वह किसी भी रूप यौवन सम्पन्ना अन्य स्त्री की इच्छा नहीं करता।

५. नीम की लकड़ी जला कर इससे यदि स्त्री अपने गुप्ताङ्ग को धुआं दे कर रतिक्रिया करावे तो पति वश में रहता है।

६. कांगनी, सौंफ, केशर और वंशलोचन इन सबको घोड़े के मूत्र में पीस कर जो कामिनी अपने रति द्वार पर लेप करके सम्भोग करायेगी वह पुरुष को सदैव वश में रखेगी।

७. जो स्त्री अपने गुप्ताङ्ग पर कपूर और देवदारु के बारीक पिसे छने बुरादे को लेपकर के पति के साथ सहवास करती है उसका पति भूल कर भी किसी अन्य स्त्री की ओर आकर्षित नहीं होता।

८. स्त्री यदि अपने बायें पैर के जूते या चप्पल के बराबर आटा तौल कर किसी भी मंगलवार को उसकी चार रोटी पका कर अपने पति को खिला देती है तो उसका पति उसके वशं में रहा करता है।

९. स्त्री जब रजस्वला हो तो ३ छोटी इलायची का मुख खोलकर कपड़े में बांध ले। कपड़ा बदले तब इलायची नये कपड़े में बांध ले। इस प्रकार ३-४ दिन तक रज इलायचियों में प्रवेश करता रहता है। बाद में रुठे हुए पति को वश में करने के लिए छिलका समेत एक इलायची पीसकर चाय दूध या पान आदि में खिलाने से पति उसके वश में ही रहेगा।

१०. लौंग वशीकरण मन्त्र से (इस प्रकरण में पीछे दिया हुआ है) लौंग अभिमन्त्रित करके अपनी जिह्वा के मल में पीसकर यदि स्त्री पुरुष को खिला देती है तो वह उसका दास बन जाता है।

बिहार की तरफ कुछ जातियों में यह रीति है कि विवाह के दिन २४ घण्टे तक वधू एक सुपारी अपने मुख में रखती है और उसी सुपारी के टुकड़े करके पान में रख कर वर को खिलाया जाता है। सब जानते हैं कि यह रीति है और करनी है। कोई बुरा नहीं मानता।

राज्याधिकारी को वश में करने का मन्त्र

"मैं सरभङ्गी सबका भङ्गी एकण घौल पाऊं, सभी मडामसाना धूना धातु जगती को शीश नवाऊं। मैं हाकिम होवै तो भैंसो करूं, ठाकुर होवै तो मींढ़ो करूं। जो कोई होवै नौ गज ऊंचो नौ गज कर दूं नीचो, लगे फक्कर की टक्कर, उड़ा दूं गिर मेर मक्कर, मोहिनी आय सम्पूर्ण सही, गाड़ी बैठ गोरखनाथ जी आयो आप कही।"

जो साधक इस मन्त्र को सिद्ध करना चाहे वह सूर्य के उदय होने से पहले उठकर स्नानादि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर, धूप या अगरबत्ती जलाकर मन्त्र का सात बार उच्चारण करे। इसी प्रकार तीन सप्ताह करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। अब जिस अधिकारी पर यह प्रयोग करना हो उसके नाम अथवा रूप का मन में विचार करते हुए मन्त्र का इक्कीस बार उच्चारण करें। साध्य अधिकारी साधक के अनुकूल हो जाता है।

५ | आकर्षण के तान्त्रिक प्रयोग

आकर्षण और वशीकरण में बहुत अन्तर है। मान लीजिए आप किसी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना चाहते हैं तो आपको आकर्षण का प्रयोग करना पड़ेगा। यदि उसको अपने आधीन करना चाहते हैं तो वशीकरण का प्रयोग करना अधिक अनुकूल रहेगा। जिन लोगों के साथ हमारा प्रत्यक्ष में कोई सम्बन्ध या सम्पर्क नहीं है उन्हें लुभाने के लिए हमें आकर्षण का प्रयोग करना चाहिये।

मान लीजिए कोई खो गया है, घर से लापता है अथवा नाराज होकर चला गया है—ऐसी अवस्था में आकर्षण का प्रयोग ही किया जाता है। रामायण में रावण ने अहिरावण को आकर्षण के प्रयोग द्वारा ही बुलवाया था। ये सारे प्रयोग जनहित को दृष्टिगत रख कर लिखे गये हैं। परोपकार के निमित्त किये गये प्रयोगों में स्वयं भगवान् सहायक होते हैं। सफलता प्राप्त होने पर किसी भी प्रयोग को अपना प्रभाव जमाने के लिए अथवा शक्ति प्रदर्शन के लिए प्रयोग नहीं करना चाहिये।

मन्त्र—"ॐ क्लीं नमो आदिरूपाय अमुकस्याकर्षण कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को पर्वकाल में पुरश्चरण पद्धति से सिद्ध करके नीचे वाले किसी भी प्रयोग के करने से साध्य व्यक्ति को साधक आकर्षित कर लेता है। अमुक के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिया जाता है। जैसे "ॐ नमो आदि रूपाय रामलालस्य आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।"

१. काले धतूरे के पत्ते के रस में गोरोचन मिलाकर स्याही बनावें। सफेद कनेर की कलम से भोजपत्र (या बिना पालिश वाला कागज) पर ऊपर वाले मन्त्र को लिखें। अमुक की जगह साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। खैर की लकड़ी की आग से उस लिखे को तपायें तो दूर गया व्यक्ति भी आकर्षित होकर लौट आता है।

२. गोरोचन और केसर की स्याही से खोपरा पर उपरोक्त मन्त्र को लिखें, उसे खैर की अग्नि पर तपायें। जिस साध्य व्यक्ति का आकर्षण किया जा रहा हो उसके नाम से तीन सन्ध्याओं तक सावधानी पूर्वक यह प्रक्रिया करनी चाहिए। फिर मन्त्र जप करे तो साधक उर्वशी तक को आकर्षित कर सकता है।

३. अनामिका अंगुली के रक्त से भोजपत्र पर जिस व्यक्ति का मन्त्र सहित नाम लिखकर शहद के बीच में रखकर उसके सम्मुख मन्त्र जपा जायेगा उसका आकर्षण होगा।

४. अर्जुन वृक्ष के बंदे को अश्लेषा नक्षत्र में वृक्ष से तोड़ कर लावें, एवं बकरी के मूत्र में पीस कर जिसके सिर पर डाला जाएगा उसका आकर्षण होगा।

५. जब रविवार को पंचमी तिथि हो तो विधान पूर्वक हुलहुल की जड़ को ले आना चाहिये। इसे मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके पान में रख कर साधक जिसको खिला देगा उसका आकर्षण होगा।

६. जिसका आकर्षण करना हो उसके बायें पैर के नीचे की मिट्टी (धूल) शनिवार को लेकर एक पुतली गिरगिट के (या अपनी अनामिका के) लहू के साथ बना लें। उस पुतली के हृदय-स्थल पर साध्य व्यक्ति के नामाक्षरों को गिरगिट (या अपनी अनामिका) के लहू से लिखें एवं जमीन में गाढ़ दें। उस पुतली के ऊपर नित्य मूत्र त्याग करते रहने से साध्य व्यक्ति साधक की ओर आकर्षित होता है।

७. प्रवासी (गये) व्यक्ति का पहना कपड़ा जो कि धोया न गया हो पर उक्त मन्त्र सहित उसका नाम लिखे तथा अमुक को शीघ्र बुलाओ ऐसा मन-ही मन विचारते हुए उस वस्त्र को चर्खे पर बांध कर चर्खे को उलटा घुमाये तो साध्य व्यक्ति शीघ्र लौट आता है। अथवा साफ कागज पर मन्त्र और प्रवासी व्यक्ति का नाम लिखकर कपड़े में रख कर भारी चीज पत्थर, चक्की, बक्से से दबाकर रखने से भी प्रवासी शीघ्र लौट आता है।

८. आकर्षण के प्रयोग में छत पर बावची की धूप देकर साध्य का ध्यान करने से शीघ्र आकर्षण होता है।

आकर्षण के सावरी प्रयोग

ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र की ग्यारह माला का जप नित्य करना चाहिये। यह प्रयोग ग्यारह दिन तक करने से सिद्ध हो जाता है। इसे किसी भी मंगलवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। उपरोक्त मन्त्र जपने के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र की एक माला का जाप करना चाहिये।

"नमो भगवते रुद्राय रादृष्टि लंपिना हरः स्वाहा।
दुहाई कंसासुर की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

पुरश्चरण करने के पश्चात् मन्त्र सिद्ध हुआ या नहीं, इसके जानने की विधि यह है कि किसी सरकण्डे को लेकर बीच में से चीर लें (पूरा नीचे तक नहीं, नीचे वाला सिरा मिला रहे) चिरे हुए भागों को अलग-अलग करके साफ चिकने फर्श पर रख दे। अब साधक को चाहिये कि वह बिनौले, सरसों और चूहे के बिल की मिट्टी लेकर मन्त्र

का उच्चारण करता हुआ इन वस्तुओं को उस सरकण्डे पर फेंके। यदि वे दोनों सिरे मिल जाते हैं या मिलने की चेष्टा करते हैं तो मन्त्र को सिद्ध समझ लिया जाना चाहिये। ऐसा न हो तो प्रयोग को दोबारा करना चाहिये।

मन्त्र सिद्ध होने के पश्चात् साधक जिसका चाहे आकर्षण कर सकता है। जिस साध्य व्यक्ति का आकर्षण करना हो उसका पहना कपड़ा जो कि धुला न हो अर्थात् मैला हो या चित्र लेकर उन पर ऊपर वर्णित वस्तुओं को मन्त्र पढ़ कर फेंके। यह प्रयोग उन पर अधिक कारगर होता है जो भाग गये हैं, विदेश में जाकर बस गये हैं या रूठ कर चले गए हैं।

२. नीचे दिया गया सावरी प्रयोग अतरमोहिनी के नाम से विख्यात है। इसको सिद्ध करने की विधि यह है कि किसी वृहस्पतिवार से आरम्भ करें। एक शीशी में इतर लेकर नित्य एक माला का जप करना चाहिये। प्रत्येक मन्त्र के पश्चात् उस शीशी पर फूंक मारते रहना चाहिये। इक्कीस दिन में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसकी सिद्धि की पहचान यह है कि शीशी का इतर चक्कर खाता दिखलाई पड़ेगा। यदि ऐसा न हो तो प्रयोग को फिर किया जाये। निश्चय से प्रयोग सफल रहेगा।

"अलहम्दो गवानी वो मेरे पर हो दिवानी, जो नहीं दिवानी तो सय्यद कादर अब्दुल जीलानी चुट्टा पकड़ कर करो दिवानी।"

यह इतर जो कोई सूंघेगा या जिसके कपड़ों पर लगा दिया जायेगा वह आकर्षित होगा।

३. **ॐ कां हां हूं**

दीपावली या ग्रहण में इस मन्त्र को ११०० बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। जब किसी प्रयोजन के लिए किसी व्यक्ति के पास जा रहे हों तो मार्ग में मन-ही-मन इस मन्त्र का जप करते रहने से वह

मनुष्य जप करने वाले पर आकृष्ट होकर उसकी इच्छानुसार काम करता है।

४. **ॐ स्त्रीं स्त्रीं फट्**

इस मन्त्र को भी उपरोक्त विधि से सिद्ध कर लेना चाहिए। जिस व्यक्ति के सामने इम मन्त्र को मन-ही-मन जपा जायगा वह जप कर्ता पर मोहित और आकर्षित हो जाता है।

किसी भी प्रयोग में सफलता न मिलने के कई कारण हो सकते हैं। इतने पर भी यह नहीं समझना चाहिये कि प्रयोगों में दी गई जप मात्रा ही आखिरी है। यह संख्या मध्यमान है, किसी को पहले भी सफलता मिल सकती है किसी को उसके बाद। इसलिए साधक धैर्य, विश्वास और निष्ठापूर्वक कार्यरत रहे तो सफलता अवश्य मिलेगी।

मन्त्रों का जप जितनी एकाग्रता, दृढ़ आत्मशक्ति, श्रद्धा व विश्वास के साथ मन लगा कर किया जायेगा उतनी ही शीघ्रता से सफलता मिलेगी। जप भी कई प्रकार से होता है : जिह्वा, से कण्ठ से, श्वांस पर, सुरति यानी ध्यान पर और यह क्रम से उत्तरोत्तर अधिक बलवान होते जाते हैं।

६ विद्वेषण के लिए तान्त्रिक प्रयोग

विद्वेषण का अर्थ होता है अलगाव, बैरभाव होना। यह उस स्थिति में किया जाता है जब किन्हीं दो व्यक्तियों की मित्रता किसी के लिए घातक बन जाती है या हम चाहते हैं कि हमारा अमुक साथी अमुक व्यक्ति से न मिले। मान लीजिए किसी का पति किसी गलत स्त्री के सम्पर्क में रहता है तथा समझाने से नहीं मान रहा, घर की ओर से विमुख हो गया है या यही स्थिति पत्नी के पथच्युत होने से पति की है। कोई हमारे परिवार का सदस्य परिवार की उपेक्षा करके ऐसे व्यक्ति से मित्रता रखता है जिससे परिवार को हानि की आशंका है। ऐसी अवस्था में विद्वेषण का प्रयोग करना चाहिये।

यूं इन प्रयोगों से पिता, पुत्र, भाई, बहन या अन्यों में भी बैरभाव उत्पन्न किया जा सकता है किन्तु किसी की सुखी गृहस्थी उजाड़ना पाप है। कालान्तर में दुष्कर्म करने वाला फल भोगता ही है।

"ॐ क्रीं नमो महा भैरवाय श्मशान वासिन्यै·····
योः विद्वेषं कुरु कुरु क्रीं फट्।

पर्वकाल में मन्त्र को पुरश्चरण पद्धति से सिद्ध कर लें। फिर नीचे लिखे किसी प्रयोग को करने से विद्वेषण सिद्ध हो जाता है। मन्त्र बोलते समय खाली जगह में उन दोनों व्यक्तियों का नाम जिनमें विद्वेष करना है, लगा लेना चाहिये।

१. एक हाथ में कौवे का पंख तथा दूसरे में उल्लू पक्षी का पंख लेकर उनके अग्रभाग को काले डोरे से बांध दें। फिर दोनों हाथों की अंजुलि

बनाकर उसी में दोनों पंखों को दबा लें तथा मन्त्र की एक माला से लोहे के तसला या थाली में तर्पण करें। यही क्रिया सात दिन करने से विद्वेष भाव उत्पन्न हो जाते हैं। लोहे की परात में पानी भर लें उसमें काले तिल डालें और दक्षिण दिशा को मुख करके मन्त्र के बाद तर्पयामि लगा कर तर्पण करें।

२. बिल्ली और चहे की विष्ठा लेकर एक पुतली का निर्माण करें एवं इस पुतली को नीले वस्त्रों में लपेट कर मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके भूमि में अधोमुख (नीचे मुख ऊपर पैर करके) गाढ़ दें तो विद्वेष भाव पैदा हो जाता है।

३. जिन दो व्यक्तियों में विद्वेष कराना हो उन दोनों के बायें पैर के नीचे की धूल लेकर अलग-अलग प्रतिमा बनायें तथा पृथक्-पृथक् एक-एक माला जप से अभिमन्त्रित करें। इन दोनों प्रतिमाओं को नीले वस्त्र में लपेट कर श्मशान या किसी निर्जन स्थान में गढ़ा खोदकर अधोमुख गाड़ दें तो विद्वेषण होता है।

४. भैंस के तथा घोड़े के बाल लेकर मन्त्र सहित हवन करके उस राख को जिनमें विद्वेष कराना हो यदि उनके बीच डाल दिया जायेगा तो उनमें तत्काल वैर भाव उत्पन्न हो जायेगा।

५. सेही (एक जानवर) का कांटा लेकर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिनके मध्य वैर कराना हो उनके घर में डाल दिया जायेगा तो उनमें विद्वेषण होगा।

ऊपर लिखे प्रयोगों से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिन प्राणियों में जन्मजात वैर है उनके विभिन्न अंग लेकर यदि तन्त्र किया जाये तो विद्वेषण हो जाता है। मन्त्र का प्रयोग इससे शक्ति सम्पन्न करता है जिसके कारण अभीष्ट व्यक्तियों पर प्रभाव पड़ता है।

६. कपाल क्रिया में जो लकड़ी प्रयुक्त होती है उसकी बारह अंगुल लकड़ी किसी रविवार को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस घर में गिरा दी जायेगी वहां तब तक विद्वेषण होता रहेगा जब तक कि वह लकड़ी पड़ी रहेगी।

विद्वेषण का साबर मन्त्र

"बारह सरसों तेरह राई, यार की मारी मसाण की छाई, पढ़ कर मारूं कर दलवार, अमुका कुढ़ै न देखे अमुक का द्वार, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरु का।"

पर्वकाल में पूर्वोक्त रीति से सिद्ध करके जब प्रयोग करना हो तो राई, सरसों और मसाण की राख लेकर मन्त्र से एक सौ आठ आहुति दें। समिधा आक अथवा नीम की लें। इसमें से थोड़ी राख वहां दरवाजे पर डाल आयें, जहां-जहां वे दो मित्र रहते हों जिनमें वैर भाव कराना हो।

मन्त्र में दो स्थानों पर अमुका-अमुक प्रयोग किया गया है। यहां पर उन दोनों व्यक्तियों का नाम लेना चाहिये जिनमें आपस में विद्वेषण कराना अभीष्ट हो।

७ | स्तंभन संबंधी तान्त्रिक प्रयोग

स्तंभन का अर्थ होता है रोक देना। जिस तान्त्रिक क्रिया से मनुष्य पशु, पक्षी आदि का गीत एवं हलचल का निरोध कर दिया जाता है वह स्तंभन क्रिया कहलाती है। तंत्र में स्तंभन को वर्गीकृत किया हुआ है जैसे अग्नि स्तंभन, आसन स्तंभन, गर्भ स्तंभन, शुक्रस्तंभन। यों तन्त्र में मन्त्र की इतनी आवश्यकता नहीं रहा करती किन्तु मन्त्र की शक्ति से तान्त्रिक प्रयोग शक्तिसम्पन्न अवश्य हो जाता है। कोई अपना प्रियजन यात्रा पर जा रहा है, हम उसका यात्रा करना शुभ नहीं समझते, उसे समझाते हैं। इतने पर भी वह नहीं मानता है और रोकना जरूरी है तो उसका यात्रा स्तंभन करना उचित रहेगा। इसी प्रकार अन्य प्रयोगों के लिए भी समझना चाहिये।

अग्नि स्तंभन (१)

मन्त्र—"ॐ ह्रीं नमो अग्निरूपाय मम शरीरस्तम्भनम् कुरु कुरु स्वाहा।"

किसी पर्वकाल में इस मन्त्र को दस हजार बार जप कर पुरश्चरण से सिद्ध करले फिर नीचे लिखे प्रयोग को करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

१. घी ग्वार के रस में तेल मिलाकर शरीर पर उबटने की भांति मल लिया जायें तो अग्नि से शरीर की रक्षा होती है अर्थात् कोई अंग नहीं जलता।

२. घी ग्वार (ग्वारपाठा) की जड़ को केले की जड़ के साथ पीसकर यदि शरीर पर लेप कर लिया जाये तो अग्नि का स्तंभन होता है।

३. घी, शक्कर मिलाकर पी लिया जाये तथा बाद में मुख में तगर रखकर चबाकर यदि कोई दहकता अंगारा मुख में रख लें तो मुख नहीं जलता।

४. मेंढक की चर्बी के साथ कपूर मिलाकर अंगों पर लेप करने से अग्नि का स्तम्भन होता है। इन सब उपरोक्त प्रयोगों को करते समय मन्त्र जप करते रहना चाहिये।

अग्नि स्तम्भन (२)

ॐ ह्यं अग्नि स्तम्भन कुरु कुरु

इस मन्त्र को भी उपरोक्त की भांति किसी पव काल में सिद्ध कर लें। इस मन्त्र से अग्नि का स्तम्भन होता है। किसी स्थान पर आग लगी हो इस मन्त्र को पढ़कर जल छिड़क दें तो आग जहां की तहां ही रहेगी; भले ही आंधी चलने लगे किन्तु आग फैलेगी नहीं।

अग्नि स्तम्भन (३)

आगे अग्नि स्तम्भन का साबर मन्त्र दिया जा रहा है। इसे भी सिद्ध करके नमक या किसी ठीकरी को मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रि करके अग्नि में डाल दिया जायेगा तो अग्नि का स्तंभन होगा। उस अग्नि पर

जो कुछ भी रखा जायेगा वह गर्म तक नहीं होगा चाहे कितनी ही आग जलाई जाये।

"काची हाण्डी काची पाली, ऊपर वज्र की थाली, नीचे भैरु किलकिलाय, ऊपर नृसिंह गाजे, जो इस हाण्डी के आंच लगे तो अन्जनी पुत्र लाजे, दुहाई हनुमन्त जती की, दुहाई अन्जनी पुत्र की, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा।"

आसन स्तंभन

मन्त्र—"ॐ नमो दिगंबराय अमुकस्य आसनस्तंभन म् कुरु कुरु स्वाहा।"

इस मन्त्र को पुरश्चरण पद्धति से एक लाख जप कर सिद्ध किया जाता है। फिर नीचे लिखा कोई भी प्रयोग करने से आसन स्तंभन किया जा सकता है। आसन स्तंभन का अर्थ होता है जहां व्यक्ति बैठा है वहां ही बैठा रहे, उठ न सके।

१. जिसके नाम से मन्त्र सहित श्मशान की अग्नि में लवण से हवन किया जायेगा उसका आसन स्तंभन होगा।

२. नरकपाल में मिट्टी भरकर श्वेत गुन्जा (गोंगची) का बीज बोना चाहिये तथा उसे गौ के दूध से सींचना चाहिये। जब वह लता बन जाये तो उसको तोड़कर जिसके अंग से छुआ दी जायेगी उसका आसन स्तंभन होगा।

३. रवि पुष्य योग में लाल अरण्ड के पेड़ को न्यौता देकर उसकी एक डाल एक ही झटके में तोड़ लावें। उस डाली को जब कूकरा-कूकरी संगम करते हों तो कूकर के लिंग पर मारें। इस प्रकार उसके दो टुकड़े

हो जायेंगे। जो टुकड़ा हाथ में रह गया है उसे अलग तथा नीचे पड़े टुकड़े को अलग रख लें। जिसका आसन स्तंभन करना हो उसको हाथ वाली लकड़ी छुआ दें तो उसका आसन स्तंभन होगा। गिरी हुई लकड़ी छुआ देने से ठीक हो जायेगा। यह बिना मन्त्र के भी सिद्ध प्रयोग है।

नोट—सोना तोलने के काम आती है उसे लाल गोंगची कहते हैं। ऐसी ही जो सफेद रंग की होती है उसे श्वेत गुंजा कहते हैं।

गर्भ स्तंभन

मन्त्र—"ॐ बं खं पं नमो भगवते रुद्राय अमुकस्य गर्भ स्तंभनम् कुरु कुरु स्वाहा।"

पर्वकाल में पुरश्चरण विधि से दस हजार जप करके सिद्ध कर ल तथा नीचे लिखा कोई प्रयोग करें तो गर्भस्तंभन होता है अर्थात् गिरता गर्भ रुक जाता है।

१. चौलाई की जड़ चावलों के मांड के साथ पिलाने तथा काले धतूरे की जड़ के चूर्ण की पोटली बनाकर योनि द्वार में रखने से गिरता ग : रुक जाता है।

२. रवि पुष्य योग में विधान से काले धतूरे की जड़ लाकर गर्भिणी की कमर में बांध दी जाये तो गर्भ स्तंभन होता है।

८ | उच्चाटन के लिए तान्त्रिक प्रयोग

सामान्यतया जी उचट जाने को ही उच्चाटन कहते हैं। इसके कई लक्षण होते हैं। जैसे—किसी भी कार्य में मन का न लगना, मस्तिष्क का अस्त व्यस्त हो जाना, बहकी-बहकी बातें करना और अन्तिम अवस्था है पागल हो जाना। यह भी निकृष्ट कर्म है। तन्त्र में इसे अभिचार कर्म कहा जाता है। इसे करने वाला भी सुखी नहीं रहता। किसी को वृथा में बर्बाद करने वाला कभी सुखी हो ही नहीं सकता। परन्तु किसी अच्छे लक्ष्य, किसी के मन को किसी गलत जगह से हटाने के लिए उच्चाटन कर्म करना बुरा नहीं होता।

गृहस्थ जीवन में व्यक्ति को सुकर्म और दुष्कर्म दोनों करने पड़ते हैं। किन्तु इन प्रयोगों के जानकार व्यक्ति को संयमी होना चाहिये ही, यह नहीं कि जरा से आवेश में आकर इन प्रयोगों को करने बैठ जाये।

मन्त्र—"ॐ टं बं यं नमो भगवते रुद्राय दण्डकरालय अमुक सुपुत्र बांधवेः सह हन हन दह दह शीघ्राम् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः ठः।"

पुरश्चरण विधि से मन्त्र को सिद्ध करके नीचे लिखा कोई भी प्रयोग करने से जिसका उच्चाटन करना चाहें कर सकते हैं।

१. मंगलवार के दिन दोपहर में जहां गधा लेटता हो उसके नीचे की धूल बायें पैर से उठा कर रख लें फिर उसे २१ बार मन्त्र से अभि-

मन्त्रित करके जिसके घर में डाली जायेगी उनका आपस में उच्चाटन होगा।

२. गूलर वृक्ष की चार अंगुल की लकड़ी लेकर जिसके द्वार पर गाड़ दी जायेगी उसका उच्चाटन होगा। घर में क्लेश उत्पन्न हो जायेगा। आपस में द्वेष हो जायेगा।

३. श्वेत कलिहारी (कटेली या भटकटय्या) की जड़ को लेकर जिसके घर में डाल दिया जायेगा उस घर में निश्चय करके उच्चाटन होगा।

४. मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल की कील बना कर जिसके घर में दबा दी जायेगी उस घर में उच्चाटन होगा।

५. उल्लू पक्षी के पंखों से जिस व्यक्ति के नाम से उपरोक्त मन्त्र से हवन किया जायेगा उसका शीघ्र उच्चाटन होगा। दो व्यक्तियों में उच्चाटन कराना है तो दोनों का नाम मन्त्र में लगा कर हवन में आहुतियां देनी होती हैं।

६. अश्विनी नक्षत्र में पीपल की दस अंगुल की कील जिस घर में गाढ़ दी जायेगी उस घर में रहने वालों का उच्चाटन होगा। पीपल की पतली डाल तोड़कर सुखा कर उसकी दस अंगुल की कील बना लेनी चाहिये। अश्विनी नक्षत्र में ही तोड़ कर लाना चाहिये। अवसर मिलने पर कभी भी गाड़ देना चाहिये।

९ | मारण के तान्त्रिक प्रयोग

जिस क्रिया के द्वारा किसी जीव के प्राणों का हनन किया जाता है वह मारण प्रयोग कहा जाता है। यह अभिचार कर्म है। डामर तन्त्रों में इसे चौकी बिठाना या मूठ चलाना कहते हैं। कोई भी अभिचार कर्म वृथा ही जिस किसी पर नहीं करना चाहिये। इसके करने वाला प्राणी पाप का भागी होता है। बुरे कार्य का बुरा ही फल मिला करता है। अपने प्राण भी संकट में क्यों न हों किन्तु आत्मकल्याणी जन फिर भी ऐसा प्रयोग नहीं किया करते।

मूर्ख द्वारा किया गया प्रयोग स्वयं को ही समाप्त कर देता है, इस लिए किसी योग्य गुरु से दीक्षा लेकर उसके सान्निध्य में ही ऐसे प्रयोग करने चाहिये। नीचे भैरव मन्त्र दिया जा रहा है। मन्त्र बड़ा है किन्तु कारगर है। ऐसे प्रयोगों को न देने का मेरा विचार था किन्तु विषय के विश्लेषण करने के लिए नमूने के तौर पर यह प्रयोग दिया गया है। इसके परिणामों का जिम्मेदार करने वाला स्वयं होगा। लेखक या प्रकाशक से उसका कोई ताल्लुक नहीं है।

"काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरव, मेरे हुक्म हाजिर रहे, मेरा भेजा रक्षा करे, आन बाधूं, बांन बांधूं ,चलते-फिरते के औसान बाधूं, दशासुर बांधूं, नौ नाडी बहत्तर कोठा बाधूं, फूल में भेजूं फूल में जाये, कोठे जो पड़े थर थर कांपे, हल हल हलै, गिर गिर पड़ै, उठ उठ भगै, बक बक करै, मेरा भेजा सवा घड़ी सवा पहर, सवा दिन, सवा

मास, सवा वर्ष को बावला न करें तो माता काली की शय्या पर पग धरें, वाचा चूके तो उमा सूखे, वाचा छोड़ कुवाचा करे तो धोबी की नांद, चमार के कुण्डे में पड़े, रुद्र के नेत्र से आग की ज्वाला कढ़ै, शिव के शिर की जटा टूट के भूमि पै परे, माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े, बिना हुक्म नहीं मारना हो ककाल भैरव, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।"

किसी कालरात्रि में तिखुण्टा चौका लगा कर इस मन्त्र का अनुष्ठान प्रारम्भ करना चाहिये। लाल आसन बिछाकर साधक को दक्षिणाभिमुख बैठना चाहिये। पूजा सामग्री में लाल कनेर के फूल, सिंदूर एवं बेसन के लड्डू और लौंग का जोड़ा होना चाहिये। चौमुखा दीपक (जिसमें चारों ओर चार बत्ती जलती हुई हों) लेकर उसमें तिल का तेल भरें और प्रज्वलित करना चाहिये। फूलों का गजरा बनाकर रख लेना चाहिये।

आसन पर बैठकर साधक को अविचल भाव से मन्त्र का जप करते रहना चाहिये। जप करते समय भयंकर दर्शन होंगे। मन को दृढ़ बना कर जप करते रहना चाहिये। जप की समाप्ति पर दशांश हवन तिल, चीनी और घी मिलाकर करना चाहिये। हवन करते समय या हवन कर चुकने के बाद जब भैरव प्रकट हो जावें तो डरना नहीं चाहिये (काल भैरव का स्वरूप भयंकर होता है) भक्ति-भाव से गजरे को उनकी गर्दन में डालकर प्रणाम करें तथा नैवेद्य अर्पण कर दें। पुनः उनसे प्रसन्न होने की प्रार्थना करें।

जब भैरव प्रसन्न हों तो उनसे मनचाहा वर मांग लें।

फिर यदि कोई आपका शत्रु आप पर इस प्रकार का प्रयोग करेगा तो आप पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपको पहले से मालूम हो जायेगा। आप चाहें तो उसकी मूठ या कृत्या को वापिस भेज सकते हैं

वह भेजने वाले से ही अपनी बलि मांग लेगी। यह प्रयोग आत्मरक्षार्थ ही सिद्ध करना चाहिये। किसी को मारने के लिए कभी नहीं करना चाहिये क्योंकि यदि उल्टा पड़ गया तो स्वयं की जान को भी खतरा होता है। इसलिये सावधान करना ठीक समझा है।

तन्त्र अधूरा रह जाता इसलिए इस प्रयोग को पुस्तक में सम्मिलित कर लिया है।

१० | अन्य तान्त्रिक प्रयोग

प्राचीन काल से ही भारत में आध्यात्मिकता के प्रति रुचि रही है। एक प्रकार से हमारा देश विश्व का पथ-प्रदर्शक रहा है। इस क्षेत्र में तन्त्र-मन्त्रों का प्रयोग भारतीय समाज में प्राचीन काल से होता आ रहा है। अनेक ग्रन्थ तन्त्र मन्त्रों के चमत्कारों से भरे पड़े हैं। उन अलौकिक गाथाओं पर आज की पीढ़ी सहज ही विश्वास नहीं कर पा रही है।

कई दफा जब कुछ ऐसी घटनाएं घटती हैं, जैसे कहीं स्वतः ही आग भड़क उठना, किसी मकान में पत्थर अथवा विष्ठा की वर्षा होना, किसी को भूत पकड़ लेता है और वह स्वयं की भाषा, लहजा छोड़कर उस मृतक की वाणी में बातचीत करने लगता है तो लोग आश्चर्य करने लगते हैं। विज्ञान भी इसे अब तक नकारता आया था, किन्तु कुछ घटनाएं ऐसी रहीं जिनका समाधान उनके पास नहीं है और इन अलौकिक शक्तियों को मानना उनकी मजबूरी है। पश्चिम में कुछ वैज्ञानिक खोज में लगे हैं कि आखिर यह है क्या ?

तन्त्र को बकवास कहने वाले भी मिल जायेंगे, अन्धविश्वास और गप्प कहने वाले भी। चमत्कार को नमस्कार करना आज के युग की शर्त है। किन्तु खेद है कि चमत्कार की निश्चित परिभाषा से वह परिचित नहीं है। यह चमत्कार सापेक्षता है। पचास या सौ ग्राम दूध पीने वाले के लिए पांच, सात किलो दूध पीने वाला चमत्कारी ही माना जायेगा। तन्त्र को अन्धविश्वास और गप्प कहने वालों के लिए तन्त्र में काम आने

वाली कुछ रहस्यमय, अद्भुत और दुर्लभ वस्तुएं उनके उस विश्वास के लिए खुली चुनौती हैं।

स्यार सिंगी

स्यार (गीदड़) को रात्रि काल में ग्रामीण क्षेत्रों या जंगलों में बोलते आपमें से बहुतों ने सुना होगा। वह "हुंआ-हुंआ" की आवाज ऊपर की ओर मुख करके निकालता है। लेकिन इसमें सर्वप्रथम जो स्यार बोलता है वह नीचे की ओर मुख करके हुंआ-हुंआ करता है। उसी स्यार की गर्दन के मध्य एक छोटा-सा सींग जो कि बालों के गुच्छे में लिपटा रहता है निकल आता है। जब वह आवाज निकालना बन्द करके ऊपर की ओर मुख करता है तो वह सिंगी फिर अन्दर छिप जाती है।

प्राणी विज्ञान के अनुसार स्यारों के सींग नहीं होते, इसे जन-साधारण भी जानता है, किन्तु प्रकृति के इस आश्चर्य को क्या कहें कि नीचे की ओर मुख करके बोलने वाले स्यार की गर्दन पर सींग होता है। यह बोलते-बोलते ही उस स्यार की गर्दन काट ली जाये तो यह स्यार सिंगी मिल सकती है। इस सिंगी की लम्बाई चार या पांच सेण्टीमीटर होती है। यह नुकीली हड्डी जैसी तथा भूरे और बादामी बालों से घिरी रहती है। हर स्यार में यह नहीं मिलती। बड़ी कठिनाई से इसे प्राप्त किया जा सकता है।

स्यार की इस सिंगी को तन्त्र साधना में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। तान्त्रिकों के अनुसार यह जीवन की रक्षा करने में चमत्कारिक रूप से समर्थ है। इसको धारण करने वाला या सिन्दूर में लपेटकर अपने पास रखने वाला कभी भी अकाल मृत्यु को प्राप्त नहीं होता और न ही किसी दुर्घटना में उसके शरीर को चोट लगती है। चोट तो बड़ी बात है

खरोंच तक नहीं आती। इसीलिए तन्त्र साधक इसे जीवन रक्षक कहते हैं, अनमोल कवच मानते हैं।

इसको जो धारण करता है उस पर कोई हिंसक जीव या विषैले कीट आक्रमण नहीं करते। तान्त्रिकों की तो यहां तक मान्यता है कि इसके धारण करने वाले पर शस्त्र से यदि प्रहार किया जाये तो प्रहार करने वाले का हाथ बहक जाता है और वह सकुशल रहता है। इसे सदैव सिन्दूर से पूरित करके रखना चाहिये। तन्त्र के अनुसार इसको पहचानने की विधि यह है कि यदि इसके बाल काट दिये जायें तो चालीस दिन बाद वे पुनः बढ़ जायेंगे।

श्वेतार्क गणपति

आक प्रायः पूरे भारत में मिलता है किन्तु श्वेतार्क (सफेद आक) कहीं-कहीं पैदा होता है। राजस्थान के बांसवाड़ा क्षेत्र एवं बिहार में यह काफी पैदा होता है। इसके फूल सफेद ही होते हैं। इस सफेद आक की मूल में प्रकृति निर्मित गणपति की प्रतिमा बनी मिलती है। यह अति दुर्लभ वस्तु है, किसी भाग्यवान के पास ही यह गणपति की प्रतिमा होती है।

इस प्रकृति निर्मित गणपति प्रतिमा को जो तान्त्रिक सिद्ध करके अपने पास रखते हैं उन्हें संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता। तन्त्र शास्त्र की मान्यता के अनुसार जिनके पास यह गणेश प्रतिमा होती है उन साधकों को तन्त्र मार्ग में किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। कुछ लोग सफेद आक की जड़ को रवि पुष्य में लाकर इसी योग में इसकी प्रतिमा बढ़ई से बनवा लेते हैं यह भी फलप्रद होती है।

आक के अकौआ, मदार, आख आदि अनेकों नाम हैं।

काली हल्दी

प्राय: सभी लोग हल्दी से परिचित हैं, यह पीले रंग की होती है तथा मसाले में हम इसका उपयोग करते हैं। मांगलिक कार्यों में भी इसका उपयोग किया जाता है। अन्दरूनी चोट लगने पर दूध के साथ इसका चूर्ण फांका जाता है। जैसे गृहस्थ के लिए पीली हल्दी का महत्त्व है वैसे ही तान्त्रिकों के लिए काली हल्दी का। काली हल्दी नदी के किनारे मण्डला (अमरकण्टक) के मैदानी क्षेत्र में अधिकतर पाई जाती है। बस्तर जिले तथा नेपाल के मकवांना क्षेत्र में भी यह मिल जाती है। तान्त्रिक इसको बहुत महत्त्व देते हैं। खासकर जो 'महाकाली' के उपासक हैं।

आयुर्वेद के अनुसार काली हल्दी दमा रोग की अकसीर दवा है। इसे घिस कर एक चमचा जल के साथ पीने से पुराने से पुराना दमा रोग ठीक हो जाता है। यह काफी कठोर पदार्थ है। जल्दी घिसता नहीं। घिसने पर काला द्रव्य सा बन जाता है। जिनकी इष्ट मां काली हैं, वे उन्हें प्रसन्न करने के लिए चन्दन की जगह इसी का टीका लगाते हैं।

रक्त गुंजा तन्त्र

गुंजा (चिरमी) अरहर की साबुत दाल के बराबर कुछ लम्बोतरे से बीज होते हैं। इसे 'रत्ती' भी कहते हैं। प्राय: सुनारों के पास तौलने के काम में लाई जाती देखी जा सकती है। जंगल में इसकी बेल होती है जो अन्य किसी झाड़ी या पेड़ का सहारा लेकर उस पर चढ़ जाती है। यह तीन प्रकार की होती है—लाल, श्वेत तथा श्याम। आयुर्वेद ग्रन्थों में इस के विविध औषधीय उपयोग लिखे गये हैं। तन्त्र शास्त्र में लाल रंग की गुंजा का प्रयोग कई कार्यों के साधन में किया जाता है। यह लाल जाति

ही 'रत्ती' कहलाती है। इसके ऊपर काले रंग का छोटा-सा धब्बा बना होता है। नीचे लाल रंग की गुंजा का कल्प दिया जा रहा है। स्मरण रखना चाहिए कि गुंजा एक विषैली वस्तु है अतः इसके प्रयोग में सावधानी रखना जरूरी है।

तान्त्रिक प्रयोगों के लिए औषधि को विधि-विधान से लाया जाता है। वैसे बिना विधि विधान से लाई गई औषधि निष्फल रहा करती है। जिस दिन औषधि लानी हो उससे पहले दिन उसे निमन्त्रण दिया जाता है। भक्ति-भाव से पूवाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर सर्वप्रथम भगवान् शंकर को प्रणाम कर लेना चाहिये। इसके पश्चात् जिस औषधि को लाना हो उसे प्रणाम करके कहे "हे वनौषधि, मैं अपने कार्य की पूर्ति के लिए आपको लेने कल आऊंगा, कृपया मेरा निमन्त्रण स्वीकार करें।

लाने वाले दिन वृक्ष की जड़ के पास बैठकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे वृक्षादस्मात् शिवाज्ञया॥

नीचे लिखे मन्त्र से नमस्कार करें।

नमस्तेऽमृत संभूते बलवीर्य विवर्धिनी।
बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः॥

जिन प्रयोगों के लिए मूल (जड़) काम में लानी हो तो नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुए भूमि को किसी लकड़ी की वस्तु से खोदना चाहिए।

येन त्वाम् खनते ब्रह्मा येन त्वाम् खनते भृगुः।
येन हीन्द्रोऽथ वरुणो येन त्वामुपचक्रमे॥
तेनाहं खनिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना।
मा पाते मा निपतिते ते तेजो ह्यन्यथा भवेत्॥

अत्रैव तिष्ठ कल्याणि मम कार्यकरो भव।
मम कार्ये कृते सिद्धे ततः स्वर्गं गमिष्यासि ॥"

इसके पश्चात् "**ॐ ह्रीं फट् स्वाहा**" मन्त्र का जप करते हुए जड़ (मूल) को लता के शेष भाग से अलग कर लेना चाहिए।

विभिन्न प्रकार के कार्यों की सिद्धि के लिए गुंजा की इस जड़ का भिन्न-भिन्न तरह से प्रयोग किया जाता है। इस जड़ को कब और किस समय उखाड़ना चाहिए तथा अनेकों मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए इसे किस प्रकार प्रयोग करना चाहिए यह एक प्राचीन इन्द्रजाल में प्रकाशित नीचे दी गई कविता में बताया गया है। कविता के रूप में रचित यह कल्प काफी लम्बा है। इसमें ३७ दोहों में लाल गुंजा के बहुत से तान्त्रिक प्रयोग दिए गए हैं। इनमें से कुछ सरल प्रयोग नीचे दिए जा रहे हैं।

पुष्य होय आदित्य को तब लीजे यह मूल।
शुक्करवारी रोहिणी ग्रहण होय अनुकूल॥
कृष्ण पक्ष की अष्टमी हस्त नक्षत्र जो होय।
चौदस स्वाति शतभिषा पूनम को ले सोय॥
अर्धनिशा कारज करे मन की शंका खोय।
धूप दीप कर लीजिये सिद्ध सबै तब होय॥
जो काहू नर-नारि को, विष कोऊ को होय।
विष उतरै सब तुरत ही जड़ी पिलावे धोय॥
तिलक लगावै भाल पर सभा मध्य नर जाय।
मान मिले स्तुति करैं सब ही पूजें पांय॥
हांजी हांजी सब करैं जो वह कहै सो सांच।
एक जड़ी की जुगत से सबै नचावै नाच॥

तांबे मूल मढ़ाय के बांधे कम्मर सोय।
नवें मास वा नारि के निश्चय बेटा होय॥
जो घिसकर लेपन करै दूध संग सब अंग।
भूत प्रेत सब यक्ष गण लगें फिरत सब संग॥
घिस के रुई लगाइये बाती धरे बनाय।
फेर भिजोवे तेल में दीपक देय जलाय॥
करो अचम्भो सबन में घर समान दर्शाय।
सात महल के बीच सूं लावै पलंग उठाय॥
अजा मूत्र में रगड़ कर बेंदी दे जो हाथ।
करे दूर की बात वो रहे यक्षिणी साथ॥
गौरोचन के संग घिस लिखिये जाको नाम।
मृत्यु होय वाकी तुरत नहीं वैर को काम॥
जो बाघिन के दूध में घिसे लगावै अंग।
सर्व शस्त्र लागै नहीं बढ़कर जीते जंग॥
घी शक्कर तिल तेल में मर्दन करे शरीर।
दीखे सब संसार को महावीर रणधीर॥
जो अलसी के तेल में घिसे शहद मिलाय।
कोढ़ी कूं लेपन करे कंचन तन हो जाय॥
रक्त गुंजा यह कल्प है सूक्ष्म कह्यो बनाय।
जो साधे सो सिद्ध हो या में संशय नाय॥

दक्षिणावर्ती शंख तन्त्र

पौराणिक कथाओं के अनुसार समुद्र मन्थन में निकले चौदह रत्नों में शंख भी एक रत्न के रूप में प्राप्त हुआ था। कोषकारों ने नवनिधियों

में से इसे एक निधि कहा है। आयुर्वेद, ज्योतिष और शकुन शास्त्र में भी शंख की महिमा का वर्णन मिलता है। शंख की उत्पत्ति विवादग्रस्त हो सकती है किन्तु भारतीय संस्कृति और धर्म में इसका बड़ा महत्त्व है। मन्दिरों में शंख ध्वनि को पवित्र माना गया है तो तन्त्रों में शंख जल से देवता के अभिषेक का माहात्म्य कहा गया है।

भगवान् विष्णु के चार आयुधों में शंख भी एक आयुध है। इसकी ध्वनि शत्रुओं के मनोबल को गिराती है। शंख को रोग, अज्ञान तथा अलक्ष्मी का नाशक तथा आयु को बढ़ाने वाला कहा गया है। इसे रथी और वीर लोग ही धारण करते हैं। यदि आप शंख को अपने सामने इस प्रकार रखें कि पिछला भाग जिसे मुंह पर लगाकर बजाया जाता है तो आप देखेंगे कि आपके बाएं हाथ की ओर शंख में पर्दा खुला हुआ है। समस्त शंखों में इसी प्रकार बाईं ओर शंख का पर्दा या मुंह खुला होता है। ऐसे शंखों को वामावर्ती शंख कहते हैं। परन्तु प्रकृति की विचित्र लीला देखिए कि लाख-दो लाख शंखों में एक-दो शंख ऐसे भी निकल आते हैं जिनका पर्दा दाहिनी ओर खुलता है। इन्हें दक्षिणावर्ती शंख कहते हैं। यह शंख एक आश्चर्यजनक और दुर्लभ वस्तु माना जाता है और काफी ऊंचे मूल्य का मिलता है। इसमें मोटी परत वाला भारी शंख उत्तम माना गया है। तन्त्र शास्त्र के अनुसार दक्षिणावर्ती शंख मनुष्य के भाग्य को पलटने की सामर्थ्य रखता है। इन शास्त्रों में शंख का चन्द्र और सूर्य के समान देव स्वरूप मानकर इसकी पूजा का विधान मिलता है। शंख के अग्रभाग में गंगा नदी, मध्य में वरुण तथा पृष्ठ भाग में ब्रह्मा का निवास माना गया है। शास्त्रकार कहते हैं कि इसके दर्शन मात्र से मनुष्य कृत सभी पाप इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे सूर्य की गर्मी बर्फ को पिघला देती है। जिस घर में दक्षिणावर्ती शंख का निवास होता है वहां लक्ष्मी सदैव स्थिर रहा करती है।

पूजा विधि—अष्टमी अथवा चतुर्दशी से इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करना चाहिये। दक्षिणावर्ती शंख को गंगा जल से स्नान कराके कपूर, चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्यों से पूजे और उत्तम सुगन्ध वाले फूलों पर विराजमान करे षोडशोपचार से पूजन करे तो यह इच्छित फल प्रदान करने वाला होता है।

ध्यान—"सर्वाभरणभूषिताय प्रशस्याङ्गोपाङ्गसंयुताय कल्पवृक्षाधः स्थिताय कामधेनु-चिन्तामणि-नवनिधि रूपाय चतुर्दशरत्नपरिवृताय महासिद्धिसहिताय लक्ष्मीदेवतायुताय कृष्ण देवताकर-ललिताय श्रीशंख महानिधये नमः।

अर्थ—सब प्रकार के आभरणों से अलंकृत, उत्तम अंग और उपागों वाले, कल्प वृक्ष के नीचे स्थित, नवनिधि, कामधेनु और चिन्तामणि स्वरूप, चौदह रत्नों में से एक रत्न, महासिद्धियों से युक्त, लक्ष्मी के साथ भगवान कृष्ण के हाथों में शोभायमान हे महाशंख, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं।

नीचे लिखे मन्त्र से प्रतिष्ठा करें।

"ॐ सर्वतो भद्राय सर्वाभीष्टफलप्रदाय सर्वारिष्ट-दुष्ट-कष्ट निवारकाय कामितार्थ प्रदाय शंखाय स्वाधिष्ठकाय भास्करीं क्लीं स्वीं ब्लूं क्रौं नमः स्वाहा।"

फिर नीचे लिखे मन्त्र को जपे।

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं श्रीधरकरस्थान पयोनिधिजाताय श्रीकराय जनपूज्याय दक्षिणावर्तशंखाय सुरपूज्याय देवाधिष्ठाता क्लीं श्रीं श्रीं नमः।

जप की समाप्ति पर शंख की स्तुति नीचे लिखे अनुसार करें।

नमामि देवं सकलार्थ सिद्धिदं, सुश्वेतवर्णं कमलासहोदरम्।
क्षीरोद पुत्रं मनसोऽर्थदायकं, राज्यार्थसन्तानफलप्रदं भजे॥

कल्याणकारी दुरितापहारी, मनोऽर्थधारी घनविघ्नतारी।
श्री दक्षिणावर्त सुरम्यनाथं मनोरथं पूरय मे समग्रम्॥

फिर नीचे लिखे मन्त्र से नमस्कार करके शंख को चांदी की चौकोर डिब्बी या सन्दूकची में बन्द करके रख दें।

त्वं पुरोसागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोऽस्तुते॥

रुद्राक्ष तन्त्र

पौराणिक एवं तान्त्रिक वाङ्मय में रुद्राक्षका बड़ा महत्त्व बतलाया गया है। आयुर्वेद शास्त्र में भी इसकी महिमा का बखान मिलता है। रुद्राक्ष भूत भावन भगवान शिव को परम प्रिय है। रुद्राक्ष की उत्पत्ति के सम्बन्ध में शिव पुराण में लिखा है कि एक समय भगवान शिव किसी पर्व के समय सहस्रवषपर्यन्त तपस्यारत रहे थे। उन्हें तपस्या काल में कुछ भय-सा प्रतीत हुआ था जिसके कारण उनके नेत्रों से कुछ अश्रुओं की बूंदें निकल पड़ीं और वे बूंदें मथुरा, काशी, लंका, मलयद्वीप, सह्याद्रि आदि जगहों पर गिरीं जिनसे रुद्राक्ष वृक्ष पैदा हो गये। रुद्र की आंखों के आंसुओं से पैदा होने के कारण ये रुद्राक्ष कहलाये।

रुद्राक्ष की प्रशंसा हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों तथा पुराणों में तो की ही गई है, आजकल इसकी ख्याति योरोप और अमेरिका तक फैल चकी है। इन देशों में इसके अलौकिक तथा औषधीय गुणों के संबंध में शोध हो रही है। इन खोजों के परिणामस्वरूप रुद्राक्ष के कई नये गुण प्रकाश में आये हैं। एक ब्रिटिश शोधकर्त्ता पाल ह्यूम ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'रुद्राक्ष' में बताया है कि इसके द्वारा असम्भव कार्यों को भी संभव बनाया जा सकता है। मार्ग में आने वाली बाधाओं पर विजय प्राप्त

की जा सकती है। यहां तक कि इसके द्वारा भाग्य का परिवर्तन भी सम्भव है। एक अमेरिकन शोधकर्त्ता महिला श्रीमती सूसन ने अपने एक लेख में स्वीकार किया है कि रुद्राक्ष की सहायता से गर्भ धारण करके इच्छित सन्तान उत्पन्न की जा सकती है। इसकी सहायता से तलाक भी रुकवाये जा सकते हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि रुद्राक्ष में वास्तव में अनेकों चमत्कारी गुण होते हैं।

रुद्राक्ष क्या है ?

रुद्राक्ष के वृक्ष नेपाल, दक्षिण एशिया तथा इण्डोनेशिया में उत्पन्न होते हैं। इस पेड़ के फल की गुठली को रुद्राक्ष कहते हैं। व्यापारिक रूप में रुद्राक्ष का इण्डोनेशिया से ही आयात किया जाता है। यह एक आश्चर्य की बात है कि इन्डोनेशिया के लोगों यह पता ही नहीं है कि रुद्राक्ष भारत में कितना अधिक प्रयोग में आता है। वहां तो जंगलों में वृक्ष से गिरकर ये फल भूमि पर पड़े सड़ते रहते हैं। आज से कुछ वर्ष पहले भारत के कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों ने रुद्राक्ष के आयात में करोड़ों रुपये कमा लिये। उन्होंने इन्डोनेशिया में मजदूरों को केवल दैनिक मजदूरी देकर मुफ्त में ही हजारों बोरी रुद्राक्ष जंगलों से बटोर लिए और समुद्री जहाज पर लादकर भारत ले आये। जहाज की ढुलाई भी बहुत साधारण—लगभग रेल के बराबर होती है।

रुद्राक्ष चने के दाने से लेकर आंवले के फल के बराबर तक बड़े मिलते हैं। इनमें प्राकृतिक रूप से आरपार एक छिद्र होता है जिसमें डोरा डाल कर इनकी माला या कंठे पिरो लिए जाते हैं। जिनमें प्राकृतिक छेद न हो उनमें छेद बना लिया जाता है।

रुद्राक्ष के 'मुख'

तन्त्र मन्त्र सम्बन्धी ग्रन्थों में एकमुखी से लेकर चौदह मुखी तक के रुद्राक्ष के गुण और महात्म्य का वर्णन किया गया है। हमारे बहुत से पाठकों को यह ज्ञात नहीं है कि रुद्राक्ष के 'मुख' क्या होते हैं अतः इस पर प्रकाश डालना आवश्यक हो गया है।

हमारे सभी पाठकों ने खरबूजा तो अवश्य देखा होगा। खरबूजे पर फांके बनी होती हैं और प्रत्येक दो फांकों के बीच में एक धारी तनिक गहराई में बनी होती है। खरबूजे की फांकें प्रायः चिकनी या मामूली-सी रूखी होती हैं परंतु रुद्राक्ष की फांकें झुर्रीदार होती हैं। इन प्रत्येक दो कटीली झुर्रीदार रचना वाली फांकों के बीच में एक धारी होती है, इन्हीं धारियों को रुद्राक्ष का 'मुख' कहा जाता है। हमारे किसी भी पाठक ने अपने जीवन में ऐसा खरबूजा नहीं देखा होगा जिसमें केवल एक ही धारी हो। इसे प्रकृति का अजूबा ही कहा जाएगा। इसी प्रकार एक मुखी रुद्राक्ष भी दुर्लभ वस्तु है बहुत कोशिश करने पर कहीं उपलब्ध हो जाता है। दो या तीन मुखी रुद्राक्ष भी कम मिलते हैं। अलबत्ता चतुर्मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष सामान्यतः मिल जाते हैं।

तन्त्र ग्रन्थों में कहा गया है कि रुद्राक्ष की माला धारण किये व्यक्ति को देख कर भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी सब भाग जाते हैं। शत्रुओं द्वारा की गई अभिचार क्रियाएं भी रुद्राक्ष धारण करने वाले का अहित नहीं करतीं। चतुर्दश प्रकार के रुद्राक्षों को अर्चित अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिये। रुद्राक्ष धारण करते समय इस तथ्य का सदैव ध्यान रखें कि फल के कण्टकों का देह से स्पर्श होता रहे।

रुद्राक्ष को अभिमन्त्रित करने की सरल विधि यह है कि किसी शुभ दिन रुद्राक्ष की माला या कंठा जो भी पहनना हो उसे शुद्ध जल से अच्छी

तरह धोकर एक चौकी पर रख कर उसको आरती उतारें तथा निम्न-लिखित मन्त्र ग्यारह बार पढ़कर माला को धारण कर लें।

मन्त्र—ॐ ह्रों घोरे हुं घोरतरे ॐ हें ह्रीं श्रीं ऐं सवतुः सर्व सर्वेभ्यो नमोस्तु रुद्र रूपाणि हुं हुं।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक समस्त रुद्राक्षों को सिद्ध करने के लिए यही एक मन्त्र प्रयोग में लाया जा सकता है।

आयुर्वेद में भी रुद्राक्ष को विशेष महत्त्व दिया गया है। विभिन्न रोगों पर रुद्राक्ष का प्रयोग किया जाता है। कुछ रोगों पर उसका प्रयोग निम्नानुसार होता है।

रक्त चाप (Blood Pressure) निम्न और उच्च दोनों प्रकार के रक्त चाप में छः मुखी रुद्राक्ष की माला कण्ठ में और हाथ में धारण करनी चाहिये। माला ऐसी बनाई जाये कि हृदय को स्पर्श करती रहे। लवण का प्रयोग ही न करें तो उत्तम है अन्यथा कम करें। किसी भी प्रकार के रुदाक्ष के चार-पांच दाने लेकर किसी तांबे के कटोरे में पचास ग्राम जल में भिगो रखें।

प्रातः नित्य क्रिया से निवृत्त होकर वह जल पान कर लें। यह प्रयोग ६० से ९० दिन तक करने से बढ़े हुए रक्तचाप का रोग मिट जाता है। शीतला (Small pox) में किसी भी प्रकार के रुद्राक्ष को गोदुग्ध के साथ पत्थर की शिला पर घिस कर प्रतिदिन स्वल्पाहार के पूर्व रोगी को चटाएं। शनैः शनैः शीनला रोग का शमन हो जाता है तथा दाह शान्त हो जाता है।

हृदय रोग में रुद्राक्ष की माला बनाकर गले में धारण करना चाहिये, साथ में अर्जुनारिष्ट और अर्जुन घृत का भी प्रयोग करते रहना चाहिये। ऐसे ही कुछ अन्य रोगों पर भो रुद्राक्ष का प्रयोग लाभकारी रहता है पर मुख्य लाभ तो आध्यात्मिक ही है।

११ | औषधि तन्त्र

श्वेतकुष्ठ की अनुभूत दवा

खाने की दवा—बावची एक पाव, मेंहदी के बीज एक छटांक, चित्रक की जड़ की छाल एक तोला—उपर्युक्त तीनों चीजों को कूटकर कपड़छन कर लें। दवा तैयार है। इसे तीन माशा प्रातःकाल और तीन माशा सायंकाल ताजे जल के साथ खाना चाहिए।

लगाने की दवा—जायफल एक तोला, गेरू एक तोला, बावची चूर्ण एक तोला, कालीमिर्च तीन माशे—चारों चीजों को कूट-छानकर, पान में खाने के चूने के नितरे हुए पानी में तीन घंटे घोटकर बेर के समान गोली बनाकर छाया में सुखाकर रख लें। तदन्तर बछिया के मूत्र में सूखी गोली को घिसकर सफेद दागों पर लगाएं। प्रातःकाल स्नान के बाद और रात्रि को सोते समय लगाना चाहिए।

अच्छे होने पर कुछ दान-पुण्य अवश्य करना चाहिए। परमात्मा की दया से इस दवा के प्रयोग से सैकड़ों रोगियों को लाभ हुआ है। सेवन करने पर १५-२० दिन बाद लाभ शुरू हो जाता है।

दमा की अनुभूत दवा

श्वास-कष्ट अधिक होने पर इसका प्रयोग करना चाहिए। उस समय प्रयोग करने से विशेष लाभ होगा। एक कांसे की कटोरी में पांच तोले गो का घृत खूब गरम कर लिया जाये और दूसरे एक

बर्तन में ढाई तोले अदरख का रस गरम कर लें। फिर उस गरम अदरख के रस को गरम घृत में डालकर कांसे की थाली से ढक दें। कल-कल शब्द बन्द होने पर वह गौ-घृत दो तोले, आधा पाव गरम दूध के साथ पी लें। उसी समय गाढ़ा-गाढ़ा कफ निकलकर श्वास-कष्ट दूर हो जायेगा। पन्द्रह दिन के सेवन से रोग पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है।

खांसी पर सफल प्रयोग

(१) जंगली पीपल के पत्ते और छाल, अडूसा के पत्ते और छाल, कंटकारी, तेजपत्ता और मुलहठी—ये सातों चीजें प्रत्येक पांच आने भर लेकर जरा-सा कटकर एक पाव जल के साथ अग्नि की मंदी आंच पर रख दें। एक छटाक जल रहने पर छान कर गरम-गरम पी लिया जाए। दो-तीन दिनों में खांसी मिट जाएगी।

(२) **बच्चों की खांसी**—एक नग बड़ी मुनक्का का बीज निकालकर उसमें १ रत्ती काकड़ासिंगी और एक रत्ती दालचीनी चूर्ण भर कर बच्चे को खिला दें। खांसी मिट जायेगी।

श्वेत प्रदर का अनुभूत प्रयोग

यह २५ वर्ष का अनुभूत प्रयोग है। श्वेतप्रदर ३, ४ दिनों में ही रुक जाता है ४० दिन के प्रयोग से पूर्ण लाभ अवश्य होता है। यह महारोग प्रायः ९०प्रतिशत स्त्रियों में देखने में आया है। प्रयोग यह है—पसारी के यहां से, संगजराहत नामक सफेद पत्थर होता है, इसे सफेद सुरमा तथा सेलखड़ी भी कहते हैं, ले आवें। फिर उसे जल से धोकर साफ कर लें और कपड़े से पोंछकर साफ हिमामदस्ते में खूब कूटकर बारीक चलनी से छान लें। इस पिसाई में ही मेहनत है। मैदा-जैसा होने

पर दवा तैयार है। इसको शीशी में भरकर रख लें। इसमें से एक माशा दवा, छः माशा शहद के साथ मिलाकर चाट लें। प्रातः शौच-स्नान से निवृत्त हो खाली पेट और शाम को पांच बजे। सवा सौ ग्राम काफी है। खटाई, तैल, लालमिरच, गुड़ और चाय का सेवन छोड़ दें। अवश्य लाभ होगा।

आधा शीशी (अर्धाबभेदक) पर सफल प्रयोग

प्रातःकाल सूर्योदय से एक घंटे पूर्व मावे के एक पेड़े में एक चने के दाने के बराबर देशी (डली का) कपूर डालकर उसे चबा कर खा जाएं। उसी के साथ छटांक-आधी छटांक मावा का पेड़ा या मावा और खा लें। पानी न पीयें। एक ही मात्रा के सेवन से लाभ होता है, किसी-किसी को दो मात्रा खानी पड़ती है। तीसरी मात्रा आज तक किसी को नहीं दी गई।

कमल-पीलिया (Jaundice) **और स्वप्नदोष** (Spermatorrhoea) **का अचूक इलाज**

दोनों रोगों के लिए एक ही दवा है। केवल प्रयोग में अन्तर है। कितना ही कष्ट हो, प्रायः तीन दिन में ठीक हो जाता है। दवा का नाम है—'भंगभस्म' अथवा 'कलई का कुश्ता'। यह प्रायः पंसारियों के यहां मिल जाता है। कोई-कोई इसे 'बंगभस्म' भी कह देते हैं। पीलिया रोग में एक रत्ती भंगभस्म लेकर एक छोटी चम्मच दूध की मलाई पर डाल कर प्रातःकाल खा लें और दोपहर के बाद तीन-चार बजे थोड़ी-सी ईसब गोल की भूसी फांककर ऊपर एक गिलास नींबू का शर्बत पी लें। दो-तीन दिनों में ही पीलिया दूर हो जाएगा। इसका प्रयोग केवल तीन दिन का है।

स्वप्नदोष की निवृत्ति के लिए प्रातःकाल एक रत्ती भंगभस्म, एक छोटी चम्मच मक्खन पर डालकर तीन दिन ले लें। विद्यार्थियों में यह रोग बहुत फैला है, अतएव वे इसका विशेष रूप से सेवन करें। पर दवा लाभ तभी करेगी, जब आप अपने को बुरी संगति तथा बुरे विचारों से दूर रखेंगे। रात्रि को सोने से पूर्व लघुशंका करके, ठंडे जल से हाथ-पैर धोकर, एक-दो घूंट ठंडा पानी पीकर मन-ही-मन 'राम राम राम राम राम राम राम'—नाम का जाप करते हुए एवं रोग निवारणार्थ सच्चे हृदय से प्रभु से प्रार्थना करते हुए निद्रा का आवाहन करें।

हड्डी और मांस के नासूर की अनुभूत दवा

शरीर के किसी हिस्से में पुराना घाव हो जाने पर उसकी हालत खराब हो जाती है, नासूर बन जाता है। उसके सेप्टिक हो जाने का डर रहता है। ऐसी अवस्था में उस हिस्से को काट कर निकाल देने के सिवा और इलाज प्रायः नहीं बताया जाता। ऐसे ही नासूर की यह अचूक दवा है—

गाय का मक्खन (दही को मथकर निकाला हुआ) एक छटांक किसी कांसे की बड़ी थाली में रखकर उसे स्वच्छ पानी से १०८ बार खूब धो लीजिए। (यह मक्खन विषवत् हो जाता है, इसे खाना नहीं चाहिए। इसमें एक तोला काला सुरमा और एक तोला सफेद सुरमा अच्छी तरह खूब महीन पीसकर मिला दीजिए। बस, दवा तैयार है। इस मरहम को थाली के एक किनारे इकट्ठा करके उस किनारे के नीचे कोई चीज रख कर उसे ऊंचा कर दीजिए। दो-तीन घंटे में सारा पानी बूंद-बूंद करके निकल जाएगा।

फिर, नीम के पत्ते उबाल कर उस पानी से घाव को धो लें। तदन्तर फलालेन या किसी मुलायम कपड़े को नासूर के बराबर काटकर उस पर मरहम लगाकर नासूर पर रख दें। उस पर रुई रखकर प्लास्टिक की पट्टी से उसे चिपका दें। नासूर को सिर्फ शुरू में एक बार धोना है। फिर प्रतिदिन एक बार मरहम लगाकर पट्टी बदल देनी है। १५-२० दिनों में नासूर ठीक हो जाएगा।

बिच्छू का जहर उतारने की सीधी सहज रामबाण दवा

प्रायः सभी पंसारियों की दुकानों में पाई जाने वाली 'फिटकरी' में बिच्छू का जहर उतारने के चमत्कारपूर्ण गुण भरे हैं। पर हम इसका उपयोग जानते नहीं हैं, इसलिए करते नहीं और इसी से उसके लाभ से वंचित रहते हैं। मैं यहां 'फिटकरी' के एक विलक्षण गुण का उल्लेख कर रहा हूं। इसके प्रयोग से कैसा भी जहरीला बिच्छू का काटा हुआ क्यों न हो सिर्फ दो मिनट से भी कम समय में जहर उतर जाता है। जिस किसी को भी बिच्छू काटे, नीचे लिखे अनुसार 'फिटकरी' को उपयोग में लावे।

पहले 'फिटकरी' को एक साफ पत्थर पर घिस लें (थोड़ा पानी डालकर घिसें) फिर जहां बिच्छू काटा हो वहां पर लगाकर आग से सेंक दें (जहां तक हो कंडे की आग ही उपयोग में लावें। इससे और भी जल्दी जहर उतर जाता है)।

एक आने की 'फिटकरी' घर में लाकर सुरक्षित रखें और जब भी जरूरत हो ऊपर लिखे अनुसार उपयोग में लावें। इस प्रकार एक आने की 'फिटकरी' वर्षों तक काम दे सकती है। पर यह काम लोभ-लालच-वश न करें। विशुद्ध सेवा भाव से ही करें। मेरा यह वर्षों का अनुभव है। यह बिच्छू उतारने की रामबाण औषधि है। सैकड़ों बिच्छू काटे

व्यक्तियों पर इसका परीक्षण कर चुका हूं। अतः फिटकरी थोड़ा-बहुत मात्रा में हमेशा ही अपने घर पर रखनी चाहिए।

तुलसी के स्वास्थ्यवर्धक गुण

आयुर्वेद में इसकी दो जातियां बताई गई हैं—सफेद और काली। इन्हें विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। सुरषा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमंजरी, वृन्दा, देवदुन्दुभि, वैष्णवी, सुगन्धा, श्यामा, रामा तथा गौरी आदि नाम ग्रन्थों में पाये जाते हैं। इसका निम्नलिखत रोगों में इस प्रकार से सेवन करें—जुकाम, सर्दी, खांसी और थकावट में तुलसी की ११ पत्ती, ३ काली मिर्च ६ माशे अदरख को काढ़े की तरह बनाकर शहद और थोड़ा दूध मिलाकर पीने से तुरन्त आराम मिलता है। तुलसी पत्र का रस शहद के साथ सेवन करने से वातरक्त, दूषित रक्त आदि दूर हो जाते हैं। कुष्ट रोग अच्छा करने के लिए एक वर्ष तक तुलसी का सेवन करना चाहिए।

खुजली में तुलसी के रस की मालिश तथा दो चम्मच रस पीना बड़ा लाभकारी होता है। तुलसी की सूखी पत्तियों को पीसकर उबटन करने से मुख की कान्ति बढ़ती है। दांत में कीड़ा पड़ने पर तुलसी के रस में थोड़ा-सा कपूर मिलाकर रुई से भिगो कर पीड़ित स्थान पर रखने से कीड़े नष्ट हो जाते हैं। सिर की पीड़ा के लिए छाया में सूखी तुलसी की पत्तियों का नस्य बड़ा लाभकारी होता है। वीर्य की निर्बलता में तुलसी के बीज ५ तोला, पोस्त के डोडे ४ तोला, गोखरू ५ तोला, कौंच के बीज ३ तोला, मूसली ४ तोला और मिश्री ६ तोला—सबको कूटकर कपड़े से छानकर १० रत्ती की मात्रा में प्रातः सायं छुहारे को दूध में पका कर मिश्री मिलाकर उसके साथ लें। बच्चों के श्वास पर तुलसी का रस एक से तीन माशे तक गरम कर शहद के साथ चटाना

बड़ा लाभकारी होता है। ज्वर में तुलसी की जड़ का काढ़ा पिलाने से लाभ होता है। सूखी खांसी में तुलसी के फूल और सोंठ बराबर लेकर उसमें प्याज का रस चवन्नी भर और मधु चवन्नी भर मिलाकर चाटने से सूखी खांसी दूर हो जाती है। आशा है, पाठक बन्धु उपर्युक्त विवरण पढ़कर तुलसी से यथायोग्य लाभ उठायेंगे।

वायु-दर्द—पेट में गैस दूर होने की दवा

एक अम्बरी सेव लेकर उसमें एक तोला लौंग टोपीवाली (पूरी लौंग) लेकर एक-एक करके सभी सेव में गाड़ दें। (गाड़ते समय भगवान् विष्णु की तथा श्रीबजरंगबली की जय बोले।) फिर उस सेव को किसी रस्सी में बांधकर तीन दिनों तक छत में लटका दें, ताकि चींटियां न लग सकें। फिर प्रतिदिन प्रातःकाल (कुछ भी खाने-पीने से पहले), दौपहर को तथा शाम को—यों तीन बार एक-एक लौंग चूसते रहें। इससे सिर दर्द भी मिटता है। आजमायी हुई दवा है। खटाई, तली चीजें, आलू, चावल आदि न खाएं तो अच्छा है।

कारबंकल फोड़ा

निर्विषी जड़ी की जड़ गाय की बछिया के मूत्र में घिसकर लगाने से यह भयंकर फोड़ा मिट जाता है। जड़ बाजार से मंगायी जाये। ताजी जमीन से खोदकर निकाली जाये तो अति उत्तम है। जड़ खोदते वक्त ध्यान रखा जाये कि उसकी जड़ में सांप तो नहीं हैं, हो तो उससे बचना चाहिये।

गलसुवे (Mumps)

पान में खाने की एक सुपारी पानी की बूंदें डालकर साफ सिल पर आवश्यकतानुसार घिस ली जाये। पान में खाने का सूखा कत्था बारीक

पीसकर उसमें मिला दिया जाये। फिर दोनों को एक मटियाले कागज पर लेपकर गलसुओं पर पूरा लगा दिया जाये। अगर गलसुवे हैं तो वह चिपक जायेगा और पांच-सात दिनों में आराम देकर उतर जायेगा। गलसुवे नहीं हैं, तो नहीं चिपकेगा। यह रोग छूत का है। इसके रोगी को अलग रखना चाहिये और आरम्भ में ही देख-भाल रखनी चाहिये, नहीं तो रोग असाध्य हो जाता है।

लंगड़ी का दर्द (साइटिका—गृध्रसी)

इस रोग में लहसुन और राई का सेवन लाभदायक है। कब्ज नहीं होना चाहिये। लौकी में राई और नमक डालकर इसके अचार का सेवन करना फायदे मन्द होता है। मूली में भी राई और नमक डालकर सेवन करना लाभदायक है। दर्द के स्थान पर दो छटांक तिल के तेल में ४ या ५ पोथी लहसुन की और आधी छटांक गूगल डालकर पकाकर हल्की मालिश करना उपयुक्त होगा। इसमें रसटाक्स (होमियोपैथिक दवा) बहुत काम करती है।

दाढ़ी की फुंसियां

नाई की असावधानी या अन्य किसी भी कारण से दाढ़ी में सफेद फुंसियां हो जाती हैं। दवा से एक ठीक होती है तो दूसरी निकल आती है। दाढ़ी सड़ने की नौबत आ जाती है, इसके लिए नीचे लिखा सरल प्रयोग बहुत लाभदायक है।

प्रयोग—किसी तांबे के चौड़े किनारेदार बर्तन में मलाईदार दही डाल दें और उसको तांबे की ही किसी दूसरी चीज से या तांबे से पुराने पांच-सात पैसों से खूब रगड़ें। दही का रंग जितना हरा होगा, उतना ही जल्दी लाभ होगा। सुबह-शाम दोनों समय फुंसियों को गरम जल से

धोकर तथा कपड़े से सुखाकर उन पर उस दही का लेप कर लें। दही बर्तन में उतना ही डालकर रगड़ा जाना चाहिये जिसमें से आधा लेप में लग जाये और ठीक आधा बच रहे। दुबारा उसी बचे हुए आधे में आधा नया मलाई वाला दही डालकर वैसे ही रगड़ लें। नयी बीमारी होगी तो तीन दिनों में, नहीं तो, एक सप्ताह में मिट जायेगी। यह प्रयोग मूंछ के या सिर के केश गिरते हों तो उस पर भी किया जा सकता है।

फोड़ा-फुंसी

कहीं कंसा भी फोड़ा-फुंसी हो, इस प्रयोग से या तो वह बैठ जायेगा या पककर फूट जायेगा और घाव जल्दी भरकर साफ हो जायेगा।

प्रयोग—पांच तोले करंज के तेल में १ मासे डली का असली कपूर पीसकर मिला दें और हिलाकर शीशी में भरकर रख दें। फोड़े-फुंसी पर अंगुली से लगा दें और रुई पर मामूली तेल लगाकर पट्टी बांध दें। सुबह-शाम दोनों समय गरम जल से धोना चाहिये।

खूनी बवासीर

प्रयोग—रीठे की गुठली फोड़ने पर उसमें से पीले रंग की चीज निकलेगी। उसको बारीक पीसकर देशी या विलायती शराब में मिलाकर शीशी में रख दें। शौच के बाद शुद्धि करके अंगुली से थोड़ी-सी दवा लगा दें। रात को सोते समय भी लगावें।

दमा (श्वास)

खाने का नमक सुनार की कुठाली में पकाकर रख लें और उसमें मकई के दाने बराबर बिना कत्थे-चूने के पान में डालकर प्रति-दिन में तीन बार खा लें। रात को सोते समय अवश्य खायें।

मोतियाबिन्द

छोटी मक्खी का असली शहद और हरे आंवलों का रस बराबर-बराबर मिलाकर एक साफ शीशी में रख लें और सोते समय लगा लें। केवल शहद लगाना भी लाभप्रद है।

मधुमेह (डाइबिटीज)

बबूल (कीकर) की दो-ढाई तोला छाल डेढ़ पाव जल में पकाकर जब एक पाव जल रह जाये तो पी लें। यह प्रतिदिन पीना चाहिये। इसके प्रयोग से बदन के फोड़े, घाव आदि भी ठीक हो जाते हैं। छाल को लाकर छाया में सुखाकर रखना चाहिये।

रक्त प्रवाह की दवा

यह रोग प्रायः स्त्रियों को होता है और वे बेचारी लज्जा-संकोचवश किसी को बतातीं नहीं। रोग बढ़ जाता है और बड़ी परेशानी होती है। इसकी बड़ी सरल दवा है—

पंसारी के यहां से दस तीले मुलनानी मिट्टी ले आइये। उसे अच्छी तरह महीन पीसकर रात्रि के समय उसमें से पांच तीले किसी कांच के बरतन में डालकर उसमें बीस तोले जल मिला दीजिये। तदन्तर किसी लकड़ी से उसे खूब मिलाकर ढककर रख दीजिए। प्रातःकाल—

'अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः'

इस मन्त्र की एक माला का रोगी से जप कराकर रात को रखे हुए बरतन में से निथरा जल लेकर रोगी को पिला दीजिए। दूसरे दिन इसी प्रकार ढाई तोले मुलतानी मिट्टी तथा तीसरे दिन भी ढाई तोले मिट्टी का निथरा हुआ जल पिलाइये। कैसा भी रक्तप्रवाह हो, इससे बन्द हो जाता है। यह अनुभूत है। इस दवा से स्त्री या पुरुषों के पेशाब में आने वाला खून भी बन्द हो जाता है।

१२ | वृक्षों के तान्त्रिक प्रयोग

'तन्त्र' शब्द का अर्थ जितना ही विस्तृत है, इतना ही इतिहास भी प्राचीन है। हिन्दुओं का सर्वमान्य तथा प्राचीन ग्रन्थ वेद है, जिसे 'अपौरुषेय'—ईश्वर की वाणी कहा जाता है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की जो वाणी सुनी गयी थी, वही वेद है। चूंकि यह किसी के द्वारा लिखा नहीं गया था, वरन सुना ही गया है; इसीलिए इसे 'श्रुति' भी कहते हैं। वेद चार हैं—ऋक्, यजु, साम और अथर्व। इनमें से प्रत्येक के एक-एक उपवेद हैं। तन्त्र अथर्ववेद का उपवेद है। बाद में कुछ और तन्त्रों का आविर्भाव हुआ, जिनमें भगवान् शिव के द्वारा वर्णित तन्त्र विशेष महत्व के हैं।

तन्त्रों के विषय में बड़ा भ्रम फैला हुआ है पर यह सत्य है कि यदि हिन्दू शास्त्रों में से तन्त्र निकाल लिया जाये तो उनके पास कुछ नहीं बचेगा। आज जितनी भी पूजा, साधना इत्यादि होती हैं, उनमें से केवल कुछ को ही छोड़कर शेष सभी तन्त्रोक्त पद्धति पर आधारित हैं। 'महा निर्वाण तन्त्र' में आगमोक्त विधान को ही कलिकाल में सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। तन्त्र का अनुसरण कर न जाने कितने ही सिद्ध पुरुष हो गये, जिनके पास अलौकिक शक्तियां थीं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस इसके एक ज्वलन्त उदाहरण हैं।

पर तन्त्र के साधकों को कभी भूलकर भी मारण, मोहन, उच्चाटन और विद्वेषण का प्रयोग नहीं करना चाहिये। वाम मार्ग की साधना भी नहीं करनी चाहिये। ये सब बड़े खतरनाक हैं।

तन्त्र योग में शरीर और ब्रह्माण्ड का जितना अद्भुत साम्य दिखाया गया है, वह अन्यत्र कहीं भी दुर्लभ है। 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' को केवल पुस्तकों में ही सीमित नहीं रखा गया, वरन इसका प्रत्यक्षकरण पिण्ड और ब्रह्माण्ड में करके तब इसे पुस्तकों में सूत्र रूप से लिखा गया। इसी प्रकार का गहन विचार वर्णाक्षरों तथा उनके सम्मिलन से बने विभिन्न शब्दों एवं उनके द्वारा उत्पन्न ध्वनियों के विषय में भी किया गया। प्राचीन शास्त्रकारों का कहना है कि स्पन्दन रूप वस्तु एवं स्पन्दन रूप शब्द के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है, इशलिए हर एक अर्थ के लिए एक शब्द होता है। इस शब्द में वह अर्थ उत्पन्न करने की शक्ति रहती है। यही मन्त्रों का रहस्य है।

तन्त्र का उद्देश्य जीव को विश्व स्वरूप बनाना है। जीव और शिव की व्याख्या कुलार्णवतन्त्र में इस प्रकार दी गयी है।

घृणा लज्जा भयं शंका जुगुप्सा चेति पञ्चमी।
कुलं शीलं तथा जातिरष्टौ पाशाः प्रकीर्तिताः॥
पाशबद्धो भवेज्जीवः पाशमुक्त सदाशिवः॥

पर सभी वस्तुओं के सब अधिकारी नहीं होते। सभी लोग न तो मुक्ति पाने के अधिकारी होते हैं और न सभी लोग सब तरह के विधानों के जानने के ही। साधना को इसीलिए गुप्त रखने का आदेश है—

'गोपनीयं गोपनोयं गोपनीयं प्रयत्नतः।'

और—

'Hold fast in silence what is your own lest icy fingers be laid upon your lips to seal them for ever.'

अनधिकारी व्यक्ति मुक्तिमार्ग में तन्त्रोक्त साधना से प्रवेश न करें इसीलिए शिवजी ने उनके सांसारिक सिद्धि लाभ के लिए षट् प्रयोगों तथा अन्यान्य प्रयोगों की रचना की।

तन्त्र में जिस प्रकार सभी वस्तुओं के विभिन्न प्रयोगों का वर्णन है, उसी प्रकार वृक्षों से भी विभिन्न सिद्धि लाभ प्राप्त करने का वर्णन है। यद्यपि औषधीय विज्ञान में वृक्ष और उनके अवयवों के उपयोग का विभिन्न प्रकार की चिकित्सा-प्रणालियों में वर्णन है, पर सांसारिक सिद्धि-लाभ का उपयोग एकमात्र तन्त्र ही बतलाता है। हम यह ऊपर पहले ही कह चुके हैं कि जो कुछ पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में भी है। पर इतना ही नहीं, अपितु संसार के प्रत्येक पदार्थ का किसी-न-किसी रूप में ब्रह्माण्ड के दृश्य और अदृश्य लोकों तथा उनके प्राणियों से सम्बन्ध है। इसलिए जब किसी वस्तु-विशेष को किसी विशेष विधान के अनुसार किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए काम में लाया जाता है, तब वह उक्त कार्य की भी सिद्धि कराता है। मन्त्र-विशेष जो उक्त कार्य में प्रयुक्त होता है, उसका भी अपना विशेष प्रयोजन और महत्व है, जिसके सिद्ध न होने पर कार्य सफल नहीं होता। ग्रह नक्षत्रों के पृथ्वी और उनके प्राणियों से सम्बन्ध की स्थूल बातें तो हम सभी देखते हैं। सूर्य के धब्बों का पृथ्वी पर के आंधी-तूफान का सम्बन्ध, रेडियो-तरंग के प्रसारण की बाधा, रोग, भूकम्प इत्यादि तथा चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के साथ बीमारियों का सम्बन्ध, पूर्णचन्द्र के आकर्षण से समुद्र में ज्वार आना—सभी कुछ जाने देखे और विज्ञान सम्मत हैं; पर विज्ञान अन्तरिक्ष के अनेक रहस्यों को अभी तक सुलझा नहीं सका है।

यहां हम अति प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों से तन्त्र शास्त्र में वृक्षों द्वारा प्राप्त सिद्धियों का संक्षेप में वर्णन करेंगे। स्मरण रहे कि ईश्वर की तीनों शक्तियां—इच्छा, ज्ञान और क्रिया जिस प्रकार सृष्टि की रचना करती हैं, उसी प्रकार साधना में भी ये तीनों तत्त्व आवश्यक हैं। ज्ञान होते हुए क्रिया तब तक फलवती नहीं होती, जब तक कि उसके साथ तीव्र इच्छा-शक्ति का संयोग न हो। तीव्र इच्छा शक्ति भी तभी उत्पन्न होगी, जब

कि प्रयोग में श्रद्धा और विश्वास हो। संत तुलसीदासजी ने ईश्वर को इसीलिए श्रद्धा और विश्वास का रूप कहा है—

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।

इसलिए निम्नलिखित प्रयोगों में ही नहीं, बल्कि समस्त साधनाओं में ये तीनों शर्तें अनिवार्य हैं। केवल चमत्कार देखने जैसा खिलवाड़ करने से अथवा तमाशे के लिए आजमाइश करने से प्रयोगकर्त्ता को असफलता ही हाथ लगेगी, इतना स्मरण रहे।

विष का पूर्व प्रतिकार करना

(१) मेष के सूर्य में एक मसूर दो नीम के पत्ते के साथ खाने से एक वर्ष तक सर्प का भय नहीं रहता। तक्षक भी क्रोध कर उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

(२) श्वेत विष्णुकान्ता का फल और मूल दोनों पीसकर पान करने से सर्प-विष दूर हो जाते हैं। यह अमृतयोग शिवंजी का कहा हुआ है। प्रणवसहित बाजे पर इसका लेप करें। इस योग से बाजे को सुनकर विष से भरा हुआ मनुष्य जाग उठता है।

(३) श्वेत पुनर्नवा को चावल के पानी के साथ अच्छे मुहूर्त में जो पीता है, उसे सर्प काटने का भय नहीं होता। यदि मोहवश सर्प काट भी ले तो स्वयं नष्ट हो जाता है।

(४) आषाढ़ शुक्ल पंचमी के दिन जो अपनी कमर में सिरिस की जड़ बांधता है तथा चावल का पानी पीता है, उसे, सर्पदंशका भय नहीं होता। काटने पर सर्प स्वयं नष्ट हो जाता है।

उपर्युक्त चारों प्रयोगों को निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित कर ग्रहण करें और मन्त्र को ग्रहण या दीपावली में सिद्ध कर लें।

मन्त्र—'ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कंचितामृतमर्चत जटाय ठः ठः स्वाहा।'

(५) जब अमावस्या रवि, मंगल या शनिवार को पड़े तो उस दिन जिस समय आम पर बौर देखे, उसे उसी समय तोड़कर हाथ में खूब मल लें। इसके प्रभाव से केवल हाथ मलकर सुंघाने से बिच्छू का विष तत्काल उतर जाता है। इस तन्त्र का प्रभाव एक वर्ष तक रहता है।

प्रेत-निवारण

(१) रविवार को काले धतूरे की जड़ बांह में बांधें तो भूत-बाधा जाये और फिर कभी न सतावे।

(२) लहसुन एकड़िया के रस में हींग पीसकर भूत-ग्रस्त को सुंघावे या अंजन करें तो भूत-बाधा जाये और फिर न सतावे।

(३) रविवार को तुलसीपत्र, काली मिर्च प्रत्येक आठ-आठ तथा सहदेइ की जड़ लाकर तीनों को तांबे के यन्त्र में भर धूप देकर धारण करने से भूतादिक दूर हो जाते हैं।

(४) नीम के पत्र, वच, हींग, सांप की केंचुली और सरसों—इनको पीसकर धूनी दें तो सभी प्रकार के भूतादि दूर हो जाते हैं।

(५) मुंडी, गोखरू और बिनौला समभाग लेकर गोमूत्र में पीसकर ब्रह्मराक्षस-ग्रस्त को सुंघावें तो निर्दोष हो।

(६) रविवार को विधिपूर्वक शंखाहूली की जड़ लाकर चावल या घृत के संग ब्रह्मराक्षस-ग्रस्त को सुंघावें तो निर्दोष हो।

तंत्र में बन्दे के प्रयोग और सिद्धियां

बन्दा एक विशेष प्रकार का पौधा है, जो दूसरे वृक्षों की डालियों पर बहुधा उत्पन्न होता है। सभी वृक्षों के बन्दे एक ही प्रकार के होते हैं। इसे संस्कृत में भी बन्दा ही कहते हैं। यह जिस वृक्ष पर उत्पन्न होता है, उसी के बनाये भोजन पर अपना निर्वाह करता है, इसलिए परोप-

जीवी है। इसकी जड़ें दृष्टिगोचर नहीं होतीं। जिस स्थान पर यह उत्पन्न होता है, वह स्थान गोलाकार, ठोस रूप में फूलने लगता है और उसमें से शाखाएं और पत्तियां निकलती हैं। ये शाखाएं तथा पत्तियां मूल वृक्ष की शाखाओं और पत्तियों से नितान्त भिन्न प्रकार की होती हैं। इन शाखाओं में लाल रंग के लम्बे पतले गुच्छेदार फूल आते हैं। आम और बेर के वृक्ष पर तो बन्दा आसानी से देखा जा सकता है। आयुर्वेद शास्त्र में चिकित्सा के लिए एकाध प्रकार के बन्दे के उपयोग का निर्देश है जैसे बेर के बन्दे को पीसकर दही में मिश्रित कर खाने से अतिसार (Dysentery) ठीक होता है। इत्यादि-इत्यादि। तन्त्र को छोड़कर अन्य किसी भी विज्ञान ने इसके उपयोग पर विस्तार और गम्भीरता से विचार नहीं किया। तन्त्रशास्त्र बतलाता है किन वारों (दिनों) को किन नक्षत्रों तथा तिथियों के योग में किस वस्तु में किस प्रकार का प्रभाव आ जाता है। मन्त्र द्वारा इसी प्रभाव को शतगुणित, सहस्रगुणित किया जाता है। हम पहले ही कह चुके हैं कि इस ब्रह्माण्ड की समस्त वस्तुएं, समस्त कार्य एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं तथा एक में कोई प्रभाव या परिवर्तन होने पर उसकी लहरें ब्रह्माण्ड के ओर-छोर तक पहुंच जाती हैं। अस्तु! इस प्रकार के लेखों के लिखने का मेरा एकमात्र उद्देश्य यही है कि भारत की ये गुप्त विद्याएं लुप्त न हो जायें और सत्यान्वेषकों द्वारा इनका वास्तविक उपयोग हो।

बन्दा हर वृक्ष पर उत्पन्न होता है, पर यह नियम नहीं है कि अवश्य होगा। इसमें तीन भेद हैं एक बच्चा (अर्थात् नवीन छोटा बन्दा) जो शीघ्र सिद्ध होता है, दूसरा युवा जो विधिपूर्वक यन्त्र से सिद्ध होता है और तीसरा वृद्ध (बहुत अधिक आयु का) जो सिद्ध नहीं होता। सिद्ध किया भी जाये तो कार्य नहीं होता।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए आम का बन्दा

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को आम के बन्दे को धान और रोली से निमन्त्रण दे आवें। दीपावली (अमावस्या) के दिन उसको दूध और बताशा की बलि तथा देवदारु की धूप देकर पूजन करें। फिर वृक्ष को नमस्कार कर नंगा (तान्त्रिक विधान में जहां नंगा होना लिखा है वहां धोती का काछामात्र खोले।) हो सूर्योदय से पहले तोड़ लावें। समस्त कार्य के समय निम्नलिखित मन्त्र का जप करें।

मन्त्र—'ॐ वृक्षराज महाश्रीमान् विष्णु सुख सनातन।
धन-धान्य समृद्धि श्रीं देहि मे अचल प्रभो।'

रात्रि को दीपावली-पूजन करके एकान्त में बन्दे का पांचों प्रकार से पूजन करें, शेष रात्रि में उपर्युक्त मन्त्र का पाठ करें। फिर प्रातःकाल स्नान करके उस बन्दे को धूप देकर यन्त्र में धरकर पास रक्खें तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, धन अक्षय रहता है। लक्ष्मी मन्त्र का सम्पुट देकर विष्णु सहस्रनाम का १०८ पाठ करने तथा दस दिनों बाद हवन करने से एक वर्ष तक तन्त्र पूर्ण जाग्रत रहता है।

जीविका प्राप्ति के लिए पीपल का बन्दा

जब अपना चन्द्रमा बली हो तब रिक्ता तिथि (शनिवार को ४,९, १४ तिथि पड़े तो वह रिक्ता तिथि होती है) के एक दिन पहले संध्या काल को वृक्षराज को निमन्त्रण दे आवें तथा शनिवार को सूर्योदय से पहले बन्दे को तोड़ लावें और तब से दूसरी रिक्ता तिथि पड़ने तक बन्दे की नित्य पांचों प्रकार से पूजा करें। फिर उस दिन निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर यन्त्र में धर धूप देकर पास रखें तो बिना परिश्रम जीविका प्राप्त होती है।

मन्त्र—'मूले ब्रह्मा त्वचि विष्णुः शाखासु च महेश्वरः।
पत्रें पत्रें देवनाथो वृक्षराज नमोऽस्तु ते॥
वृक्षराज नमस्तुभ्यं महाकाय शिखाप्रिय।
सर्वरोगविनाशाय देहि वांदमनामयम्॥'

पलाश के बन्दे की विधि

होलिका के एक दिन पहले संध्या-समय निमन्त्रण दें प्रातः काल सूर्योदय से पहले फूल-अक्षत चढ़ाकर देवदारु का धूप और मोदक की वलि दें। निम्नलिखित मन्त्र को १०८ बार पड़कर अन्न स्थान में स्थापित करें तो धान्य परिपूर्ण रहता है।

मन्त्र—'ॐ वृक्षराज समृद्धस्त्वं त्रिषु लोकेषु वर्तसे।
कुरुष्व धान्यवृद्धिं त्वं क्षेत्रे कीटौघवर्जिते॥'

गूलर के बन्दे की विधि

ग्रहण पड़ने के एक दिन पहले वन्दे को निमन्त्रण दे आवें, फिर ग्रहण के दिन सूर्योदय से पहले शर्बत और हलुआ की वलि देकर नमस्कार कर तोड़ लावें; पश्चात् ग्रहण लगते ही वन्दे का पांचों प्रकार से पूजन कर ग्रहण पर्यन्त लक्ष्मी-गायत्री का जप करें कमलाक्ष की माला से। इसे सुवर्ण यन्त्र में धरकर शिखा में वांधने से भूमिस्थ धन दृष्टि पड़ता है और हाथ लगता है।

धनधान्य अक्षवकरण तन्त्र

(१) इमली का वन्दा पुष्य नक्षत्र में रविवार को प्रातः ले आवें। शनिवार को निमन्त्रण दिये रहें। इसकी धूप-दीप से पांचों प्रकार से पूजन कर निम्न मन्त्र को एक सहस्र जपकर अन्न-धन में धरें तो लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

(२) पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में अनार का तथा सेमर का बन्दा रखने से धन अक्षय होता है।

(३) मघा नक्षत्र में बहुआर (हारसिंगार) वृक्ष का बन्दा लाकर धान्य में रखने से अवश्य ही धान्य अक्षय होता है।

(४) हस्त नक्षत्र में निर्गुंडी (शिखार) का बन्दा ग्रहण कर धान्य में रखने से धान्य अक्षय होता है।

(५) भरणी नक्षत्र में कुश का बन्दा लेकर स्थापन करने से सम्पूर्ण धन-धान्य अक्षय हो जाता है।

(६) रोहिणी नक्षत्र में गूलर का बन्दा ग्रहण कर स्थापन करें तो धन-धान्य अवश्य अक्षय होता है।

उपरोक्त तन्त्रों में निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये—

मन्त्र—'ॐ नमो धनदाय स्वाहा।'

इसे प्रथम दस सहस्र जपकर सिद्ध कर लें, तब कार्य करें।

विविध बन्दाउली-सिद्धियां

(१) कृत्तिका नक्षत्र में थूहर का बन्दा हाथ में धारण करने से वाक्-सिद्धि होती है।

(२) स्वाती नक्षत्र में बेर का बन्दा लेकर हाथ में धारण कर मनुष्यों से जो भी प्रार्थना करें, वह सब प्राप्त कर सकता है।

निम्नलिखित मन्त्र से ग्रहण करें—

मन्त्र—'ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा। ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा।'

(३) शाखोट (शिघोर) का बन्दा, आम का बन्दा, गोखरू और लवण चौथाई भाग लेकर दूध में पीसें और उसी का मस्तक पर तिलक करें तो सब गुप्त प्रकाश हो जाता है। जहां धनादि हों या गुप्तवेश,

गन्धर्व, यक्षिणी, यक्षादि जो कोई भी लोक में स्थित हों, सब प्रकट हो जाते हैं। इसमें संदेह नहीं।

(४) अश्लेषा नक्षत्र में शनिवार के दिन सायंकाल जब मंगल अष्टम हों, अनार के बीज का रस, कमल को जड़ एवं शतावरी का रस ग्रहण कर, उससे अंजन बनाकर लगावें तो सब पूर्ण प्रकाश हो जाता है।

(५) वट-वृक्ष का बन्दा रोहिणी नक्षत्र में ग्रहण कर जो हाथ में धारण करें तो, वह सबको वशीभूत कर सकता है। ऐसा विश्वामित्र ने कहा है।

(६) जब कृत्तिका नक्षत्र मंगलवार युक्त हो तब एक दिन पूर्व निमन्त्रण देकर उक्त तिथि को नंगा होकर कैथ का बन्दा लावें। इसे विधि से मुख में रखकर कहीं जाये तो उसको शस्त्र न लगें।

बट * का तान्त्रिक प्रयोग

* वर नीचे वर देखिकै ताको न्यौते जाय।
दीप-दान को लाइये, अर्धरात्रि को ल्याय॥
न्हाय धोय अरु नग्न ह्वै, खेवै धूप लगाय।
पीछे वाको लीजिये मन में प्रीति बढ़ाय॥
घर में पोत धराइये, अन-धन कोठी माहिं।
देव इष्ट जो पूजिये, रहैं लक्ष्मी घर माहिं॥

---

* वरगद

१३ नवग्रह शान्ति के तांत्रिक उपाय

सूर्यादि ग्रहों की अनिष्ट स्थान-स्थिति और दृष्टि से प्राणी पीड़ित होते हैं एवं उनकी शुभ स्थान-स्थिति और दृष्टि से सुख, सौभाग्य तथा समृद्धिसम्पन्न होते हैं। शास्त्रों में इस विषय का विस्तारपूर्वक वर्णन है। स्कन्द पुराण में तो यह भी लिखा है कि भूलोकवासी मनुष्यों की तो बात ही क्या है; देवता, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और किन्नरादि भी ग्रहों की पीड़ा से पीड़ित होते हैं। शनैश्चर के प्रकोप से राजा सौदास को अखाद्य भक्षण करना पड़ा। राहु से पीड़ित हो राजा नल पृथ्वी पर भटकते फिरे। मंगल के दोष से भगवान् राम को राज्य से वंचित हो बनवासी होना पड़ा। अष्टम चन्द्रमा के दोष से हिरण्यकशिपु की मृत्यु हुई। सप्तमस्थ सूर्य के दोष से रावण मारा गया। जन्म स्थान-स्थित बृहस्पति के दोष से दुर्योधन का निधन हुआ। बुध की पीड़ा में पाण्डवों को दास वृत्ति करनी पड़ी। षष्टस्थान स्थित शुक्र के दोष से युद्ध में हिरण्याक्ष मारा गया। इसी प्रकार और बहुत से लोग ग्रह दोष से पीड़ित हुए हैं।

आयुर्वेद के भैषज्यरत्नावलि ग्रन्थ में लिखा है कि सूर्यादि ग्रहों की प्रतिकूलता में व्याधिग्रस्त रोगी को औषधि भी अनुकूल फल नहीं करती; क्योंकि औषधि के गुण-प्रभाव-बल-वीर्य को ग्रह हरण कर लेते हैं। अतः पहले ग्रहों को अनुकल करके बाद में चिकित्सा करनी चाहिए।

ग्रहों को अनुकूल करके मनुष्य जो भी कर्म करता है सभी कर्म सफल होते हैं। ग्रहों की प्रतिकूलता में किए गए सब कर्म निष्फल हो जाते हैं; क्योंकि हानि और लाभ, ह्रास और वृद्धि ग्रहों के अधीन हैं। अतएव ग्रहों की अनुकूलता प्राप्त करना परम आवश्यक है।

सूर्यादि ग्रहों की प्रसन्नता एवं अनुकूलता प्राप्ति के लिए शास्त्रों में रत्न और यन्त्र धारण, व्रत और जप का विधान बताया गया है।

आयुर्वेद के भावप्रकाश नामक ग्रन्थ में रत्नो के गुण प्रकरण में लिखा है—**'रत्नानि मनोज्ञानि ग्रहदोषहराणि च'** अर्थात् रत्न सुन्दरता को देते हैं और ग्रह दोष को हरण करते हैं।

कौन-सा रत्न किस ग्रह को प्रसन्न कर उसका दोष दूर करता है, इस प्रश्न के उत्तर में रत्नमाला नामक ग्रन्थ में कहा गया है कि सूर्य का रत्न माणिक्य है। चन्द्रमा का रत्न सुन्दर और निर्दोष मोती है। मंगल का मूंगा, बुध का पन्ना, बृहस्पति का पुखराज, शुक्र का हीरा, शनि का निर्मल नीलम, राहु का गोमेद और केतु का रत्न लहसुनिया है। इन रत्नों को धारण करने से इन ग्रहों की प्रसन्नता प्राप्त होती है और इनका अनिष्टकर दोष दूर हो जाता है।

सर्व साधारण के लिए रत्नों को धारण करना सुलभ और सुगम नहीं है। इसलिए लोक कल्याण के लिए परम कृपालु महर्षियों ने ग्रहों के दोष-निवारण और प्रसन्नता के लिए यन्त्र धारण करना भी बताया है। ग्रहों के यन्त्र ये हैं—

ग्रहों के यन्त्र

सूर्य का यन्त्र रविवार के दिन, चन्द्रमा का यन्त्र सोमवार के दिन, मंगलवार का यन्त्र मंगलवार के दिन, बुध का यन्त्र बुधवार के दिन,

सूर्य का यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चन्द्र का यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगल का यन्त्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बृहस्पति का यन्त्र बृहस्पतिवार के दिन, शुक्र का यन्त्र शुक्रवार के दिन, शनि का यन्त्र शनिवार के दिन, राहु और केतु का यन्त्र भी शनिवार के दिन अथवा जिस ग्रह के घर में राहु और केतु बैठे हों, उस ग्रह के दिन लिखना और धारण करना चाहिए। अनार की लकड़ी की कलम से अष्टगन्ध (श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, अगर, तगर, केशर, कस्तूरी, कपूर और गोरोचन) से भोजपत्र पर इन यन्त्रों को लिखना चाहिए। सूर्य और मंगल का यन्त्र तांबे के ताबीज में, चन्द्रमा और शुक्र का चांदी के ताबीज में, बुध और बृहस्पति का यन्त्र सोने के ताबीज में, शनि, राहु और केतु का यन्त्र लोहे के ताबीज में रखकर धारण करना चाहिए।

सूर्यादि ग्रह विधि पूर्वक व्रत और मन्त्र-जप करने से भी प्रसन्न और अनुकूल होकर मनोनीत शुभ फल प्रदान करते हैं। व्रत और मन्त्र-जप की विधि इस प्रकार है—चैत्र, पौष और अधिक मास छोड़कर किसी भी महीने के प्रथम रविवार के दिन सूर्य का व्रत आरम्भ करके निश्चित अवधि तक प्रति रविवार को करना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा का व्रत सोमवार को, मंगल का मंगलवार को, बुध का बुधवार को, बृहस्पति

बुध का यन्त्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

बृहस्पति का यन्त्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

शुक्र का यन्त्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

का बृहस्पतिवार को, शुक्र का शुक्रवार को और शनिश्चर का व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार को आरम्भ करके निश्चित अवधि तक करना चाहिए। राहु और केतु का व्रत शनिवार को अथवा राहु और केतु जिस ग्रह के घर में हों उस ग्रह के वार में करना चाहिए। सभी व्रत के दिन प्रातः स्नान करके सूर्य को अर्घ्य देना आवश्यक है। व्रत के दिन एक समय भोजन करना चाहिए। सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और बुध के व्रत में नमक नहीं खाना चाहिए। व्रत के दिन जो चीज भोजन करे, वह चीज यथाशक्ति दान करनी चाहिए। व्रत की समाप्ति के दिन यथाशक्ति ब्राह्मण और वटुकों को भोजन करावे और ग्रह की प्रिय वस्तु का दान करे। सूर्यादि सभी ग्रहों के व्रत में बस यही साधारण नियम हैं।

सूर्य का व्रत—एक वर्ष या ३० रविवारों तक अथवा १२ रविवारों तक करना चाहिए। व्रत के दिन लाल रंग का वस्त्र धारण करके **'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः'** इस मन्त्र का १२ या ५ अथवा ३ माला जप करे। जप के बाद शुद्ध जल, रक्त चन्दन, अक्षत, लालपुष्प और दूर्वा से सूर्य को अर्घ्य दे। भोजन में गेहूं की रोटी, दलिया, दूध, दही, घी और चीनी खावे। नमक नहीं खावे। इस व्रत के प्रभाव से सूर्य का अशुभ

शनि का यन्त्र			राहु का यन्त्र			केतु का यन्त्र		
१२	७	१४	१३	८	१५	१४	९	१६
१३	११	९	१४	१२	१०	१५	१३	११
८	१५	१०	९	१६	११	१०	१७	१२

फल शुभ फल में परिणत हो जाता है। तेजस्विता बढ़ती है। शारीरिक रोग शान्त होते हैं। अरोग्यता प्राप्त होती है।

चन्द्रमा का व्रत—५४ सोमवारों तक या १० सोमवारों तक करना चाहिए। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण कर **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः'** इस मन्त्र का ११ या ५ अथवा ३ माला जप करे। भोजन में बिना नमक के दही, दूध, चावल, चीनी और घी से बनी चीजें ही खावे। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ होता है। मानसिक कष्टों की शान्ति होती है। विशेष कार्य सिद्धि में यह व्रत पूर्ण लाभदायक होता है।

मंगल का व्रत—४५ या २१ मंगलवारों तक करना चाहिए। यह व्रत अधिक दिन भी किया जा सकता है। लाल वस्त्र धारण करके **'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः'** इस मन्त्र को ७ या ५ या ३ माला जपे। भोजन में गुड़ से बना हलवा या लड्डू इत्यादि खावे। नमक नहीं खावे। इस व्रत के करने से ऋण से छुटकारा मिलता है। सन्तान सुख प्राप्त होता है।

बुध का व्रत—४५, २१ या १७ बुधवारों तक करना चाहिए। हरे रंग का वस्त्र धारण करके **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** इस मन्त्र का

१७, ५ या ३ माला जप करे। भोजन में नमक रहित मूंग से बनी चीजें खानी चाहिए। जैसे मूंग का हलवा, मूंग की पंजीरी, मूंग के लड्डू इत्यादि। भोजन से पहले तीन तुलसी के पत्ते चरणामृत या गंगाजल के साथ खाकर तब भोजन करे। इस व्रत के करने से विद्या और धन का लाभ होता है। व्यापार में उन्नति होती है और शरीर स्वस्थ रहता है।

बृहस्पति का व्रत—३ वर्ष, १ वर्ष अथवा १६ बृहस्पतिवारों तक करना चाहिए। पीले रंग के वस्त्र धारण कर **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** इस मन्त्र को १६, ५ या ३ माला जपे। भोजन में चने के बेसन, घी और चीनी से बनी मिठाई लड्डू ही खावे। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि और विद्याप्रद है। इस व्रत से धन की स्थिरता और यश की वृद्धि होती है। अविवाहितों को यह व्रत विवाह में सहायक होता है।

शुक्र का व्रत—३१ या २१ शुक्रवारों तक करना चाहिए। श्वेत वस्त्र धारण करके **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** इस मन्त्र का २१, ११ या ५ माला जप करे। भोजन में चावल, चीनी, दूध, दही और घी से बने पदार्थ भोजन करे। इस व्रत के करने से सुख-सौभाग्य और ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शनिश्चर का व्रत—५१ या १९ शनिवारों तक करना चाहिए। काला वस्त्र धारण करके **'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः'** इस मन्त्र को १९, ११ या ५ माला जपे। जप करते समय एक पात्र में शुद्ध जल, काला तिल, दूध, चीनी और गंगाजल अपने पास रख ले। जप के बाद इसको पीपल वृक्ष की जड़ में पश्चिम मुख होकर चढ़ा दे। भोजन में उड़द (कलाई) के आटे से बनी चीजें पंजीरी, पकौड़ी, चीला और बड़ा इत्यादि खावे। कुछ तेल में बनी चीजें अवश्य खावे। फलों में केला खावे। इस

व्रत के करने से सब प्रकार की सांसारिक झंझटें दूर होती हैं। झगड़े में विजय प्राप्त होती है। लोहे, मशीनरी, कारखाने वालों के लिए यह व्रत व्यापार में उन्नति कारक और लाभदायक होता है।

राहु और केतु का व्रत—१८ शनिवारों तक करना चाहिए। काले रंग का वस्त्र धारण करके राहु के व्रत में **'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः'** इस मन्त्र एवं केतु के व्रत में **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** इस मन्त्र की १८, ११ या ५ माला जपे, जप के समय एक पात्र में जल, दूर्वा और कुशा अपने पास धर ले। जप के बाद इनको पीपल की जड़ में चढ़ा दे। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भूजा और काले तिल से बने पदार्थ खाये। रात में घी का दीपक पीपल वृक्ष की जड़ में रख दिया करे। इस व्रत के करने से शत्रु का भय दूर होता है, राज पक्ष से (मुकदमे में) विजय मिलती है, सम्मान बढ़ता है।

ज्योतिष सीखिए

ज्योतिष गणित, फलित, हस्तरेखा, अंक ज्योतिष, सामुद्रिक, यन्त्र मन्त्र तन्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि प्राचीन गूढ विद्याओं को घर बैठे सिखाने वाले पत्राचार पाठ्यक्रमों की विवरण पत्रिका निशुल्क मंगाइये।

भारतीय ज्योतिष विद्या प्रचार समिति (पंजीकृत)

ई १२८/१ नारायण विहार, नई दिल्ली-२८

१४ आथर्वण तन्त्र

आथर्वण तन्त्र का अर्थ है अथर्ववेद में वर्णित तन्त्र। वेद हमारे सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं और तन्त्र प्रयोगों का आदि ग्रन्थ अथर्व वेद है। इसी से तन्त्र-मन्त्र का सूत्रपात हुआ। उन प्रयोगों में से कुछ सरल तथा उपयोगी तन्त्र प्रयोगों को यहां दिया जा रहा है।

बाधा निवारण तन्त्र

बहुधा देखा जाता है कि सब प्रकार से परिश्रम करने पर, पूरा प्रयत्न करने पर और सभी विधि विधान ठीक से करने पर भी काम में सफलता नहीं मिलती। किसी-न-किसी प्रकार की बाधा, विघ्न या रुकावट पड़ जाने से काम में देर हो ही जाती है अथवा दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियों द्वारा बना बनाया काम बिगाड़ दिया जाता है। शत्रु, प्रतिद्वन्दियों, विरोधी वर्ग के षड्यन्त्रों द्वारा भी कार्य में असफलता प्राप्त होती है। ऐसे अवसर पर अथर्ववेद (६/४५/९) के निम्न मन्त्र के जप करने से मनोवांछित कार्य तुरन्त पूरा हो जाता है—

"कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः"

संकल्प लेकर इस मन्त्र का जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है फिर कार्य आरम्भ करते समय या कार्य के लिए प्रस्थान करते समय या सम्बन्धित व्यक्तियों से साक्षात्कार करते समय इस मन्त्र की ५-७ बार

आवृत्ति करने से मन में या मुख में जिव्हा से या कण्ठ से कहने मात्र से अनुकूल प्रभाव पड़ता है। मन्त्र सिद्ध न भी किया हो तो भी प्रभावकारी है परन्तु विधिपूर्वक सिद्ध कर लिया जाए तो इसमें शक्ति उत्पन्न हो जाती है। १८००० संख्या, में जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

ग्रहण या किसी अन्य पर्व काल में उपरोक्त संख्या में जपने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

रोग निवारण मन्त्र

अथर्ववेद के निम्नलिखित मन्त्र से सभी प्रकार के रोगों का निवारण किया जा सकता है।

"अपेहि मनसस्पतेऽपक्राम परश्चरः।
परो निऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः॥

—२०/९६/२४

वेद वाक्य पर पूर्ण श्रद्धा आवश्यक है। रोग जितनी देर का, साध्य असाध्य, होगा, मन्त्र जप भी उतनी अधिक बार करना होगा। इसमें साधक की अपनी आत्मशक्ति संकल्पशक्ति जितनी प्रबल होगी उतना ही अधिक प्रभाव रोगी पर पड़ेगा। इसमें शक्ति संपात द्वारा रोग निवारण किया जाता है। आप इस मन्त्र को पढ़ते हुए या जप करते हुए अपने हाथों को रोगी के शरीर पर या रोगी भाग पर फेरते हुए अपने मनोबल तथा मन्त्र शक्ति द्वारा रोगी को स्वस्थ करने का दृढ़ संकल्प करते हैं। इसके लिए इतना आवश्यक है कि मन्त्र को इतनी संख्या में तो जपा ही जाय कि वह आपको मुंहजबानी याद हो जाए शुद्ध उच्चारण से आप समय पर उसे कह सकें। हाथ की उंगलियों के अग्र भाग से इच्छा शक्ति द्वारा विद्युत किरणें निकलती हैं उनके द्वारा

ही कार्य किया जाता है। शरीर को स्पर्श करें या हाथ को उंगलियों के अग्र भाग से विद्युत किरणें प्रवाहित करते हुए शरीर के निकटतम ले जाकर ऊपर-नीचे दायें-बायें घुमाने-फिराने से शक्ति सम्पात होता है उसी से स्वास्थ्य लाभ होता है। मन्त्र को सिद्ध करना हो तो जप संख्या ३५००० है। सिद्ध मन्त्र में अधिक शक्ति होती है यह तो निर्विवाद है ही। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि ग्रहण काल में, होली, दीवाली, शिवरात्रि में जप करने से केवल एक ही रात में (दिन में ग्रहण हो तो जितनी देर ग्रहण पड़े पर उतने ही समय) जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

रोग दोष शामक तन्त्र

अथर्ववेद के रणसूक्त के मन्त्र कैंसर, कारबंकल, नासूर तथा भगन्दर जैसे असाध्य रोगों को दूर करने तथा प्रबल-से-प्रबल शत्रु को दमन करने के लिए अमोघ बताये गये हैं। कभी विफल नहीं होते। रोगी के जिस अंग में रोग या घाव हो नई मूंज को कूट कर भिगो कर बनाई गई रस्सी से उस अंग को ढीला-ढीला बांध दीजिये। इस तन्त्र में इसके अतिरिक्त अपामार्ग की जड़ की जरूरत होती है। अपामार्ग चिरचिटे को कहते हैं। इसके पौधे गांवों में तथा जंगलों में बहुतायत से पाये जाते हैं। इसकी जड़ को हाथ में लेकर उससे रोगी के शरीर के रोगी भाग को स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़ते जाएं।

ॐ विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्य भूरिधायसम्।
विद्मो ष्वस्य मातरं पृथिवीं भूरिवर्पसम्॥

उया के परिणोनमाश्मानं तन्वं कृधि ।
वीडुर्वरीयोऽरातीरप द्वेषांस्या कृधि ॥
वृक्षं यद्गावः परिषस्वजाना अनुस्फुरं शरमर्चयन्त्यृभुम् ।
शरुमस्मद्यावयदिद्युमिन्द्र ॥
यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजनम् ।
एवा रोगं चास्रावं चान्तस्तिष्ठतु मुञ्ज इत् ॥

यह क्रिया प्रतिदिन २१ दिन तक की जानी चाहिये। उपरोक्त मंत्र की कम-से-कम ३ आवृत्तियां तो प्रतिदिन करनी ही चाहिये। परन्तु रोग यदि अधिक गम्भीर स्थिति में है तो ७ या इससे अधिक आवृत्तियां भी की जानी चाहिये। इस क्रिया (अपामार्ग का संस्पर्शन समाप्त होने) के बाद रोगी को काली तुलसी की ३६ पत्तियां गाय के पाव भर दही में मथकर नित्य पिलानी चाहिये। पत्तियों को मथने से पहले छोटे-छोटे टुकड़े कर लेना उचित होगा। उपरोक्त मंत्र काफी बड़ा है। परन्तु प्रयोग करने से पहले उसे इतनी बार तो अवश्य पढ़ लिया जाए कि शुद्ध उच्चारण से आप बिना पुस्तक देखे स्मृति से बोल सकें। इसीलिये मंत्र को सिद्ध करने के लिए जोर दिया जाता है जिससे वह याद तो होता ही है उससे शक्ति भी उत्पन्न हो जाती है।

आनुवंशिक रोग नाशक तन्त्र

इसी क्रम में यह तंत्र भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। ऐसे रोगों के विषय में जो वंश परम्परा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे हैं, यह तन्त्र बहुत सफल रहता है। अन्य चिकित्सायें बहुधा असफल रहती हैं। ऐसे रोगों का उपचार अथर्ववेद में दिये गये निम्न तन्त्र से सफलता से किया जा सकता है।

रोगी को सामने बैठाकर हिरन के सींग को दाहिने हाथ में लेकर निम्न मंत्र पढ़े—

नाति दूरस्थो य एकश्छदिरिव प्रकाशमानो भवति।
तेनाऽहं तवाङ्गेभ्यः क्षेत्रियम् अपसरयामि॥

फिर मंत्र पाठी प्रयोगकर्त्ता तांबे के किसी पात्र में जल लेकर रोगी के रोगमुक्त होने की प्रार्थना अथर्वा ऋषि से करे। निम्नलिखित मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करे। जल सहित ताम्र पात्र को हाथ में लेकर यह मन्त्र पढ़े।

अपवासे नक्षत्राणामपवास उषसामुत्।
अपात् सर्वां दूर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छतु॥

हिरन के सींग को उस जल में डुबाकर सींग को जल में चारों ओर घुमाते हुए उपरोक्त मंत्र को २१ बार पढ़ें। इस प्रकार सींग का आलोडन करके मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित जल को रोगी को पिला दे। इस क्रिया के लिए हिरन के सींग का छोटा-सा अग्र भाग ही पर्याप्त होता है। सींग के इस टुकड़े को या उसके और भी छोटे अग्र भाग को सोने से मढ़कर ताबीज बनाकर रोगी को पहना दे। कितनी ही पीढ़ी से चला आने वाला कैसा भी असाध्य आनुवंशिक रोग हो केवल इतनी सी ही तान्त्रिक प्रक्रिया से सदा के लिए चला जाता है। हिरन का सींग किसी भी दो सींग वाले हिरन का या बारहसिंगे के सींग का टुकड़ा भी प्रयोग में लाया जा सकता है।

सर्व ज्वर हरण तन्त्र

किसी भी प्रकार का ज्वर हो, औषधि काम न करती हो, ज्वर से छुटकारा न मिल रहा हो तो नीचे लिखे मन्त्र से रोगी के सिर पर

अपामार्ग और गंगा जल से अभिसिंचन करे। तीन दिन में रोगी पूर्ण स्वस्थ हो जायेगा। अपामार्ग का पौधा लाकर उसके डालपात से कुशा बना ले और किसी पात्र में गंगा जल लेकर कुशा के द्वारा रोगी पर जल के छींटे मारे। इस प्रक्रिया को अभिसिंचन कहते हैं। मन्त्र नीचे दिया जा रहा है। प्रयोग करने से पहले उसे सिद्ध कर ले या शुद्ध उच्चारण के साथ भली-भांति मुखाग्र कर लें।

"अथर्वाङ्गिरसे नमः। ॐ अथर्वा ऋषये नमः। नमः अङ्गिरसे ह्रीं क्लीं ठः ठः भो भो ज्वर भृणु भृणु हं हं गर्ज गर्ज एकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चतुराहिकं साप्ताहिकं मासिकं अर्द्धमासिकं वार्षिकं द्विवार्षिकं मौहूर्तिकं नैमिषिकं अट अट भट भट हुं फट·····अमुकस्य (यहां रिक्त स्थान पर रोगी का नाम लिया जाना चाहिये) ज्वर हन हन मुञ्च मुञ्च भूम्यां गच्छ स्वाहा।"

इस मन्त्र से नित्य कई बार अभिसिंचन करना चाहिए।

पारिवारिक सुख सौहार्द शान्ति के लिये तन्त्र

यदि किसी परिवार में कलह, फूट, विद्वेष, विघटन हो रहा हो, तनाव व्याप्त हो या एक-दूसरे को नीचा दिखाने को षडयन्त्र रचे जा रहे हों अथवा तलाक, बटवारा, मुकदमे बाजी की नौबत आ गई हो तो यह तन्त्र परिवार में एकता, प्रेम, स्नेह और सुख शान्ति स्थापित करने के लिए अमोघ है।

श्रावण मास को पूर्णमासी से इस तन्त्र को आरम्भ किया जाता है। घर का स्वामी नीचे लिखे मन्त्रों से १०८ आहुतियां अष्टांग हवन सामग्री से आम की लकड़ी की समिधाओं में दे। गृह स्वामी या उसका

पुरोहित नित्य हवन करे। हवन में समिधा आम की लकड़ियों की हो और हवन सामग्री निम्न प्रकार से बनाई जाय। (१) सफेद चन्दन २५० ग्राम (२) लाल चन्दन १०० ग्राम (३) काले तिल २५० ग्राम (४) अगर ५० ग्राम (५) नागर मोथा ५० ग्राम (६) कपूर ५० ग्राम (७) शुद्ध केसर ५ ग्राम (८) जौ ५० ग्राम (९) चावल ५० ग्राम (१०) पंच मेवा १२५ ग्राम (११) शुद्ध घी यथाशक्ति (१२) शक्कर ५० ग्राम।

आहुति मन्त्र

स हृदयं सौमनस्यमविद्वेषं कृपोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यतःवत्सं जातमिवाघ्न्या ॥
अनुव्रत पितुः पुत्रो मातृः भवतु संमना।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचम् वदतु शान्तिवाम् ॥

यदि पारिवारिक वैर कई पीढ़ियों से चला आ रहा हो तो इस तन्त्र को पूरे एक वर्ष (१२ पूर्णिमा) आषाढ़ी पूर्णिमा तक प्रत्येक पूर्णमासी को करना चाहिये। यदि वैर-भाव नया हो अथवा पारिवारिक कलह आरम्भिक अवस्था में हो तो ४१ दिन तक उपर्युक्त मन्त्रों से हवन करने पर परिवार में सुख-शान्ति सौहार्द स्नेह स्थापित हो जाता है। नित्य हवन की स्थिति में आहुतियां कम की जा सकती हैं। सामर्थ्य व सुविधानुसार संख्या का नियमित नियम रखा जा सकता है।

१५ | तन्त्र के कुछ अनुभूत प्रयोग

असाध्य रोग निवारक तन्त्र

श्रीलक्ष्मी नारायण शर्माजी मेरे बहनोई हैं और मैं चौमूं जिला जयपुर के राजकीय विद्यालय में प्रधान अध्यापक हूं। मेरे एक सहायक अध्यापक एक दिन बहुत चिंतित अवस्था में मेरे पास आये। उन्होंने बताया कि उनके एक भतीजे की अवस्था बहुत चिन्ताजनक है। डाक्टरों ने जबाब दे दिया है। उसके बचने की कोई सम्भावना नहीं है। बच्चे के माता-पिता व अन्य सम्बन्धी बाद में उलाहना न दें इसलिए कुछ लोग सलाह दे रहे हैं कि उसे इलाज के लिए जयपुर ले जाया जाए परन्तु रोगी की हालत को देखते हुए यही आशंका है कि कहीं वह रास्ते में ही दम न तोड़ दे। आपकी क्या राय है। मैंने कहा कि आपको छुट्टी चाहिए तो छुट्टी ले लीजिए रुपये की जरूरत हो तो रुपयों का प्रबन्ध कर दिया जाएगा। मैंने सोचा कि यह महाशय लोगों को यही कहेंगे कि हैडमास्टर साहब ने सलाह दी थी कि रोगी को जयपुर इलाज के लिए ले जाना बेकार है। इससे अपने ऊपर यह दायित्व क्यों लूं। थोड़ी देर बाद वह फिर मेरे पास आये और बताया कि बच्चे की हालत बहुत खराब हो गई है और अब तो भगवान का ही सहारा है। सबकी सलाह से हम उसको जयपुर नहीं ले जा रहे।

हमारी एक ताई जी थीं। उस समय मैं अपने परिवार के साथ एटा में था। बचपन में मैंने अपनी ताई जी को कई प्रकार के तन्त्र करते

देखा था। अचानक मुझे उनका एक सफल प्रयोग याद आ गया और अन्तर स्फूर्ति से प्रेरित होकर मैंने उन सज्जन से कहा कि आप मेरे अनुरोध से यह प्रयोग करें। मैंने उनसे कहा कि आप घर जाइये स्नान करके और साफ कपड़े पहनकर १०८ बार गायत्री मन्त्र का जाप करिए। रोगी की चारपाई में से थोड़ा सा बान (जेवड़ी जिससे चारपाई बनाई जाती है।) निकाल लीजिए। अगर चारपाई मूंज की जेवड़ी से नहीं बनी है तो पुराना बान ले लीजिए। उस जेवड़ी के टुकड़े से रोगी को लेटी हुई अवस्था में सिर से पांव के पंजे तक नापकर टुकड़ा काट लीजिये। उस टुकड़े को दुव्वर कर लो अर्थात् दोनों सिरों को मिला लो और पूरे टुकड़े को सरसों के तेल में भिगो लो, उसके बाद दोनों सिरों को हाथ में लेकर रोगी के सिर पर दोनों हाथों पर पैरों पर ऊपर से लेकर नीचे तक शरीर के भागों से स्पर्श कराते हुए सात बार उसार दो। यानी सात बार उस मूज के टुकड़े के सिरों को ऊपर नीचे शरीर पर सिर से पैरों की ओर उसके हाथ पैर व अन्य अङ्गों पर से होते हुए फिराओ और जिस अंग में रोग है उस पर भी स्पर्श कराओ। मन में यह कहते जाओ कि इसका रोग इस मूंज की रस्सी के टुकड़े में आ जाए। यदि पढ़ सको तो निम्न श्लोक या चौपाई पढ़ते जाओ।

श्लोक—रोगान शेषान पहंसि तुष्टा रुष्टातु कामान् सकलान् भोष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति।

अथवा

चौपाई—नाशै रोग हरै सब पीरा
जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥

उसके बाद रोगी के पायताने (पैरों की ओर) जहां रोगी की दृष्टि ठीक से पड़े उस मूंज की रस्सी के टुकड़े को जो दुव्वर है सिरों को नीचे

की ओर करके किसी वस्तु से लटका दो और उसके सिरों में माचिस से आग लगा दो। आग की लपट बहुत तेजी से ऊपर की ओर जाएगी और उसमें से सर्र सर्र की सी आवाज भी निकलेगी। उसमें से तेल की बूंदें नीचे भी टपकेंगी। स्थान खराब न हो इसलिए उसके नीचे कोई बर्तन रख सकते हो। आस-पास कोई कपड़ा वगैरह न हो कि आग लगने का डर हो। किसी लोहे की छड़ में लटका कर हाथ में पकड़कर भी यह प्रयोग ठीक से किया जा सकता है। रोगी को कहो कि वह इस जलती हुई रस्सी को देखता रहे। रोगी का पायताना कभी भी दक्षिण दिशा की ओर नहीं करना चाहिए। यदि रोगी बेहोश है और जलती हुई अग्नि शिखा को नहीं देख सकता तो भी प्रयोग किया जा सकता है।

मैंने यह सारी विधि विस्तार से उन मास्टर जी को बता दी और बड़े विश्वास व श्रद्धा से उन्होंने यह प्रयोग अपने भतीजे पर किया। भगवत कृपा का चमत्कार कि जो बच्चा मरणासन्न था और डाक्टरों ने जवाब दे दिया था उसकी हालत संभलने लगी। मास्टर जी भागे-भागे आये और कहने लगे कि गौड़ साहब आपने यह प्रयोग पहले ही क्यों नहीं बता दिया मेरे सैकड़ों रुपये डाक्टरों पर बरबाद होने से बच जाते। मैंने उनको समझाया कि इसी प्रयोग को शाम को फिर कर देना और तीन दिन तक करते रहना। कहने की जरूरत नहीं कि बच्चा बिल्कुल स्वस्थ हो गया और मास्टर जी ने हम सब को मिठाई बांटी। बाद में यह प्रयोग उन मास्टर जी ने कई बार आजमाया। वे एक बार एक गांव में गये थे वहां उन्होंने सुना कि गृहस्वामी की भैंस ने दूध देना बन्द कर दिया है तो वहां पर भी उन्होंने इस प्रयोग से भैंस को ठीक कर दिया वह दूध देने लगी और मास्टर जी की खूब खातिर हुई। बच्चों की नजर तो इस प्रयोग से तुरन्त उतर जाती है।

रवीन्द्रनाथ गौड़, एम० ए०

घर से भागे हुए व्यक्ति को बुलाने का तान्त्रिक उपाय

आपको तो मालूम ही है कि राजस्थान में पानी की परेशानी सभी जगह रहती है। जो मकान हमने किराये पर लिया था उसके सामने के मकान में हैण्ड पम्प लगा हुआ था और मेरी पत्नी को उस मकान में रोज पानी लेने जाना पड़ता था। उस मकान की मालकिन का लड़का लगभग ८-१० वर्ष पहले ही घर से भाग गया था और उसका कोई अता-पता नहीं था। जब लड़का घर से गया था उस समय उसकी उम्र १४-१५ साल की थी। उसकी मां उसके वियोग में बहुत व्याकुल रहती थी। एक बार बेचारी उस स्त्री ने मेरे सामने भी अपना दुखड़ा सुनाया। मैं कोई मन्त्रज्ञ-तन्त्रज्ञ नहीं हूं न इस तरह प्रयोग करता था और न ही कोई मुझे इस प्रकार से जानता था। उस महिला ने भी मुझसे इस आशा से अपना दुःख नहीं सुनाया था कि मैं उसको कोई उपाय बताऊंगा। परन्तु उसकी कहानी सुनकर मुझे बहुत समय पहले हरिद्वार में एक महात्मा से सुने हुए तन्त्र प्रयोग की याद आ गई और मैंने सोचा कि क्यों न इस महिला को वही प्रयोग करने को कहा जाए। अतएव मैंने उस महिला को वह प्रयोग विस्तार से बता दिया।

मैंने उस महिला से कहा कि किसी शनिवार के दिन वह शमशान में से कुछ मिट्टी लेकर आये। शमशान तक न जा सके तो चौराहे पर से कुछ मिट्टी लेकर आये। इस कार्य को करते हुए कोई उसे टोके नहीं। यह न पूछे कि क्या कर रही है, क्यों यह मिट्टी ले रही है। बस्ती के चौराहे पर टोका-टाकी की आशंका हो तो बस्ती के बाहर के किसी चौराहे पर से मिट्टी लाये।

ऊपर बताई गई विधि से लाई गई मिट्टी को सरसों के तेल में गूंधे। जिस प्रकार आटे को पानी में गूंधा जाता है उसी प्रकार उस मिट्टी को तेल में गूंधे और एक मनुष्य की मूरत मिट्टी की बनायें। जैसी भी अनगढ़ मूरत बने बना ले। यह सब काम भी उसी शनिवार को या उसके अगले शनिवार को दिन में या रात में एकान्त में करें। घर में ही करें। यह मूरत श्री भैरवजी की मूर्ति के प्रतीक में बनाई जाती है। ज्यादा बड़ी न हो परन्तु एक बालिश्त लम्बी तो हो लगभग २० से ३० सेंटीमीटर लम्बी और उसके पैर इतने मोटे हों कि वह मूरत खड़ी रह सके। तेल इतना ही मिलाओ कि मिट्टी की लुगदी सख्त व गाढ़ी रहे बहुत पतली न हो जाए। पतली हो जाए तो मिट्टी और मिला दो। दोनों पैरों पर धड़ बनाओ। दोनों हाथ चाहें तो नीचे लटकते बना लो या सीधे बनाना है तो उसके बीच में लोहे या तांबे का सीधा तार डालकर उस पर मिट्टी चढ़ा दो। गर्दन व मुख बनाकर उस पर आंख, नाक, कान, मुख के निशान बना दो। इस प्रकार जब मूरत बन जाए तो उसको किसी तांबे की परात या थाली में रखकर स्थापित कर दो।

मूरत वाले बरतन को एक अलग-सी जगह में रख दो। इसकी रोज पूजा करनी होगी। पूजा की विधि यह है कि सरसों के तेल का दीपक जलेगा, धूप बाजार में जो मिलती है वही जला सकते हो। थोड़ा लोबान भी जलाया जा सकता है। फूल नीले रंग के या काले रंग के मिल जायें तो चढ़ा दो। टीका लाल रंग का सिन्दूर का या लाल चन्दन का तिलक लगाया जाता है। आंखों में सुरमा भी लगाया जाता है। इसका क्रम इस प्रकार होता है कि पहले मूर्ति पर तेल चढ़ाओ, तेल से स्नान कराओ फिर टीका लगाओ अंजन सुरमा लगाओ काले तिलों से अक्षत चढ़ाओ, काले नीले फूल चढ़ाओ। धूप लौवान जलाओ दीपक जलाकर दीपक के दर्शन कराओ यानी दीपक की ओर चावल या तिल

छिड़को। उसके बाद मीठे तेल में बने पूओं का भोग लगाओ और तेल की बाती से आरती उतार दो। उसके बाद भैरव जी की मूर्ति से प्रवासी व्यक्ति के, खोये हुए, भागे हुए, रूठे हुए व्यक्ति की वापसी के लिए प्रार्थना करो। तांबे के बरतन में मूर्ति पर चढ़ाया हुआ तेल पड़ा रहेगा उसमें से कुछ को आटे में मिलाकर एक रोटी बनाओ और उसे किसी काले कुत्ते को या काले भैंसे को, सांड को या (यह सब नहीं मिलें तो) भैंस को ही खिला दो। यह भी न मिले तो किसी चाण्डाल को या जोशी को खिला दो। यह देखना होगा कि उपरोक्त पशु या व्यक्ति आपके सामने ही उसको खा लें। रोटी गुड़ मिले चने की या बेसन की हो उसमें चढ़ाये हुए तेल को आटे में भी मिलाया जा सकता है और रोटी के ऊपर चिपड़कर भी लगाया जा सकता है। फूलों में आक (अकौआ) या धतूरे के फूल अच्छे रहते हैं।

इस प्रकार मैंने पूरा तन्त्र उस महिला को समझा दिया और कहा कि अधिक-से-अधिक ४० दिन तक इसको करना। भैरव जी की कृपा हुई तो इससे पहले ही मनोकामना पूरी हो जाएगी। इच्छा पूरी होने पर पूजा प्रसाद की मनौती मन में मान लेना। मैं तो यह सब बताकर चला आया। उस महिला ने पूर्ण श्रद्धा विश्वास से इस तन्त्र को किया और आरम्भ करने के ८-१० दिन बाद ही उसका ८-१० साल से गया हुआ पुत्र सकुशल वापिस आ गया। वह महिला बहुत ही उपकृत हुई। जब तक मेरी पत्नी वहां रही उसकी बहुत खातिर करती रही। मैंने भी उस महिला के लड़के से बात की थी। वह किसी बात पर नाराज होकर बम्बई चला गया था।

उसके बाद मैंने यह तन्त्र और भी कई अवसरों पर आजमाया है और लगभग सदैव ही सफलता मिली है।

रवीन्द्रनाथ गौड़, एम० ए०

विवाह तन्त्र

हमारे समाज में हिन्दू परिवारों में कन्याओं के योग्य वर ढूंढना एक समस्या है। इसमें दहेज की बाधा तो होती ही है, वर पक्ष वाले कन्या में सभी अलौकिक गुणों की अपेक्षा रखते हैं। उनका लड़का चाहे मामूली नौकर हो, थोड़ा बहुत ही शिक्षित हो साधारण रूप गुण वाला हो, परन्तु कन्या का सर्वगुण सम्पन्न अपूर्व सुन्दरी होना आवश्यक है। कन्या के माता-पिता व अभिभावकों को पूरा दहेज देने के साथ-साथ वर-पक्ष के सभी नाज-नखरे उठाने पड़ते हैं। मेरे पास विवाह योग्य कन्याओं के ऐसे अभिभावक आते रहते हैं और अपनी परेशानियां बताते रहते हैं। उनको मैं यह शास्त्रोक्त गुरु प्रदत्त विवाह तन्त्र बताता रहता हूं और अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि यह तन्त्र ८०-९० प्रतिशत लोगों को तुरन्त सफलता दे देता है। इसकी सहायता से बहुत-सी कन्याओं को मनचाहा वर प्राप्त हुआ है तथा उनके अभिभावकों की मानसिक परेशानी दूर हुई है।

तन्त्र-मन्त्र प्रयोग में श्रद्धा व विश्वास बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। मन में किसी प्रकार का सन्देह व शंका नहीं रखनी चाहिये। कुछ लोग तन्त्रों को जादू टोना टोटका समझकर अकारण ही उनसे भय करते हैं। इसलिए सबसे पहले यह विश्वास दिलाना जरूरी है कि यह शुद्ध वैष्णव तन्त्र है इससे किसी प्रकार की हानि किसी को भी नहीं होती। पूर्ण विश्वास व श्रद्धा के साथ किया जाए तो सफलता निश्चित मिलती है। दूसरी खास बात यह है कि इसको गुप्त रखना चाहिए। बीच में किसी की टोका-टाकी भी नहीं होनी चाहिये। नीचे लिखी वस्तुओं को इकट्ठी कर लो। ऐसा करते समय किसी को ऐसा अवसर न दो कि वह आपसे पूछे कि यह क्यों कर रहे हो क्या है कहां जा रहे हो।

(१) सात साबुत सुपारी के छोटे या बड़े दाने, (२) सात साबुत छोटी बड़ी हल्दी की गांठें, (३) सात गुड़ की छोटी-छोटी डलियां (४) सात जनेऊ के जोड़े जिन्हें हल्दी से या केसर से पीला रंग लिया जाए, (५) सात पीले रंग के फूल यह उसी दिन लाना चाहिये, (६) सत्तर ग्राम चने की दाल,(७)सत्तर सैंटीमीटर पीला कपड़ा(कपड़ा सफेद रंग का मिले तो उसको पीला रंग लो) (८) सात सिक्के पीले रंग के हों तो उत्तम है। पीले रंग के सिक्के आजकल २० पैसे के मिलते हैं या कुछ १० पैसे के भी मिल जाते हैं। यह न मिले तो पीतल के गोल टुकड़े कटवा लो या फिर कोई भी सात सिक्के ले लो उनमें हल्दी लगा लो। (९) भोज पत्र पर अष्टगन्ध से अनार की कलम से १५ का यन्त्र लिखकर उस पर माता का बीज मन्त्र कन्या का नाम तथा मनचाहे वर प्राप्ति की प्रार्थना लिखकर रख लो। यन्त्र तथा इसके लिखने की विधि नीचे दी जा रही है।

ॐ क्लीं कुमारी···(कन्या का नाम)

६	१	८
७	५	३
२	९	४

मन वांछित वरं देहि वरं देहि
ह्रीं ॐ गौरा पार्वती नमः।

कन्या का नाम जाति सहित लिखें जैसे उमा शर्मा, बीना मेहता आदि।

अष्ट गन्ध में आठ सुगन्धित वस्तुएं होती हैं तथा यह पंसारियों के यहां मिल जाती है। अनार की पतली टहनी तोड़कर कलम बना ली जाती है।

यन्त्र को लिखने की रीति—पहले आड़ी रेखाएं खींचे फिर खड़ी रेखाएं खींचकर ९ खाने बना लें। उनमें पहले १ का अंक लिखें और फिर २ का इस क्रम में ९ अंक लिखें। यह नहीं कि ६, १, ८, या ७, ५, ३ लिख दिया। इस प्रकार लिखना अशुद्ध होता है। होली, दिवाली, ग्रहण काल में इस प्रकार कागज पर या स्लेट पर कुछ संख्या में यन्त्र लिखने से यह सिद्ध भी हो जाता है।

जब यह उपरोक्त चीजें इकट्ठी हो जाएं तो किसी भी बृहस्पतिवार को प्रातः कन्या स्नान करके माता पार्वती का ध्यान करे। मां का कोई भी चित्र शंकर पार्वती का या दुर्गा देवी का हो तो उसे सामने रख कर मन में प्रार्थना करे कि उसे मन चाहा वर प्राप्त हो। वह या उसके अभिभावक कुछ मनौती मानें कि मां की कृपा से मनोकामना पूरी होने पर धर्मार्थ इतनी रकम दान करेंगे। उपरोक्त सभी चीजों को पीले कपड़े में बांध कर घर के किसी सुरक्षित एकान्त कोने में उठाकर रख दें जहां किसी बाहरी व्यक्ति की दृष्टि न पड़े। ऐसा अवसर न आये कि कोई यह प्रश्न करे कि यह क्या है? इन सभी वस्तुओं को कन्या के हाथ से ही उठवा कर रखवाना चाहिये। ताले में बन्द स्थान पर न रखें। भगवती की कृपा से ४० दिन के अन्दर कार्य सिद्ध हो जाता है। मेरे यजमानों ग्राहकों में सैकड़ों ही ऐसे परिवार हैं जिनका इस तन्त्र के द्वारा कार्य सिद्ध हुआ है।

●●